

हिन्दी शिक्षण और शिक्षादान

प्रथम वर्ष



प्रकाशक

माध्यमिक शिक्षा परिषद : ओडिशा

विषय आधारित पाठ्यक्रम

षष्ठ पत्र - पी.सी. - 6 (1)

हिन्दी शिक्षण और शिक्षादान

प्रारंभिक शिक्षा में डिप्लोमा के लिए नियमित तथा दूर शिक्षा कार्यक्रम के छात्र-छात्राओं के लिए निर्धारित पाठ्य-पुस्तक
(प्रथम वर्ष)

Text Book prescribed for the students of Regular and Distance Education Programme for Diploma in Elementary Education.



प्रकाशक

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, ओडिशा, कटक

हिन्दी शिक्षण और शिक्षादान
पी.सी.- 6 (1)

कालीगंगा छात्रों
१९ - छि.पि - इप टार

प्रारंभिक शिक्षा में डिप्लोमा की परीक्षा के लिए माध्यमिक शिक्षा परिषद, ओडिशा, कटक द्वारा
प्रकाशित और मंजूरी प्राप्त

© माध्यमिक शिक्षा परिषद, ओडिशा

लेखक मंडल : इ प्रकाशनी द्वारा कालीगंगा

डॉ. रवीन्द्र नाथ मिश्र
डॉ. लक्ष्मीधर दाश
डॉ. अजित प्रसाद महापात्र

(इन परिषद)

पुनरीक्षक : डॉ. राधकांत मिश्र

डॉ. शंकरलाल पुरोहित

प्रथम संस्करण : 2013 / 20,000

टंकण :

केशरी एन्टरप्राइजर्स
बिडानासी, कटक

मुद्रण : केशरी एन्टरप्राइजर्स

मूल्य : ₹ 55/- (Fifty five only)

कालीगंगा

Reproduction of the book in whole or part in any form is prohibited except with prior permission of the publisher.

आमुख

प्रारंभिक शिक्षा में डिप्लोमा पाठ्यक्रम के अनुसार यह पुस्तक तैयार की गई है। अध्येताओं की आत्मशिक्षण-दक्षता की वृद्धि के लिए पाठ्यविषयों का संयोजन किया गया है। हमारे भविष्यत् के अध्यापक-अध्यापिकाएँ हिन्दी-विषयागत दक्षता और शैक्षिक कौशलों को हासिल करने में जैसे समर्थ हों, उस दिशा में प्रयास किया गया है।

पुस्तक के निर्माण में लेखक-मंडल और पुनरीक्षकों ने पर्याप्त परिश्रम किया है। इस अवसर पर मैं उनके प्रति आभार प्रकट करता हूँ।

मेरा विश्वास है, यह पुस्तक अध्येताओं की दक्षता की वृद्धि में सहायक होगी।

इस परीक्षामूलक संस्करण के संबंध में कोई सुझाव मिले, तो परवर्ती संस्करण में उन पर यथोचित ध्यान दिया जाएगा।

लिखा-क्रान्ति

सभापति

माध्यमिक शिक्षा परिषद
ओडिशा, कटक

प्रस्तावना

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) द्वारा प्रस्तुत नए पाठ्यचर्चा (Syllabus) के आधार पर ओडिशा माध्यमिक शिक्षा परिषद ने 'हिन्दी शिक्षण और शिक्षादान' पुस्तक का समय उपयोगी नवीकरण किया है। उसके अनुसार 2012-13 शैक्षिक सत्र से Diploma in Elementary Education Course, प्रथम वर्ष के लिए नए पाठ्यक्रम के अनुसार इस हिन्दी पुस्तक का प्रकाशन किया गया है।

पुस्तक को त्रुटि-रहित करने की दिशा में पूर्ण प्रयास किया गया है। फिर भी इसमें यदि कोई मुद्रणजनित, भाषागत या तथ्यगत त्रुटि परिलक्षित होती है, तो प्राधिकारी का ध्यान आकर्षित करने से परवर्ती संस्करण में उनका संशोधन किया जाएगा।

आशा है, यह पुस्तक अध्येताओं, अध्यापक-अध्यापिकाओं के शिक्षादान के कार्य में सहायक होगी।

लेखक-मंडल

विषय-सूची

प्रतीकार्य

इकाई विषय

पृष्ठ सं.

१. कविता-पाठ, गद्य-पाठ और कहानी-पाठ	1-53
१ अमृत वाणी	3
२ कौन	10
३ इसे जगाओ	14
४ सत्साहस	18
५ स्वर्ण-त्रिकोण	25
६ एक राजा के दो सवाल	31
७ एकता में बल है	38
२. हिन्दी व्याकरण	54-114
वर्णमाला	57
संयुक्त व्यंजन	64
ध्वनियाँ	66
उच्चारण	66
वर्तनी	67
पद-विचार	71
संज्ञा	71
वचन	75
लिंग	78
कारक	84
सर्वनाम	91
विशेषण	93
क्रिया	97

3. अनुवाद

हिन्दू-इण्डी

115-130

4. भाषा-शिक्षण और भाषाई कौशल

130-157

तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण का अर्थ और महत्व

132

प्रारंभिक स्तर पर हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य

134

भाषाई कौशल

भाषा-शिक्षक भौति भाषा-वाचन भाषा-ठिकानी

135

श्रवण कौशल

ग्रिह ग्राम

136

भाषण कौशल

मिलिंग भौति

139

वाचन कौशल

मिलिंग भौति

142

लेखन कौशल

बोलिंग भौति

146

5. भाषा-शिक्षण की विधियाँ

158-172

व्याकरण-अनुवाद विधि

159

संरचना विधि

एकाकाल इन्ड्री

164

अभिक्रमित स्वाध्याय विधि

मजस्सीह

166

समन्वित विधि

समाज भौति

168

6. पाठ-योजना तथा भाषा-मूल्यांकन और परीक्षण

173-202

गद्य पाठ-योजना

175

पद्य पाठ-योजना

182

व्याकरण पाठ-योजना

प्राचीन-ज्ञान

188

भाषा मूल्यांकन और परीक्षण

प्राचीन

194

भाषा परीक्षण के प्रकार

प्राचीन

195



UNIT - 1

इकाई - 1

कविता-पाठ, गद्य-पाठ और कहानी-पाठ

1.0 कविता-पाठ, गद्य-पाठ और कहानी-पाठ

1.1.0 मूलपाठ

अमृतवाणी

1.1.1 प्रारंभ

1.1.2 उद्देश्य

1.1.3 व्याख्या

1.1.4 स्वमूल्यांकन के प्रश्न

1.2.0 मूलपाठ

कौन

1.2.1 प्रारंभ

1.2.2 उद्देश्य

1.2.3 व्याख्या

1.2.4 स्वमूल्यांकन के प्रश्न

1.3.0 मूलपाठ

इसे जगाओ

1.3.1 प्रारंभ

1.3.2 उद्देश्य

1.3.3 व्याख्या

1.3.4 स्वमूल्यांकन के प्रश्न

1.4.0 मूलपाठ

सत्साहस

1.4.1 प्रारंभ

1.4.2	उद्देश्य	प्रारंभ	0.3
1.4.3	व्याख्या	प्रारंभ	0.3
1.4.4	स्वमूल्यांकन के प्रश्न	प्रारंभ	0.3
1.5.0	मूलपाठ	प्रारंभ	0.3
	स्वर्ण-त्रिकोण	प्रारंभ	0.3
1.5.1	प्रारंभ	प्रारंभ	0.3
1.5.2	उद्देश्य	प्रारंभ	0.3
1.5.3	व्याख्या	प्रारंभ	0.3
1.5.4	स्वमूल्यांकन के प्रश्न	प्रारंभ	0.3
1.6.0	मूलपाठ	प्रारंभ	0.3
	एक राजा के दो सवाल	प्रारंभ	0.3
1.6.1	प्रारंभ	प्रारंभ	0.3
1.6.2	उद्देश्य	प्रारंभ	0.3
1.6.3	व्याख्या	प्रारंभ	0.3
1.6.4	स्वमूल्यांकन के प्रश्न	प्रारंभ	0.3
1.7.0	मूलपाठ	प्रारंभ	0.3
	एकता में बल हैं	प्रारंभ	0.3
1.7.1	प्रारंभ	प्रारंभ	0.3
1.7.2	उद्देश्य	प्रारंभ	0.3
1.7.3	व्याख्या	प्रारंभ	0.3
1.7.4	स्वमूल्यांकन के प्रश्न	प्रारंभ	0.3
1.8.	इस इकाई से आपने जो सीखा	प्रारंभ	0.3
1.9	स्वमूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर	प्रारंभ	0.3
1.10	इकाई की समाप्ति के बाद के प्रश्न	प्रारंभ	0.3

कविता-पाठ

1.1.0 मूलपाठ

अमृत वाणी

कबीर : हि दिल की बाति नामानंग संज्ञान जाग्रति भावना
कस्तूरी कुंडल बसै मृग ढूँढ़े बन माहिं ।
ऐसैं घटि घटि राम हैं, दुनिया देखै नाहिं ॥
माटी कहै कुम्हार सों, तूँ क्या रुँदै मोहि ।
इक दिन ऐसा होइगा, मैं रौंदूँगी तोहि ॥

तुलसी :

तुलसी संत सुअंब तरु फूलें फलें पर हेत ।
इतते वे पाहन हनत उतते वे फल देत ॥
कोयल काको देत है कागा कासों लेत ।
तुलसी मीठे वचन ते जग अपनो कर लेत ॥

रहीम :

कौन बड़ाई जलधि मिलि, गंग नाम भो धीम ।

केहि की प्रभुता नहीं घटी, पर घर गये रहीम ॥

कदली, सीप, भुजंग-मुख, स्वर्ति एक गुन तीन ।

जैसी संगति बैठिए, तैसोई फल दीन ॥

1.1.1 प्रारंभिक लोक

कबीर :

कबीर एक महान संत थे। उन्होंने अपनी वाणियों के माध्यम से साहित्यिक क्रांति की थी। सभी प्रकार के भेदभाव को निर्झक बतला कर उन्होंने मानव समाज की एकता की आवाज लगाई थी। उनकी वाणी अनोखी थी। हिन्दी निर्गुण संत कवियों में वे श्रेष्ठ और जनप्रिय थे। उनकी वाणियाँ दोहे, रमैनी और पदावलियों के रूप में हमें आज भी मार्गदर्शन कर रही हैं।

तुलसी :

तुलसी की काव्य प्रतिभा असाधारण थी। हिन्दी साहित्य की सगुण भक्ति धारा के वे श्रेष्ठतम् कवि थे। ये राम के बहुत बड़े भक्त थे। रामायण की कथा इनके काव्यों की मूल प्रेरणा है। इन्होंने 'रामचरित मानस' की रचना की और साथ ही रामायण से संबंधित, गीतावली, दोहावली, विनयपत्रिका आदि कुल 12 से अधिक ग्रन्थों की रचना की। रामायण के माध्यम से इन्होंने समन्वय की विराट चेष्टा की थी, जो अनोखी है। मानव कल्याण के लिए उन्होंने अपने जीवन को समर्पित कर दिया था।

रहीम :

हिन्दी के लोकप्रिय कवियों में रहीम अग्रगण्य हैं। रहीम के दोहे विद्वानों और सामान्य जनों में उदाहरण के तौर पर प्रायः प्रस्तुत किये जाते हैं। इनका पूरा नाम अब्दुर्रहीम खानखाना था। रहीम अकबर के दरबार के नवरत्नों में से थे। ये अकबर के सेनापति मंत्री भी थे। इनकी रहीम सतसई, रहीम रत्नावली, शृंगार सतसई, रासपंचाध्यायी आदि कई रचनाएँ हैं। इनके दोहों में उपदेश, नीति, और अनुभवात्मक मार्मिक अभिव्यक्तियाँ हैं, जो सभी मनुष्यों के जीवन में आवश्यक हैं।

1.1.2. उद्देश्य :

इन शिक्षाप्रद दोहों को पढ़कर आप अपने ज्ञान को बढ़ा सकेंगे। प्राचीन कवियों की काव्यधारा से हमें ज्ञानामृत की धारा प्राप्त होती है। जीवन को सरल, सुगम और सफल बनाने के लिए इन कवियों की वाणियों में जो उपदेश है, वह अनोखा है। इसलिए इनकी वाणियों को पढ़कर अपने जीवन को सार्थक बनाना चाहिए। ये उपदेश हमें इन वाणियों से प्राप्त होते हैं।

1.1.3. व्याख्या

मूलपाठ : कस्तूरी जाने नाहिं ।

शब्दार्थ और टिप्पणी :

कस्तूरी – एक सुगंधित चीज है जो मृग की नाभि में स्थित है।

दूँड़ना – खोजना। घटि – हृदय। राम – प्रभु, ईश्वर।

व्याख्या :

इस दोहे में कबीर ने कहा है कि मृग की नाभि में कीमती कस्तूरी रहती है, लेकिन मृग उसे जान नहीं पाता, इसलिए वह उसकी सुगंधि से आकर्षित होकर वन-वन में दूँड़ता रहता है। अपनी अज्ञानता के कारण उसे वह पहचान नहीं पाता। उसी प्रकार मनुष्य के अंदर ईश्वर निवास करते हैं, लेकिन अज्ञानी मनुष्य उसे जान नहीं पाता। पूजा, होम आदि करके मूढ़ मनुष्य सर्वत्र उन्हें पाने के लिए दूँड़ता फिरता है। कबीर ने कहा है कि ईश्वर प्रत्येक के हृदय में निवास करते हैं, अतः उन्हें पहचानिए और अपने जीवन को सार्थक बनाइए।

मूलपाठ : माटी कहै रौदूँगी तोहि ॥

शब्दार्थ और टिप्पणी :

कुम्हार – जो मिट्टी से घड़ा बनाता है। रूँदै – मिट्टी को रौंदना या मथना।

रौंदूँगी – मिट्टी कहती है कि मैं भी एक दिन तुम्हें मिट्टी में मिला दूँगी। तोहि – तुम्हें।

व्याख्या :

कबीर इस दोहे में कहना चाहते हैं कि मिट्टी को रौंदकर कुम्हार हाँड़ी बनाता है । उसे गर्व कि मैं निर्माता हूँ । मैं जो चाहे सो कर सकता हूँ । लेकिन उसे पता नहीं कि एक दिन ऐसा आएगा जहाँ वह भी मिट्टी में मिल जाएगा । पाँच महाभूतों से यह शरीर बना है : जैसे – मिट्टी, आकाश, जल, वायु और अग्नि । इन पाँच महातत्वों से बना मनुष्य का शरीर मरने के बाद फिर इनमें मिल जाता है इसलिए कबीर कहते हैं कि एक दिन सब को मरना है । मरने के बाद मनुष्य का शरीर मिट्टी में मिल जाता है । इसलिए मनुष्य का मार्ग दर्शन करते हुए कबीर ने कहा कि इस संसार में सब को मिलजुला कर रहना चाहिए क्योंकि यह शरीर मिट्टी के घड़े की तरह नाशवान है । किसी का गर्व रहता नहीं चूरचूर हो जाता है ।

मूलपाठ : तुलसी संत सुअंब तरु फल देत ।

शब्दार्थ और टिप्पणी :

अंब तरु – आम का पेड़, पाहन – पत्थर, उतते – उतने, देत – देता है ।

व्याख्या :

इस दोहे के माध्यम से तुलसी ने संत के स्वभाव के बारे में कहा है । संत का स्वभाव बहुत उदार होता है । जिस प्रकार आम का पेड़ आम फलने पर पत्थर की मार को सहन करता है लेकिन वह अपना फल सबको देता रहता है । उसी प्रकार संत का स्वभाव है । संसार के बाधा-विघ्नों से निर्लिप्त रहकर संत समाज-कल्याण के लिए काम करता रहता है । लोक- कल्याण की भावना से उसका मन ओतप्रोत रहता है । इसलिए तुलसी ने आम के पेड़ के साथ संत के स्वभाव की तुलना करके मनुष्य को उचित शिक्षा दी है । हमें दूसरों की भलाई के लिए कष्ट झेलकर भी त्याग करना चाहिए ।

मूलपाठ : कोयल कर लेत ॥

शब्दार्थ और टिप्पणी :

काको – किसको, कागा – कौआ, कासो – किससे, मीठे वचन – अमृत वाणी

व्याख्या :

कोयल किसको क्या देती है ? कौआ किससे क्या ले लेता है ? पर कोयल सबकी प्यारी है । अर्थात् इस दोहे के माध्यम से तुलसी ने सदैव मधुर वचन बोलकर दूसरों को खुश करने की बात कही है । वे कोयल और कौए का उदाहरण देकर मधुरवाणी और कठोर-वाणी के बीच भेद को दिखा की ध्वनि कर्कश होती है । कोयल की तरह मनुष्य को सदैव मधुर वाणी बोलनी चाहिए । कर्कश वाणी से लोग नाराज हो जाते हैं । तुलसी ने मनुष्य को सदैव मधुर वाणी बोलने की सलाह दी है ।

मूलपाठ : कौन बड़ाई

पर घर गये रहीम ।

शब्दार्थ और टिप्पणी :

गंग - गंगा नदी, भो - हुआ, धीम - नष्ट, प्रभुता - बड़प्पन, जलधि - सागर,
घटी - कम हुई

व्याख्या :

इसमें गंगा और सागर के उदाहरण दिए गए हैं । रहीम का कहना है कि बड़ों से मिलने से छोटों की महिमा घट जाती है क्योंकि उसके साथ अपने आपको मिला लेना पड़ता है । बड़ों से मिलने पर अपना कुछ नहीं रहता । अपना सब कुछ उनका बन जाता है । जिस प्रकार गंगा की असीम महिमा है, पर समुद्र में समा जाने के बाद उसकी महिमा घट जाती है । उसका नाम भी नहीं रह जाता । कौन ऐसा है जो दूसरे के घर जाने से उसकी प्रभुता या बड़प्पन घट न गया हो ? इस प्रकार रहीम ने इसमें लोकनीति की शिक्षा दी है ।

मूलपाठ : कदली सीपफल दीन ।

शब्दार्थ और टिप्पणी :

कदली - केला, सीप - एक प्रकार का जीव जो सागर में रहता है, भुजंग - साँप ।
स्वाति - एक नक्षत्र है जिसके आगमन से पानी बरसता है; तैसोई - उसी प्रकार

व्याख्या :

रहीम स्वाति नक्षत्र की बूँद का उदाहरण देकर कह रहे हैं कि स्वाति नक्षत्र की वर्षा की बूँद तो एक ही है, पर उसके गुण तीन तरह के देखे जाते हैं। केले पर पड़ने से बूँद कपूर बन जाती है, सीप पर पड़ने से वह मोती हो जाती है और साँप के मुँह में पड़ने से वह बूँद विष बन जाती है। रहीम का कहना है कि जैसी संगति में बैठोगे, वैसा ही परिणाम होगा।

1.1. 4. स्वमूल्यांकन के प्रश्न :

- (i) कस्तूरी क्या है ? और कहाँ रहती है ?
- (ii) कबीर ने कस्तूरी की सुगंधि की तुलना किससे की है ?
- (iii) कुम्हार कौन है ? वह क्या करता है ?
- (iv) कुम्हार से मिट्टी क्या कहती है ?
- (v) तुलसी ने आम के पेड़ के साथ किसकी तुलना की है ?
- (vi) तुलसी के अनुसार संत का स्वभाव कैसा होना चाहिए ?
- (vii) सागर में मिलकर गंगा का क्या होता है ?
- (viii) अपनी प्रभुता कब मिट जाती है ?
- (ix) रहीम ने केले, सीप और भुजंग के उदाहरण क्यों दिए हैं ?
- (x) स्वाति की बूँद सीप पर गिरने से वह क्या बन जाती है ?
- (xi) स्वाति की बूँद साँप के मुँह में गिरने से वह क्या बन जाती है ?
- (xii) स्वाति की बूँद केले पर गिरने से वह क्या बन जाती है ?

भाषा कार्य के प्रश्न :

उत्तर देखें

1. निम्न शब्दों का मूल रूप लिखिए :

अंब - आम

पाहन - पथर

कागा - कौवा

जग - जगत

2. निम्नलिखित पंक्तियों की पूर्ति कीजिए :

(i) तुलसी संत सुअंब तरु..... |

(ii) कस्तूरी कुँडल बसै

(iii) इतते वे पाहन हनत

(iv) तुलसी मीठे वचन ते

(v) कौन बड़ाई भो धीम |

(vi) कदली, सीप एक गुन तीन |

(vii) तैसोई फल दीन |

1.2.0 मूल पाठ :

कौन



बालस्वरूप राह

अगर न होता चाँद, रात में
हम को दिशा दिखाता कौन ?
अगर न होता सूरज, दिन को
सोने-सा चमकाता कौन ?
अगर न होतीं निर्मल नदियाँ,
जग की प्यास बुझाता कौन ?
अगर न होते पर्वत, मीठे
झरने भला, बहाता कौन ?
अगर न होते बादल, नभ में
इन्द्रधनुष रच पाता कौन ?
अगर न होते हम तो बोलो,
ये सब प्रश्न उठाता कौन ?



1.2.1. प्रारंभ

प्रकृति से मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक जुड़ा रहता है। इस कविता में प्रकृति की प्रशंसा की गई है। चन्द्र, सूर्य, नदियाँ, पर्वत, झरने, आकाश आदि की प्रशंसा करते हुए कवि कहते हैं कि अगर ये नहीं होते तो हमें जीवन की प्रेरणा कहाँ से मिलती? चन्द्रमा न होता तो रात में हमें दिशा कौन दिखाता? सूर्य न होता तो दिन में प्रकाश कौन देता? अगर नदियाँ नहीं होतीं तो सब की प्यास कौन बुझाता? अगर पर्वत न होते तो झरना कौन बहाता? बादल न होते तो आकाश में इन्द्रधनुष कौन रचता? अगर हम न होते तो ये सवाल कौन उठाता? इस छोटी-सी कविता में कवि ने प्रकृति के कार्य-कारण सम्बन्ध को दिखाने का सफल प्रयास किया है।

1.2.2. उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप कविता का भाव समझ सकेंगे। इसकी महत्वपूर्ण पंक्तियों की व्याख्या कर सकेंगे। इसके प्रतिपाद्य पर विचार कर सकेंगे।

एक के बिना दूसरे की पूर्ति असंभव है जब कि एक दूसरे के लिए कारण है।

प्रकृति और मनुष्य के पारस्परिक संबंध पर आप चर्चा कर सकेंगे।

1.2.3. व्याख्या

मूलपाठ : अगर न होता चमकाता कौन?

शब्दार्थ और टिप्पणी :

चाँद - चन्द्रमा, दिशा - मार्ग, सूरज - सूर्य, सोने-सा - सोने के समान, चमकाता - उज्ज्वल बनाता।

व्याख्या :

चन्द्र अगर किरण नहीं देता तो रात को हमें दिशा कौन दिखाता? सूर्य अगर न होता तो दिन में सोने के समान रोशनी कौन फैलाता?

बहाता कौन ?

मूलपाठ : अगर न होती

शब्दार्थ और टिप्पणी :

की ही निकल गई तब यह चिक बांध्य हि डोस लाकड़ा निह तरीक जावा दूर

निर्मल = स्वच्छ, प्यास = तृष्णा ।

व्याख्या: कि कृष्ण ने अपनी दृष्टि से वह सर्वात् उत्तम विद्या

फिर उन्होंने अपनी दोनों बेटियों को जगत के जीवों की प्यास कौन बुझाने में समर्थ होता, पर्व

के लिए इसकी समर्पण को अनुमति दी गई है।

अगर न होते तो झरने कौन बहाता ? नदिया आर झरना के द्वारा जनाप पर .. .
है ।

मलपाठ : अगर न होते उठाता कौन ?

प्रायः तीव्र विषयक स्थानों के लिए इस प्रकार का विशेष उपचार करना चाहिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी : शब्दार्थ का विवरण यह है कि इसका अर्थ विभिन्न लोगों में अलग-अलग हो सकता है।

नभ = आकाश ।

इन्द्रधनुष = वर्षा के दिनों में सात रंगों से सज्जित अद्वि चंद्राकृति का एक वलय आकाशमें

कछु समय के लिए दिखाई देता है। वह देखने में बहुत ही आकर्षक और सुन्दर

है। अगर हम न होते तो यह प्रश्न कौन उठाता? इनसे पता चलता है कि प्रकृति

के साथ मनुष्य का गहरा संपर्क है। प्रकृति से ही मनुष्य सदैव अनुप्रेरित होता है।

और अपना जीवन निर्वाह करता है।

124. स्वमल्यांकन के प्रश्न :

(क) (i) अगर चाँद न होता तो क्या होता ?

(ii) अगर सूरज न होता तो क्या होता ?

(iii) नदियाँ न होतीं तो क्या होता ?

(iv) पर्वत न होते तो क्या होता ?

(v) आकाश में बादल न होते तो क्या होता ?

(vi) अगर हम न होते तो क्या होता ?

(vii) 'कौन' कविता के कवि कौन हैं ?

भाषा-कार्य के प्रश्न :

1. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :

चाँद, सूरज, नदी, पर्वत, नभ, बादल

2. निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग करके एक-एक वाक्य बनाइए :

पर्वत, नदियाँ, चाँद, सूरज, निर्मल, इन्द्रधनुष ।

निम्नलिखित शब्दों के लिंग बताइए :

प्यास, चाँद, नदियाँ, पर्वत, झरना, नभ ।

1.3.0 मूल पाठ :

इसे जगाओ

भवनी प्रसाद मि.

भाई सूरज

जरा आदमी को जगाओ !

भाई पवन

जरा इस आदमी को हिलाओ !

यह आदमी जो सोया पड़ा है,

जो सच से बेखबर है

सपनों में खोया पड़ा है ।

भाई पंछी

इसके कानों पर चिल्लाओ !

भाई सूरज

जरा इस आदमी को जगाओ ।

वक्त पर जगाओ,

नहीं तो जब बेवक्त जगेगा यह

तो जो आगे निकल गए हैं

उन्हें पाने -

घबरा के भागेगा यह !

घबरा के भागना अलग है,

क्षिप्र गति अलग है,,

क्षिप्र तो वह है

जो सही क्षण में सजग है ।

सूरज, इसे जगाओ,

पवन, इसे हिलाओ,

पंछी इसके कानों पर चिल्लाओ ।

1.3.1. प्रारंभ

इस कविता के कवि हैं भवानी प्रसाद मिश्र । कवि ने यहाँ एक पक्षी के जरिए मनुष्य को जगाने की बात कह कर अपने-अपने काम करने की प्रेरणा देते हैं । प्रत्येक मनुष्य को स्वयं का खयाल रखना चाहिए । वे सूर्य को, पवन को, पक्षी को सोए हुए व्यक्ति को जगाने की बात करते हैं । वे सूर्य से कहते हैं कि तुम इसे जगाओ, पवन से कहते हैं कि तुम इसे हिलाओ और पक्षी से कहते हैं कि तुम इसके कानों पर चिल्लाओ । तब वह उठकर कर्म-चंचल बनेगा । कवि कहते हैं कि जो वक्त पर जगता है, वह कर्म समय पर करता है और जो वक्त पर नहीं जगता है, वह जागकर आगे चले जाने वालों के पीछे घबरा कर भागता है । वे कहते हैं कि क्षिप्र वही है जो समय पर जग जाता है । समय के प्रति सचेतन रहने के लिए कवि सबको सलाह देते हैं । सही समय पर मनुष्य सचेत होकर कर्म करता है तो जीवन में सफलता प्राप्त करता है । इसके विपरीत जो वक्त पर सोया रहता है वह जीवन में पिछड़ जाता है ।

1.3.2. उद्देश्य :

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप इस कविता का सार अपने शब्दों में लिख सकेंगे । इसके महत्वपूर्ण अंशों की व्याख्या कर सकेंगे । भाषा-शैली की दृष्टि से इसकी आलोचना कर सकेंगे । इसकी विषय-वस्तु पर आप विचार प्रकट कर सकेंगे । स्वयं कर्म के प्रति सजग हो सकेंगे । आलस्य छोड़कर जीवन को गतिशील बना सकेंगे ।

1.3.3. व्याख्या

मूलपाठ : भाई सूरज खोया पड़ा है ।

शब्दार्थ और टिप्पणी

आदमी – मनुष्य, जरा – थोड़ा, बेखबर – स्व-कर्म के प्रति अनजान ।

व्याख्या :

कवि सूर्य से कह रहे हैं कि भाई सूर्य ! तुम जागो और इस सोए हुए आदमी को भी जगा दो । पवन से कह रहे हैं कि भाई पवन ! तुम इस सुषुप्ति की अवस्था में पड़े हुए आदमी को थोड़ा हिला दो जो स्वप्नों में खोया हुआ है और अपने कर्म के प्रति लापरवाह है ।

मूलपाठ : भाई पंछी भागेगा यह ।

व्याख्या : पंछी = पक्षी, सूरज = सूर्य, बेवक्त = असमय, घबराना = विचलित होना

कवि कहते हैं कि भाई पक्षी ! तुम इसके कानों पर चिल्लाओ ताकि उसकी नींद खुल जाय। यह आदमी नींद में सोया पड़ा है और दुनिया के बारे में सचेतन नहीं है। वह बेवक्त जाने के बाद देखेगा कि लोग पहले से जाग कर कर्म के लिए आगे निकल गए हैं। वह उन्हें पाने के लिए घबराकर भागेगा और कर्मचंचल होगा।

मूलपाठ : घबरा के पर चिल्लाओ ।

शब्दार्थ और टिप्पणी :

क्षिप्र = शीघ्र, क्षण = पल, सूरज = सूर्य, चिल्लाना = शोर मचाना, सजग = सचेत

व्याख्या :

कवि कहते हैं कि घबराकर भागना और क्षिप्र गति से चलना अलग है। क्षिप्र गतिवाला तत्परता से सही वक्त पर कर्म में जुड़ जाता है। हे सूर्य ! तुम इसे जगाओ। हे पक्षी ! तुम इसके कानों में शोर मचाओ।

1.3.4. स्व-मूल्यांकन के प्रश्न :

(i) 'इसे जगाओ' कविता के कवि का नाम क्या है ?

(ii) कवि किसे जगाने की बात कह रहे हैं ?

(iii) कवि किससे किसको हिलाने की बात कह रहे हैं ?

(iv) कवि किसके कानों पर चिल्लाने की बात कह रहे हैं ?

(v) कवि कब जगाने की बात कह रहे हैं ?

(vi) किन्हें प्राने के लिए बेवक्त जागा आदमी भागता है ?

(vii) कवि ने मनुष्य को जगाने का अनुरोध किन-किन से किया है ?

(viii) आदमी सच से बेखबर कब हो जाता है ?

(ix) कैसे लोग आगे निकल जाते हैं ?

(x) असमय जागने पर मनुष्य घबराकर क्यों भागता है ?

भाषाकार्य के प्रश्न :

1. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :

पक्षी, सूर्य, पवन, वक्त, सच

2. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

सोना, खोना, सच, दिन

3. निम्नलिखित शब्दों को उचित क्रियाओं से जोड़िए :

'क'

'ख'

सूरज

हिलाता है।

पवन

जगाता है।

पक्षी

सोया है।

आदमी

चिल्ताता है।

■ ■ ■

1.4.0 मूल पाठ :

सत्साहस

गणेश शंकर विद्यार्थी

संसार के सभी महापुरुष साहसी थे । संसार के काम, बड़े अथवा छोटे, साहस के बिना नहीं होते । बिना किसी प्रकार का साहस दिखलाए किसी जाति या किसी देश का इतिहास ही नहीं कर सकता । अपने साहस के कारण ही अर्जुन, भीम, भीष्म, अभिमन्यु आदि आज हमारे हृदयों में बसे हैं ।

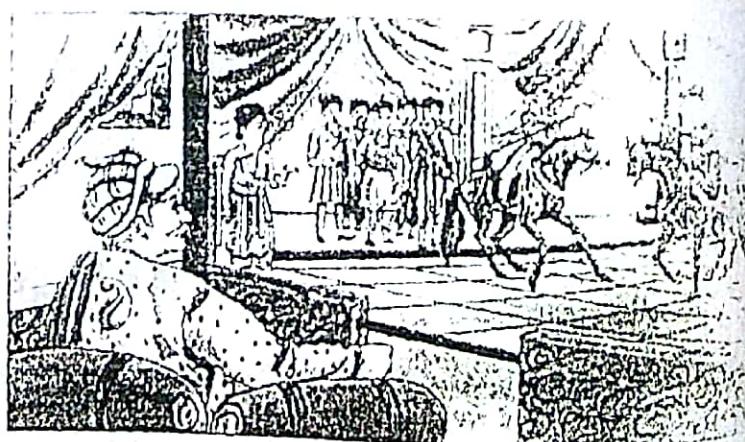
साहसी के लिए केवल साहस प्रकट करना ही अभीष्ट नहीं । क्रोधांध होकर स्वार्थवश साहस दिखाने को किसी प्रकार प्रशंसनीय कार्य नहीं कहा जा सकता । इस प्रकार का साहस चोर और डाकू भी कभी-कभी कर गुजरते हैं । राजा-महाराजा भी अपनी कुत्सित अभिलाषाओं को पूर्ण करने के लिए कभी-कभी इससे भी बढ़कर साहस के काम कर डालते हैं । ऐसा साहस निम्न श्रेणी का साहस है । इस साहस को किसी भी दृष्टिकोण से सत्साहस नहीं कहा जा सकता ।

२५ मध्यम श्रेणी का साहस प्रायः शूरवीरों में पाया जाता है । वह उनके उच्च विचार और निर्भीकता को भली-भाँति प्रकट करता है । इस प्रकार के साहसी मनुष्यों में बेपरवाही और स्वार्थहीनता की कमी नहीं होती परंतु उनमें ज्ञान की कमी अवश्य पाई जाती है ।

एक बार बादशाह अकबर के पास दो राजपूत नौकरी के लिए आये । अकबर ने उनसे पूछा, “तुम क्या काम कर सकते हो ?”

वे बोले, “जहाँपनाह, करके दिखलाएँ या केवल कहकर ?”

बादशाह ने करके दिखलाने की आज्ञा दी । राजपूतों ने घोड़ों पर सवार होकर अपने-अपने बरछे सँभाले और अकबर के सामने ही एक-दूसरे पर वार करने लगे । बादशाह के देखते-देखते दोनों घोड़ों से नीचे आ गिरे और मरकर



ठंडे हो गये। इस प्रकार का साहस निस्संदेह प्रशंसनीय है परंतु ज्ञान की आभा की कमी के कारण निस्तेज-सा प्रतीत होता है।

सर्वोच्च श्रेणी के साहस के लिए हाथ-पैर की बलिष्ठता आवश्यक नहीं और न ही धन-मान आदि का होना आवश्यक है। जिन गुणों का होना आवश्यक है, वे हैं- हृदय की पवित्रता, उदारता और चरित्र की दृढ़ता। ऐसे गुणों की प्रेरणा से उत्पन्न हुआ साहस, तब तक पूर्णतया प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता, जब तक उसमें एक और गुण सम्मिलित न हो। इस गुण का नाम है, “कर्त्तव्यपरायणता”।

कर्त्तव्य का विचार प्रत्येक साहसी मनुष्य में होना चाहिए। कर्त्तव्यपरायण व्यक्ति के हृदय में यह बात अवश्य उत्पन्न होनी चाहिए कि जो कुछ मैंने किया, वह केवल अपना कर्त्तव्य किया।



मारवाड़ के मौरुदा गाँव का जमींदार बुद्धन सिंह किसी झगड़े के कारण स्वदेश छोड़कर जयपुर चला गया और वहीं बस गया। थोड़े ही दिनों बाद मराठों ने मारवाड़ पर आक्रमण किया। यद्यपि बुद्धन मारवाड़ को बिलकुल ही छोड़ चुका था तथापि शत्रुओं

के आक्रमण का समाचार पाकर और मातृभूमि को संकट में पड़ा हुआ जानकर उसका रक्त उबल पड़ा। वह अपने एक सौ पचास साथियों को लेकर, बिना किसी से पूछे जयपुर से तुरंत चल पड़ा। वह समय पर अपने देश और राजा की सेवा करने के लिए पहुँच गया।

इस घटना को हुए बहुत दिन हो गये परंतु आज भी मारवाड़ के लोग कर्त्तव्यपरायण बुद्धन सिंह की वीरता व सत्साहस को सम्मानपूर्वक याद करते हैं। राजपूत महिलाएँ आज भी बुद्धन और उसके वीर साथियों की वीरता के गीत गाती हैं।

सत्साहसी व्यक्ति में एक गुप्त शक्ति रहती है जिसके बल से वह दूसरे मनुष्य को दुख से बचाने के लिए प्राण तक देने को प्रस्तुत हो जाता है। धर्म, देश, जाति और परिवार वालों के ही लिए नहीं, अपितु संकट में पड़े हुए अंपरिचित व्यक्ति के सहायतार्थ भी उसी शक्ति की प्रेरणा से वह संकटों का सामना करने को तैयार हो जाता है। अपने प्राणों की वह लेशमात्र भी परवाह नहीं करता। हर प्रकार के क्लेशों को प्रसन्नतापूर्वक सहता है और स्वार्थ के विचारों को वह फटकने तक नहीं देता है।

सत्साहस के लिए अवसर की राह देखने की आवश्यकता नहीं है। सत्साहस दिखाने का अवसर प्रत्येक मनुष्य के जीवन में, पल-पल में, आया करता है। देश, काल और कर्तव्य पर विचार करना चाहिए और स्वार्थरहित होकर साहस न छोड़ते हुए कर्तव्यपरायण बनने का प्रयत्न करना चाहिए। यही सत्साहस है।

1.4.1 प्रारंभ :

सत्साहस : यह एक विचार प्रधान लेख है। गणेश शंकर विद्यार्थी द्वारा रचित इस लेख में सत्साहस की परिभाषा देते हुए उसके विभिन्न स्वरूपों की चर्चा की गई है। साथ ही सत्साहस और दुःसाहस में अन्तर बताया गया है। उन्होंने कहा है कि सत्साहसी व्यक्ति में एक गुप्त शक्ति रहती है दुःसाहस में अन्तर बताया गया है। उन्होंने कहा है कि सत्साहसी व्यक्ति में एक गुप्त शक्ति रहती है जिसके बल से वह दूसरे मनुष्य को दुःख से बचाने के लिए प्राण तक देने को प्रस्तुत हो जाता है। उन्होंने कहा है कि प्रत्येक मनुष्य को स्वार्थ रहित हो कर कर्तव्य-परायण बनने का प्रयत्न करना चाहिए।

आधुनिक हिन्दी गद्यकारों में गणेश शंकर विद्यार्थी सुपरिचित हैं। उनका गद्य उपदेशमूलक, भावोदीपक तथा सुललित है।

1.4.2 उद्देश्य :

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप

- (i) इस लेख के विषय का सार अपने शब्दों में लिख सकेंगे। इसके महत्वपूर्ण अंशों की व्याख्या कर सकेंगे। लेख पर लेखकीय व्यक्तित्व के प्रभाव का वर्णन कर सकेंगे। भाषा और शैली की दृष्टि से इसकी आलोचना कर सकेंगे। इसके प्रतिपाद्य पर भी विचार प्रकट कर सकेंगे।
- (ii) दुःसाहस और सत्साहस में अंतर समझ सकेंगे।
- (iii) स्वार्थ रहित होकर साहस न छोड़ते हुए कर्तव्य-परायण बनने का प्रयत्न कर सकेंगे।

1.4.3 व्याख्या :

मूलपाठ : संसार पाई जाती है ।

शब्दार्थ और टिप्पणी :

अभीष्ट = लक्ष्य, उद्देश्य, क्रोधांध = अत्यधिक क्रोधित होकर, स्वार्थवश = स्वार्थी बनकर, स्वार्थ के कारण, कुत्सित = घृणित, अभिलाषा = इच्छा, निर्भीकता = साहसी बनकर
व्याख्या :

संसार के सभी महापुरुष साहसी थे । साहस के बिना कोई काम, चाहे छोटा हो या बड़ा, नहीं हो पाता । साहस के बिना किसी देश या जाति का इतिहास नहीं बन सकता । इस देश में अनेक शूरवीर पैदा हुए हैं जो अपने साहस के बल पर भारत की अखंडता बनाए रख सके हैं । अर्जुन, भीम, भीष्म, अभिमन्यु, कर्ण आदि हमारे लिए आदर्श बने हुए हैं ।

क्रोधांध होकर हमें कोई भी काम नहीं करना चाहिए । राजा महाराजा लोग भी इस प्रकार क्रोधांध होकर कुत्सित अभिलाषाओं को पूर्ण करने के लिए साहस प्रदर्शन करते थे । लेकिन यह भिन्न श्रेणी का साहस है । इसे सत्साहस नहीं कहा जा सकता । इसे निम्न श्रेणी का साहस कह सकते हैं ।

मध्यम श्रेणी का साहस शूरवीरों में पाया जाता है । साहसी मनुष्यों में बेपरवाही और स्वार्थहीनता की कमी नहीं होती परंतु उनमें ज्ञान की कमी अवश्य पाई जाती है ।

मूलपाठ : एक बार बादशाह कर्तव्य-परायणता ।

शब्दार्थ तथा टिप्पणी :

निस्संदेह = संदेश रहित, निस्तेज = निष्प्रभ, बलिष्ठता = दृढ़ता,

व्याख्या :

सत्साहस को समझाने के लिए लेखक एक छोटी-सी कहानी की अवतारणा कर रहे हैं । अकबर के पास दो राजपूत नौकरी के लिए आए । अकबर के- क्या काम कर सकते हो, पूछने पर दोनों ने काम करके दिखलाने को कहा और आपस में लड़ाई के द्वारा अपनी-अपनी वीरता और सत्साहस का परिचय दिया । दोनों ने लड़ाई में जीवन दे डाला । इस प्रकार का साहस निश्चित रूप से प्रशंसनीय है परंतु इसमें बुद्धि का अभाव दिखता है ।

लेखक ने कहा है कि सत्साहस के लिए हाथ-पैर की बलिष्ठता की आवश्यकता नहीं है और न धन आदि की, उसके लिए आवश्यक है हृदय की पवित्रता, उदारता और चरित्र का दृढ़ता । उन्होंने कहा है कि केवल गुणों की प्रेरणा से उत्पन्न हुआ साहस तब तक प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता जब तक उसमें अपनी कर्तव्य-परायणता पैदा न हो ।

मूलाठ : कर्तव्य का विचार..... सत्साहस है ।

शब्दार्थ तथा टिप्पणी :

आक्रमण = हमला, आभा = चमक, रोशनी, कर्तव्यपरायण = काम में तत्पर रहने वाला, कुत्सित अभिलाषा = बुरी इच्छा, क्लेष = कष्ट, निर्भीकता = निडरता, बलिष्ठता = मजबूती, शूरवीर = बहादुर, प्रयत्न = चेष्टा

व्याख्या :

कर्तव्य का विचार सभी मनुष्यों में होना चाहिए । कर्तव्य, अकर्तव्य का ज्ञान मनुष्य के लिए अत्यंत आवश्यक है ।

लेखक ने इसे समझाने के लिए जमींदार बुद्धन सिंह का उदाहरण दिया है । वह किसी झगड़े के कारण गाँव छोड़कर जयपुर चला जाता है । कुछ दिनों बाद मारवाड़ पर हमला होता है । मारवाड़ पर शत्रुओं के आक्रमण का समाचार पाकर वह अपने एक सौ-पचास साथियों को लेकर बिना किसी से पूछे जयपुर से चल पड़ता है और अपने देश तथा राजा की सेवा में हाजिर हो जाता है । अपने साहस और अपनी शूरवीरता का उसने जो परिचय दिया, वह आज भी स्मरणीय बना हुआ है । संकट में पड़े अपरिचित व्यक्ति की सहायता के लिए भी मनुष्य अपनी शक्ति की प्रेरणा से उसकी सहायता करने के लिए तैयार हो जाता है । मनुष्य को देश, काल और कर्तव्य पर विचार करना चाहिए । स्वार्थ रहित होकर प्रत्येक व्यक्ति को कर्तव्यपरायण बनने का प्रयत्न करना चाहिए और इसी का नाम सत्साहस है ।

1.4.4 स्वमूल्यांकन के प्रश्न :

संक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न :

- लेखक के अनुसार किसी देश का इतिहास कब बनता है ?
- सर्वोच्च श्रेणी के साहस में किन-किन गुणों का होना आवश्यक है ?
- लगभग 20 शब्दों में सत्साहस के बारे में अपने विचार लिखिए ।
- निम्न श्रेणी के साहस को सत्साहस क्यों नहीं कहा जा सकता ?

अतिसंक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न : (एक वाक्य में उत्तर दीजिए)

- संसार के सभी महापुरुष कैसे थे ?
- हमारे हृदयों में कैसे महापुरुष बसे हैं ?
- साहस कब निस्तेज प्रतीत होता है ?
- सत्साहस किस प्रकार का लेख है ?
- इस पाठ के लिखक कौन हैं ?
- सत्साहसी व्यक्ति का एक प्रमुख गुण लिखिए ।
- बुद्धन सिंह कौन से गाँव में रहता था ?

भाषा कार्य के प्रश्न :

क्रियाविशेषण : जो अविकारी शब्द क्रिया की विशेषता बतलाते हैं, उन्हें क्रिया विशेषण कहते हैं । क्रिया विशेषण के चार भेद होते हैं : कालवाचक (कब), स्थानवाचक (कहाँ), परिमाणवाचक (कितना), रीतिवाचक (कैसे) ।

1. नीचे लिखे वाक्यों में क्रिया विशेषण को रेखांकित कीजिए :

- दोनों राजपूत जोर-जोर से तलवार चलाने लगे ।
- जल्दी ही दोनों जमीन पर गिर पड़े ।

- (iii) बुद्धन सिंह वहाँ जाकर बस गया ।
- (iv) सत्साहस हमारी निर्भीकता को भली-भाँति प्रकट करता है ।
2. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बताइए :
- नौका, सेठ, महोदय, छात्र, शिष्य, रूपवान, गायक, लेखक
3. निम्नलिखित शब्दों के विलोमरूप लिखिए :
- प्रशंसा, स्वार्थ, निम्न, प्रकट, साहसी, उदार, पवित्र ।
4. वाक्यों में सकर्मक, अकर्मक क्रियाओं को पहचान कर कोष्ठक में लिखिए :
- (i) गीता नहा रही है । ()
- (ii) रमेश पत्र लिखेगा । ()
- (iii) सीता रोटी पकाती है । ()
- (iv) महेश कुर्सी पर बैठा है । ()
- (v) राम दिल्ली जाने वाला है । ()

■ ■ ■

1.5.0 मूल पाठ : स्वर्ण-त्रिकोण

राधाकांत मिश्र

अपनी आँखों पर कौन विश्वास नहीं करता ? क्योंकि देखी हुई चीजों की छवि मन पर अंकित हो जाती है । देखने से जानकारी बढ़ती है, ज्ञान बढ़ता है, बुद्धि का विकास होता है । इसलिए पर्यटन से अथवा घूमने-फिरने से ज्ञान और मनोरंजन दोनों होते हैं । हमारे प्रान्त में अनगिनत दर्शनीय स्थान हैं । लेकिन सबसे बढ़िया है - 'स्वर्ण-त्रिकोण' । भुवनेश्वर, पुरी और कोणार्क - इस त्रिकोण के तीन विन्दु हैं । इनको जोड़नेवाली सड़कें इसकी भुजाएँ हैं । यह इलाका ओडिशा का प्राणकेन्द्र है ।

भुवनेश्वर ओडिशा की राजधानी है । इसके दो भाग हैं - नया और पुराना । राजधानी होने के बाद यहाँ की आबादी बहुत बढ़ गई है । नए हिस्से में सचिवालय, राजभवन, विधानसभा, ताराघर (प्लैनिटोरियम), संग्रहालय आदि अनेक सुन्दर भवन हैं । पुरानी बस्ती मन्दिरमालिनी है । कहते हैं यहाँ सौ से भी अधिक मन्दिर थे । लिंगराज मन्दिर सब से बड़ा है । इसकी ऊँचाई 180 फुट है । यह सबसे सुन्दर भी है । इसके अलावा स्थापत्य-कला की दृष्टि से राजारानी, मुक्तेश्वर मन्दिर प्रसिद्ध हैं । अनन्त-वासुदेव, पर्शुरामेश्वर, ब्रह्मेश्वर आदि अनेक पुराने मन्दिर देखने लायक हैं । भुवनेश्वर का इतिहास भी पुराना है । इसके पास ही धउली नामक स्थान पर कलिंग का युद्ध हुआ था । कलिंग (प्राचीन ओडिशा) के निवासी बड़े वीर और साहसी थे । उनकी खेतीबारी अच्छी थी । शिल्प, उद्योग और व्यापार की दृष्टि से वे उन्नत थे । धनधान्य से समृद्ध कलिंग पर अशोक ने आक्रमण कर दिया । घमासान लड़ाई हुई । लाखों वीर मारे गए और अनेक घायल हुए । आखिर में अशोक की जीत हुई । मगर इस मारकाट से उसे बड़ा अफसोस और पछतावा हुआ । धउली में अपने शिलालेख में उसने लिखवाया है कि युद्ध से सभी का नुकसान ही होता है । युद्ध के बाद क्रूर अशोक दयालु बन गया । वह बौद्धधर्म का अनुयायी बना । उसने देश-विदेश में बौद्धधर्म का काफी प्रचार और प्रसार करवाया । ओडिशा में तो बौद्धधर्म का बहुत प्रचार हुआ । रत्नगिरि, ललितगिरि, उदयगिरि, लांगुली पहाड़ इत्यादि स्थानों में बौद्धों के विहार थे । खुदाई से उसके अवशेष मिले हैं । धउली में कुछ साल हुए एक भव्य

बौद्ध-स्तूप बनाया गया है। भुवनेश्वर के पश्चिम हिस्से में खण्डगिरि-उंदयगिरि की पहाड़ियों में जैनधर्म के अवशेष हैं। यहाँ खारवेल का शिलालेख है। अनेक गुफाएँ हैं, जैन मन्दिर हैं। भुवनेश्वर में कई सुन्दर गिरजे, गुरुद्वारे और मस्जिदें भी हैं। यहाँ कई सुन्दर उद्यान हैं, जहाँ लोग बड़ी संख्या में आते हैं।

ओडिशा के पूर्व में बंगोपसागर है। उसीके किनारे पुरी शहर बसा है। इसकी बेलाभूमि साफ-सुथरी है। ऐसी सुनहरी रेत तो और कहीं नहीं दिखाई पड़ती। इसलिए पुरी में बहुत-से पर्यटक आते हैं। सागर को जितना देखो, मन नहीं भरता। ज्वार के समय समुद्र का उग्र रूप होता है तो भाटे के समय शांत। चाँदनी रात को पर्वतमाला की भाँति लम्बी तरंगमालाएँ लोगों का मन मोह लेती हैं। पुरी एक और कारण से ज्यादा मशहूर है। यहाँ जगन्नाथजी का विशाल मन्दिर है। यह लगभग 215 फुट ऊँचा है। जगन्नाथ जैन, बौद्ध, शैव, शाक्त, वैष्णव और आदिवासी सभी के देवता हैं। यहाँ ऊँचनीच, धनी-गरीब का भेदभाव नहीं है। इसलिए रथायात्रा के समय पुरी में लाखों लोग इकट्ठे होते हैं।

पुरी से लगभग 35 किलोमीटर दूर कोणार्क है। कोणार्क का भग्न सूर्यमन्दिर तो दुनिया का एक अजूबा है। सूर्य के रथ के आकार में यह विशाल मन्दिर बना था। इसमें 24 बड़े-बड़े पहिये लगे थे। इसे 7 घोड़े खींचते हुए दिखाये गये थे। मुख्य-मन्दिर की ऊँचाई लगभग 227 फुट थी। मगर खेद है कि उसका केवल खण्डहर ही अब बचा है। सामने खड़ा है जगमोहन। यह लगभग 120 फुट ऊँचा है। उसके सामने खड़ा है नाट्यमन्दिर। आज सब कुछ टूट-फूट गया है। लेकिन जितना बचा है, उससे इसकी भव्यता तथा विशालता का अनुमान लगाया जा सकता है। टनों वजनवाले पत्थरों पर पत्थर लदे हैं, परन्तु कोई खाली जगह नहीं, जहाँ कारीगरी नहीं है। पत्थरों पर पेड़-पौधे, फूल, पत्ते, नर-नारी, पशु, सर्प, देवता, गंधर्व, मानव सबकी खुदाई हुई है। सभी जीवन्त लगते हैं। टूटी-फूटी मूर्तियों के चेहरों पर खुशी या उदासी आज भी साफ झलक रही है। यह मन्दिर स्थापत्य और मूर्तिकला का बेजोड़ नमूना है। ओडिशी नृत्य की विभिन्न भंगिमाओं में खुदी मूर्तियाँ तो दर्शक को मुग्ध कर देती हैं। इसे देखने देश-विदेश के पर्यटकों की भीड़ लगी रहती है।

इस स्वर्ण-त्रिकोण के आसपास कई दूसरे पर्यटन-स्थल भी हैं। भुवनेश्वर से 100 किलोमीटर दूर चिलिका है। शांत परिवेश में नौका-विहार, किस्म-किस्म के पंछियों के झुण्ड, डॉलफिन मछलियाँ,

स्वादिष्ट झींगा मझली चिलिका की अपनी संपत्ति है। यहाँ देश की सुरक्षा में तत्पर नौ-सेना का प्रशिक्षण केन्द्र भी है। भुवनेश्वर से लगभग 120 किलोमीटर की दूरी पर पारादीप बन्दरगाह है, जो नौ-व्यापार का मुख्य केन्द्र है। यह ओडिशा के अतीत के समृद्ध नौवाणिज्य का नया दृश्य प्रस्तुत करता है। वेसे तो ओडिशा के कोने-कोने में बहुत से दर्शनीय स्थान हैं। गंधमार्दन पर्वत के दोनों तरफ हरिशंकर और नृसिंहनाथ की सुन्दर प्रकृति और झरनों के निराले दृश्य हैं। हीराकुद वाँध के जल से मे सिंचाई की जाती है और वहाँ भी विजली का उत्पादान होता है। राणीपुर-झरियाल में पुराने स्थापत्य और मूर्तिकला के नमूने हैं। कोरापुट का प्राकृतिक दृश्य, गोपालपुर का बंदरगाह, पहाड़ों पर बहुत से मंदिर, चांदीपुर और बड़माल-सैंतला का आधुनिक सुरक्षा केन्द्र, मयूरभंज के खिचिंग की प्राचीन मूर्तिकला अनगिनत पर्यटकों को आकृष्ट करती हैं।

इन सब जगहों में एक बार घूम लें तो ओडिशा के सामाजिक-जीवन, कला-संस्कृति, इतिहास, धार्मिक-उदारता, वाणिज्य-व्यवसाय, आर्थिक-प्रगति आदि सभी वातों की जानकारी मिल जाती है।

1.5.1. प्रारंभ :

यह एक वर्णनात्मक लेख है। ओडिशा का गौरवशाली अतीत भुवनेश्वर के आसपास के इलाके (स्वर्ण-त्रिकोण) में केन्द्रित था। इन जगहों में जाने से हमें ओडिशा की उत्कृष्टकला, उसकी संस्कृति, उसके समृद्ध व्यवसाय, उन्नत सामाजिक जीवन और उसकी धार्मिक उदारता का परिचय मिलता है। मानवजीवन के सुनहरे पलों की झाँकी ऐसे स्थानों में मिलती है। इसलिए इसे स्वर्ण-त्रिकोण कहना सार्थक और सही लगता है।

1.5.2. उद्देश्य :

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप

- (i) इस निवंध के विषय का सार अपने शब्दों में लिख सकेंगे। इस लेख से ओडिशा के गौरव और प्रभाव को समझ सकेंगे। भाषा और जौली की दृष्टि से इस विषय की आलोचना कर सकेंगे। इसके विषय पर विचार प्रकट कर सकेंगे।

(ii) ओडिशा के तीन मुख्य स्थान या स्वर्ण-त्रिभुज के बारे में विशेष जानकारी प्राप्त कर सकेंगे ।

(iii) भारतीय संस्कृति और कलाकृतियों को ठीक-ठीक समझ सकेंगे ।

1.5.3. व्याख्या

मूलपाठ : अपनी आँखों पर जहाँ लोग बड़ी संख्या में आते हैं ।

शब्दार्थ तथा टिप्पणी :

जानकारी = परिचय, अंकित = याद, अनगिनत = असंख्य, इलाका = अंचल,

खेतीबारी = कृषिकार्य, घमासान = जोरदार, घायल = क्षतविक्षत

व्याख्या :

पर्यटन से ज्ञान बढ़ता है, साथ ही मनोरंजन भी होता है । ओडिशा में अनेकानेक दर्शनीय स्थान हैं, लेकिन स्वर्ण-त्रिकोण का विशेष महत्व है । भुवनेश्वर, पुरी और कोणार्क इन तीन स्थानों से यह त्रिकोण बनता है । ये पर्यटन के महत्वपूर्ण स्थान हैं । इसलिए पाठ का नाम रखा गया है - 'स्वर्ण-त्रिकोण' । भुवनेश्वर स्वर्ण त्रिकोण में पहला है जो कि ओडिशा की राजधानी है । इसके नए और पुराने दो हिस्से हैं । नए में सचिवालय, राजभवन, विधान सभा, प्लैनिटोरियम, राज्य संग्रहालय आदि हैं । पुराना हिस्सा मन्दिरमालिनी है ।

स्थापत्यकला की दृष्टि से भुवनेश्वर के मन्दिर प्रसिद्ध हैं । लिंगराज मन्दिर सबसे बड़ा है । भुवनेश्वर के पास धउलि है जहाँ पर कलिंग युद्ध हुआ था । समृद्ध कलिंग पर सम्राट अशोक ने धावा बोल दिया । इस आक्रमण में लाखों सैनिक मारे गए थे । अशोक विजयी बने । लेकिन इस लड़ाई से उनको बड़ा अफसोस और पछतावा हुआ । इससे क्रूर अशोक दयालु बन गए । बौद्ध धर्म के अनुयायी बने । उस धर्म का प्रसार कराया । बौद्ध धर्म के प्रचार से ओडिशा में ललित गिरि, रत्नगिरि, उदयगिरि आदि प्रसिद्ध विहार बन गए । राजधानी होने के कारण भुवनेश्वर में आजकल बड़ी संख्या में लोग रहने लगे हैं ।

मूलपाठ : ओडिशा के पूर्व में भीड़ लगी रहती है ।

शब्दार्थ तथा टिप्पणी :

सागर = समुद्र, अजूबा = आश्चर्य, बेजोड़ = जिसकी तुलना नहीं है

व्याख्या :

पुरी में जगन्नाथ जी हैं ; इसलिए अनेक पर्यटक यहाँ आते हैं । पुरी में सागर की बेलाभूमि अनोखी है । यहाँ तरंगों की सुन्दरता पर्यटकों को आकर्षित करती है । यहाँ सभी धर्म के लोग आते हैं । रथयात्रा में लाखों लोग शामिल होते हैं । पुरी के पास कोणार्क है । यहाँ सूर्यदेव की उपासना होती थी । सूर्य-रथ की आकृति का यह मंदिर बड़ा आकर्षक है । इसमें २४ बड़े-बड़े पहिए लगे हुए हैं । मंदिर का अवशेष अब जितना बचा है ; वह दर्शकों को मुग्ध और चकित करता है । इसकी कारीगरी अनोखी है । इसमें खोदित मूर्तियाँ जीवन्त लगती हैं । यहाँ विदेशी पर्यटकों की भीड़ लगी रहती है ।

मूलपाठ : इस स्वर्ण त्रिकोण के पर्यटकों को आकृष्ट करती है ।

शब्दार्थ और टिप्पणी :

दर्शनीय = देखने योग्य, झुंड = दल, किस्म = प्रकार, इक्ट्रा = एकत्रित, लायक = योग्य, नुकसान = हानि, अफसोस = दुख, जंगमोहन = मुख्य मंदिर के ठीक सामने का छोटा मंदिर ।

व्याख्या :

स्वर्ण त्रिकोण के आस-पास और भी अनेक पर्यटन स्थल हैं । नौ-सेना प्रशिक्षण केन्द्र, चिलिका, हीराकुद बाँध, झारियाल की मूर्तिकला, गोपालपुर का बंदरगाह, सैंतला, चांदीपुर आदि आधुनिक सुरक्षा केन्द्र पर्यटकों को आकर्षित करते हैं । इससे हमें पता चलता है कि सारा ओडिशा पर्यटन का उपयोगी प्रान्त है ।

1.5.4. स्व-मूल्यांकन के प्रश्न :

1. ओडिशा की राजधानी का नाम क्या है ?
2. स्वर्ण त्रिकोण किसे कहते हैं ?

3. लिंगराज मंदिर किस शहर में है ?
4. लिंगराज मंदिर की ऊँचाई कितनी है ?
5. कलिंग पर किसने विजय प्राप्त की थी ?
6. अशोक ने कौन सा धर्म ग्रहण किया था ?
7. खारवेल का शिलालेख कहाँ देखने को मिलता है ?
8. जगन्नाथ जी के मंदिर की ऊँचाई कितनी है ?
9. जगन्नाथ जी किन-किन धर्म धाराओं के देवता हैं ?
10. भुवनेश्वर से कितनी दूरी पर पारादीप बंदरगाह है ?
11. ओडिशा की किस दिशा में बंगोपसागर है ?

भाषाकार्य के प्रश्न :

1. संज्ञा शब्द छाँटिए :
कई, मस्जिद, भुवनेश्वर, सुन्दर, धउलि, गया है
2. विशेषण छाँटिए :
 - (i) भुवनेश्वर में सुन्दर गिर्जे हैं ।
 - (ii) कलिंग निवासी बड़े साहसी थे ।
 - (iii) पुरी में जगन्नाथ जी का विशाल मंदिर है ।

एक राजा के दो सवाल

सुदर्शन

(१)

कहते हैं किसी शहर में एक करोड़पति सेठ रहता था । वहाँ के राजा की आँख उसके धन-दौलत पर थी । सोचता था, वह दिन कब जाएगा जब इसका सारा रूपया मेरे भंडार में होगा । आखिर चालाक मंत्री की सलाह से उसने एक दिन सेठ को अपने दरबार में बुला भेजा ।

सेठ ने बुलावे का हुक्म सुना तो मारे डरके उसकी जान ही निकल गई । दिल में कहने लगा, भगवान भला करे, रूपए पर आँच आती दिखाई देता है । डरते-डरते दरबार में गया और राजा के सामने हाथ बाँधकर खड़ा हो गया । राजा ने कहा- सेठ साहब, मेरे दो सवाल हैं । एक यह कि वह कौन-सी चीज है जो हमेशा घटती रहती है । दूसरा यह कि वह कौन-सी चीज है जो सदा बढ़ती रहती है । अगर आपने इनका ठीक-ठीक जवाब न दिया तो याद रखिए, आपका सारा रूपया-पैसा जब्त कर लिया जाएगा और आपको राज्य से निकाल दिया जाएगा । हम नहीं चाहते, कि हमारे राज्य में बेवकूफों के पास इतना रूपया पैसा हो । इससे हमारी बदनामी होती है और प्रजा पर बुरा असर पड़ता है । पैसा उनके होना चाहिए, जो सूझ-बूझवाले हों ।

सेठ पहले ही घबरा रहा था । इन सवालों से और भी सकपकाया और एक महीने का समय लेकर घर चला आया । अब वह सदा उदास रहता था । न खाता था, न पीता था, न रात को सोता था । सोचता था, क्या करूँ ? लोभी राजा सब कुछ छीनकर घर से निकाल देगा ।

एक दिन सेठानी ने पूछा - आप आजकल उदास क्यों रहते हैं ?

सेठ ने ठंडी आह भरी और सारी कहानी कह सुनाई ।

सेठानी ने कहा - इन सवालों का जवाब देना क्या कठिन है । महीना बीत जाए तो राजा दरबार में मुझे ले चलना । ऐसे जवाब दूँगी कि उसकी आँख खुल जाएगी और फिर कभी किस आदमी को तंग करने का नाम भी न लेगा ।

(२)

जब महीना खत्म हुआ तो सेठ ने दरबार में जाकर कहा- सरकार, आपके सवालों का जवाब मेरी स्त्री देगी ।

राजा ने सेठानी को दरबार में बुला भेजा । सेठानी जब दरबार में आई तो अपने- साथ दूध का एक कटोरा और थोड़ी-सी घास भी लेती आई और राजा से बोली- महाराज, जो कुछ पूछना हो मुझसे पूछिए । आपके सवालों का मैं जवाब दूँगी ।

राजा ने पूछा- वह कौन- सी चीज है जो हमेशा घटती रहती है ?

सेठानी ने जवाब दिया- उम्र सदा घटती रहती है ।

राजा ने पूछा- अब यह बताओ कि वह कौन-सी चीज है जो सदा बढ़ती रहती है ।

सेठानी ने जवाब दिया- लोभ सदा बढ़ता रहता है ।

राजा बोला- तुम्हारे दोनों जवाब ठीक हैं । अब तुम्हारा धन तुम्हारे ही पास रहेगा । मगर यह तो बताओ कि यह जो तुम दूध का कटोरा और घास अपने साथ लाई हो, इसका क्या मतलब है ?

सेठानी ने जवाब दिया- महाराज आपकी उम्र बड़ी हो गई लेकिन आपकी आदत अभी तक बच्चों की- सी है, जो आप ऐसे- ऐसे सवाल पूछते रहते हैं । इसलिए मैं महाराज के लिए दूध लाई हूँ । लेकिन आपके बजीर का स्वभाव जानवरों का- सा है, जो आपको सीधे रास्ते पर नहीं लाता, उले रास्ते पर डालता है । इस वास्ते उसके लिए मैं यह घास लाई हूँ । आप दूध पीजिए, अपका बजीर घास खाए ।

राजा और वजीर दोनों चुप हो गए और इसके बाद फिर कभी उन्होंने किसी का रूपया हथियाने की कोशिश नहीं की।

1.6.1. प्रारंभ

यह एक शिक्षामूलक कहानी है जिसके लेखक सुदर्शन हैं। शहर में एक करोड़पति सेठ रहता था। वहाँ के राजा की आँख उसके धन-दौलत पर थी। उसने सेठ की सारी संपत्ति हड्डप लेने को सोचा। अपने चालाक मंत्री से परामर्श लेने के बाद सेठ को उसने बुला भेजा। सेठ बुलाने का हुक्म सुनकर बहुत डर गया, कहीं उसकी सारी संपत्ति पर विपत्ति न आ जाय। डरता हुआ राजा के सामने गया और हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। राजा ने सेठ से दो सवाल पूछे। उसका पहला प्रश्न था— “कौन-सी चीज है जो हमेशा घटती रहती है और दूसरा प्रश्न— कौन-सी चीज है जो सदा बढ़ती रहती है ? राजा ने कहा कि तुमने इन प्रश्नों के सही उत्तर न दिए तो तुम्हारी सारी संपत्ति जब्त कर ली जाएगी और तुम्हें राज्य से निकाल दिया जाएगा। उन्होंने कहा— हम नहीं चाहते कि बेवकूफों के पास इतना रूपया पैसा हो। इससे प्रजा पर बुरा असर पड़ता है। धन उसके पास होना चाहिए, जिनके पास सूझ-बूझ हो। इन प्रश्नों से घटाकर एक महीने का समय लेकर राजा चला गया। इस घटना से वह उदास रहता था। एकदिन उनकी पत्नी ने उदासी का कारण पूछने पर उन्होंने सारी बातें बतायीं।

सेठानी ने कहा इन प्रश्नों के उत्तर देना तो कठिन नहीं है। मैं राजदरबार में चलूँगी और सारे सवालों का जवाब दूँगी।

एक महीने बीतने के बाद सेठ ने दरबार में पहुँचकर कहा कि सरकार, आपके सारे प्रश्नों का जवाब मेरी पत्नी देगी। राजा ने सेठानी को बुला भेजा तो सेठानी एक कटोरे में दूध और थोड़ी-सी घास लेकर पहुँची। उसने कहा— महाराज, जो कुछ पूछना है मुझसे पूछिए। आपके सारे सवालों का जवाब मैं दूँगी।

राजा के प्रथम प्रश्न के उत्तर में सेठानी ने कहा कि उम्र सदा घटती रहती है।

दूसरे प्रश्न के उत्तर में कहा कि लोभ सदा बढ़ता रहता है। राजा ने कहा कि तुम्हारे दोनों जवाब ठीक हैं। अब तुम्हारा धन तुम्हारे पास ही रहेगा। अब तुम बताओ कि दूध का कटोरा और घास अपने साथ क्यों लाई थीं?

उत्तर में सेठानी ने कहा – महाराज की उम्र तो बहुत हो गई- लेकिन आदत बच्चों की-सी ही जिससे आप ऐसे सवाल पूछते हैं। इसलिए मैं आप के लिए दूध लाई हूँ। लेकिन आपके वजीर का स्वभाव जानवारों का-सा है जो आपको सीधे रास्ते पर न लाकर गलत रास्ते पर लाता है। इसलिए मैं उसके लिए यह घास लाई हूँ। आप दूध पीजिए और आपका वजीर घास खाए। यह सुनकर राजा और वजीर दोनों चुप हो गए। आगे चलकर फिर उन्होंने किसीकी संपत्ति हड़पने की कोशिश नहीं की।

1.6.2. उद्देश्य :

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप

- (i) इस कहानी का सार अपने शब्दों में लिख सकेंगे। इसके महत्वपूर्ण- अशों की व्याख्या करके मार्मिक बातों को याद रख सकेंगे। भाषाशैली की दृष्टि से इसकी परीक्षा कर सकेंगे। इसके उद्देश्य पर भी विचार व्यक्त कर सकेंगे।
- (ii) सेठानी ने दूध और घास के उदाहरण रखकर राजा को उचित शिक्षा दी।
- (iii) कभी कोई राजा किसीका धन हड़पने की कोशिश नहीं करेगा।

1.6.3. व्याख्या :

मूलपाठ : कहते हैं कि नाम भी न लेगा।

शब्दार्थ और टिप्पणी :

बेवकूफ = बुद्धिहीन, सवाल = प्रश्न, सकपकाना = घबराना, ठंडी आह भरी = आश्वस्त हु

आदमी = मनुष्य, तंग = परेशान,

व्याख्या :

संसर के संक्षिप्त अनुवाद .१.३.१

एक करोड़पति सेठ से राजा परीक्षा लेता है। अपने मंत्री की सलाह से उसे दो प्रश्न पूछता है। एक-ऐसी कौन-सी चीज है जो सदा घटती रहती है और दूसरा - ऐसी कौन-सी चीज है जो सदा बढ़ती रहती है। सेठ चिंता में पड़ जाता है और एक महीने का समय लेकर घर चला जाता है। उदास चेहरा देखकर पत्नी पूछ बैठती है तो सारी बातें सेठ बताता है। सेठानी उत्तर खुद देने के लिए तैयार हो जाती है। वह कहती है कि ऐसा जवाब दूँगी कि राजा कभी किसी को तंग करने की कोशिश न करेगा।

मूलपाठ : जब महीना खत्म हुआ कोशिश नहीं की।

शब्दार्थ और टिप्पणी :

सवाल = प्रश्न, घटना = कम हाना, जवाब = उत्तर, वजीर = मंत्री, हथियाना = हड़पना, सलाह = परामर्श, हुक्म = आदेश, हमेशा = सदैव।

व्याख्या :

एक महीने के बाद सेठानी को उत्तर देने को तैयार जानकर राजा ने उसे बुला भेजा। सेठानी ने एक कटोरे में दूध और कुछ घास लेकर जा पहुँची। सेठानी ने पहले प्रश्न के जवाब में कहा कि उम्र सदा घटती रहती है। दूसरे प्रश्न के उत्तर में कहा कि लोभ सदा बढ़ता रहता है। राजा ने कहा कि दोनों उत्तर सही हैं। इसलिए तुम्हारा धन तुम्हारे पास ही रहेगा। लेकिन राजा ने पूछा कि कटोरे में दूध और घास लाने का क्या मतलब है? तब सेठानी ने कहा कि आपकी आदत बच्चों की तरह है; इसलिए आप के लिए दूध लाई लेकिन आपके मंत्री की आदत जानवरों की-सी है, इसलिए उनके लिए घास लाई। वह आपको सीधे रास्ते पर नहीं लाता। इसलिए आप दूध पीजिए और आपका वजीर घास खाएगा। इस प्रकार के उत्तर से राजा और वजीर दोनों शर्म के मारे चुप हो गए। तब से किसी की संपत्ति हड़पने की कोशिश नहीं की।

इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है कि अपने स्वार्थ के लिए किसी का धन हड़पने की बुरी आदत नहीं रखनी चाहिए।

1.6.4. स्वमूल्यांकन के प्रश्न

(i) करोड़पति सेठ कहाँ रहता था ?

(ii) बुलावे का हुक्म पाकर सेठजी के मन में क्या प्रतिक्रिया हुई ?

(iii) राजा ने सेठ से पहला प्रश्न क्या पूछा ?

(iv) राजा ने सेठ से दूसरा प्रश्न क्या पूछा ?

(v) प्रथम प्रश्न का उत्तर सेठानी ने क्या दिया ?

(vi) दूसरे प्रश्न के उत्तर में सेठानी ने क्या कहा ?

(vii) सेठानी आते वक्त साथ क्या लाई थी ?

(viii) सेठानी ने महाराज को क्या जवाब दिया ?

स्वमूल्यांकन के अति संक्षिप्त प्रश्न :

(i) 'एक राजा के दो सवाल' कुहानी के लेखक कौन है ?

(ii) करोड़पति कौन था ?

(iii) राजा ने सेठ से कितने प्रश्न पूछे ?

(iv) सेठ ने उत्तर देने के लिए कितना समय माँगा ?

(v) सेठानी को किसने दरबार में बुला भेजा ?

भाषा कार्य के प्रश्न :

1. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :

(i) तुम्हारी दोनों जवाब ठीक हैं।

(ii) राजा को सेठानी की दरवार में बुला भेजा ।

(iii) उम्र सदा घटता रहता है ।

(iv) सेठानी में जवाब दिया ।

(v) सारी कहानी कह सुनाया ।

2. निम्नलिखित शब्दों का लिंग बताइए :

उम्र, लोभ, चीज, हानि, रूपया, सवाल

3. निम्नलिखित के पर्याय शब्द लिखिए :

रात, दिन, राजा, दूध, पानी

4. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़कर उचित स्थान पर विरामचिह्न लगाइए :

(i) राजा ने कहा, सेठ साहब मेरे दो सवाल हैं ।

(ii) राजा ने पूछा, वह कौन सी चीज है जो हमेशा घटती रहती है ।

(iii) पैसा उनके पास होना चाहिए, जो सुझ-बुझ वाले हों

(iv) आप दूध पीजिए, आपका वजीर घास खाएगा

5. निम्नलिखित शब्दों के प्रयोग से एक एक वाक्य बनाइए :

दरबार, उदास, चालाक, जवाब, हुक्म, सूझ-बूझ, धन-दौलत



एकता में बल है

रामचन्द्र पाण्डे

एक मनुष्य के सात पुत्र थे । इन पुत्रों में मेल नहीं था । वे एक-दूसरे से लड़ा करते थे । कौन मनुष्य को इससे बड़ा दुख था । वह अपने पुत्रों से कहा करता था, “एकता में ही बल है । यदि तुम लोग मेल से रहोगे तो तुमको किसी शत्रु से भय नहीं है और बे-मेल रहने पर एक अकेला शत्रु तुम सबको जीत सकता है ।” लड़कों को बूढ़े की इस बात पर विश्वास नहीं होता था ।

एक दिन बूढ़ा अपने लड़कों के साथ खेत में काम कर रहा था । खेत की मेंड के निकट एक आम का वृक्ष था । वृक्ष की एक बड़ी डाल खेत के ऊपर लहरा रही थी । डाल की छाँह से खेत के फसल को हानि पहुँचती थी । बूढ़े ने डाल में एक रस्सा बाँध दिया और लड़कों से कहा कि बारी-बारी से रस्सा खींचकर डाल तोड़ डालो । लड़कों ने अलग-अलग प्रयत्न किया परन्तु वे डाली तोड़ न सके और थककर बैठ गए । बूढ़े ने कहा कि अब तुम सातों मिलकर एक साथ बल लगाओ । सात लड़के ने एक साथ रस्सा खींचा और डाली टूट गई । बूढ़े ने कहा, “बच्चो, क्या तुम लोगों ने पेड़ की इस डाल के टूटने से कुछ सीखा नहीं ?” सभी ने एक स्वर से चिल्लाकर कहा, “पिताजी, एकता में ही बल है, आपकी बात ठीक है ।”

बूढ़े ने पुनः एक लड़के को सूत का एक धागा देकर कहा कि इसे तोड़ दो । लड़के ने थोड़ी ही श्रम से धागे को तोड़ दिया । बूढ़े ने लड़कों के सामने कई धागों को मिलाकर बट दिया और उस लड़के से उसे तोड़ने को कहा । लड़के ने अपनी पूरी शक्ति लगा दी परन्तु बटा हुआ धागा न टूटा । बूढ़े ने सात लड़कों को एक साथ बल लगाने को कहा, परन्तु वे बटे हुए सूत को न तोड़ सके । बूढ़े ने पूछा, “क्या इस सूत के बाँटे हुए धागे से तुम लोगों ने कुछ सीखा ?” लड़कों ने कहा, “पिताजी, जब सूत एक था टूट जाता था, परन्तु कई सूतों के मिलने से उसमें अपूर्व शक्ति आ गई । सच है एकता में बल है । अब हम सातों आपस में मिलजुलकर रहेंगे और कोई भी शत्रु हमें हरा न सकेगा ।”

बच्चो ! सर्वदा स्मरण रखो – “एकता में ही बल है ।”

1.7.1. प्रारंभ

यह एक शिक्षणीय कहानी है। इसके लेखक रामचंद्र पाण्डेय हैं। एकता में कैसे बल है यह सीखने के लिए लेखक ने दो उदाहरण रखे हैं। एक मनुष्य के सात पुत्र थे और वे एक दूसरे से लड़ाई करते थे। इससे बूढ़े बाप को बड़ा दुख होता था।

एक दिन बूढ़ा अपने खेत में काम कर रहा था। खेत की मेंढ़ पर एक आम का पेड़ था। बड़ी शाखा खेत के ऊपर फैली हुई थी। इससे फसल नष्ट होती थी। बूढ़े ने उस शाखा में एक रस्सी बाँध दी और अपने लड़कों से कहा कि बारी-बारी से रस्सी खींचकर उसे तोड़ डालो। लड़कों ने अलग-अलग प्रयत्न किया और थककर बैठ गए। डाल नहीं दूटी। परंतु सात लड़कों ने एक साथ मिलकर खींचा तो डाली दूट गई। बूढ़े ने कहा – बच्चो! तुम लोगों ने इससे कुछ सीखा। बच्चों ने एक साथ मिलकर कहा ‘‘पिताजी, एकता में ही बल है। आपने जो कहा, वह सही निकला।’’

बूढ़े ने लड़कों से पुनः धागा देकर कहा इसे तोड़ दो। लड़के ने थोड़े ही श्रम से उस धागे को तोड़ दिया। बूढ़े ने लड़कों के सामने कई धागों को मिलाकर बट दिया और तोड़ने को कहा। परंतु वे बटे हुए सूत को तोड़ न सके। बूढ़े ने फिर से पूछा – क्या तुमने इस बटे हुए धागे से कुछ सीखा? बच्चों ने कहा कि जब वह सूत अकेला था तो दूट जाता था लेकिन सूतों के मिलने से उसमें अपूर्व शक्ति आ गई। सच है कि एकता में ही बल है। अब हम सब मिलकर रहेंगे तो कोई शत्रु हमें हरा नहीं पाएगा।

1.7.2. उद्देश्य :

- इस इकाई को पढ़ने के बाद आप अपने शब्दों में कहानी का सार लिख सकेंगे। इस कहानी के महत्वपूर्ण अंशों की व्याख्या कर सकेंगे। कहानी की अन्तर्वस्तु की विशेषताएँ बता सकेंगे। कहानी में लेखकीय व्यक्तित्व का परिचय पा सकेंगे।
- अनेकता में एकता के बल को समझ सकेंगे।
- कहानी की भाषा और शैली से विशेष परिचित हो सकेंगे।
- एकता न रहने से शत्रु पक्ष अपने को बलवान समझता है। इसलिए एकता में बल है – यह जानकारी प्राप्त करके एक बनकर मिल-जुलकर रह सकेंगे।

1.7.3. व्याख्या

मूलपाठ - १ : एक मनुष्य के आपकी बात ठीक है ।

शब्दार्थ और टिप्पणी :

बेमेल - अ-समान, मेल - समझोता ।

व्याख्या :

एकता में कैसे बल होता है यह दिखाने के लिए कहानीकार ने इसमें एक उदाहरण अवतारणा की है जो शिक्षणीय है । एक मनुष्य के सात पुत्र थे । इनमें मेल नहीं था । बूढ़े ने कहा यदि तुम लोग मिलकर एक साथ रहोगे तुम्हें किसी शत्रु से भय नहीं रहेगा । बूढ़े ने एकता में कैसे बल है यह दर्शने के लिए एक पेड़ का उदाहरण दिया । खेत में मेड़ के निकट एक आम का वृक्ष था इसकी एक डाल ज्यादा जमीन की ओर चली गई है और जमीन की फसल नष्ट कर रही है । बूढ़े कहा कि इसे काट दो तो फसल की हानि नहीं होगी । उसने इसकी शाखा में एक रस्सी बांध दी और पुत्रों से एक एक कर उसे खींचकर तोड़ने की बात कही । लेकिन अकेले खींचने से डाल नहीं टूटी फिर बूढ़े ने सबको एक साथ मिलकर खींचने की बात कही । सभी ने मिलकर खींचा तो डाल टूट गयी । सभी ने एक स्वर में चिल्लाकर कहा - एकता में ही बल है ।

मूलपाठ - २ : बूढ़े ने पुनः एकता में ही बल है ।

शब्दार्थ और टिप्पणी :

धागा - सूत

व्याख्या :

बूढ़े ने पुनः एक उदाहरण दिया । एक धागा देकर बूढ़े ने एक लड़के से कहा कि इसे तोड़ दो । लड़के ने थोड़े ही श्रम से उसे तोड़ दिया । बूढ़े ने कई धागों को एक साथ मिलाकर उसी लड़के से तोड़ने के लिए कहा तो उन्होंने पूरी शक्ति लगाकर उसे तोड़ने की कोशिश की । लेकिन धागा टूटा । बूढ़े ने सातों लड़कों से एक साथ मिलकर तोड़ने के लिए कहा तो उस बटे हुए सूत को वे तोड़ न सके । लड़कों ने बूढ़े से कहा कि जब सूत एक ही था तब टूट जाता था । अभी कई सूतों से मिल

से उसमें शक्ति आ गई। इससे यह पता चला कि सचमुच एकता में ही बल है। एक साथ मिलकर काम करने से शत्रु भी मुहँ उठाकर देखने की हिम्मत न करेगा। एकता में ही बल है – यह अनुभव सबको हुआ।

1.7.4. स्वमूल्यांकन के प्रश्न :

- (i) बूढ़ा दुखी क्यों था ?
- (ii) डाल से क्या हानि हो रही थी ?
- (iii) पेड़ की डाल कैसे टूटी ?
- (iv) 'एकता में बल है' कहानी के लेखक कौन है ?
- (v) एकता में क्या है ?
- (vi) बूढ़े ने 'एकता में बल है' को समझाने के लिए क्या-क्या उदाहरण दिये हैं ?

भाषाकार्य के प्रश्न :

1. निम्नलिखित शब्दों के विपरीत शब्द लिखिए :

शत्रु, छाँह, बूढ़ा, जीत

2. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :

- (i) एक मनुष्य के सात पुत्र था।
 - (ii) एकता में बलों है।
 - (iii) लड़के थोड़े ही श्रम से धागे को तोड़ दिया।
 - (iv) बूढ़े मनुष्य से इससे बड़ा दुख था।
 - (v) खेत की मेंड के निकट एक आम का वृक्ष थे।
3. निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग करके एक-एक वाक्य बनाइए :
- धागा, फसल, शत्रु, मेल, अकेला

4. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बताइए :

फसल, पुत्र, वात, धागा, शक्ति, एकता, प्रयत्न

5. उचित शब्दों से निम्नलिखित वाक्यों के शून्यस्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) ————— ने लड़कों के सामने कई धागों को मिलाकर बँट दिया । (आदमी, बूढ़े, लोगों)

(ii) एक मनुष्य के ————— पुत्र थे । (पांच, सात, दो)

(iii) खेत के निकट ————— का एक वृक्ष था । (नीम, आम, कटहल)

(iv) ————— की फसल को हानि पहुंचती थी । (बगीचे, खेत, जंगल)

(v) ————— में बल है । (अनेकता, एकता, मनुष्य)

1.8 इस इकाई से आपने जो सीखा :

1.1.5. कवीर के दोहों से आपने सीखा कि अपने अंदर में स्थित ईश्वर को पहचानना चाहिए । मनुष्य को संसार में इधर-उधर ढूँढ़ने की आवश्यकता नहीं है । मनुष्य को एक दिन मरना है इसलिए उसे गर्व और अहंकार नहीं करना चाहिए ।

तुलसी के दोहों से आपने सीखा कि संत का स्वभाव आम के पेड़ के समान उदार होना चाहिए । जिस प्रकार आम का पेड़ पत्थर की मार सहकर भी सब को फल देता है उसी प्रकार संत का स्वभाव होना चाहिए ।

मनुष्य को हमेशा मधुर वचन बोलना चाहिए, न कि कौए की तरह कर्कश । अपनी वाणी मनुष्य को जैसे शांति मिलेगी वैसा ही बोलना चाहिए ।

रहीम के दोहों से हमने सीखा कि बड़ों से मिलकर छोटों का महत्व नष्ट हो जाता है, जैसे सागर से मिलकर गंगा का महत्व और अस्तित्व नष्ट हो जाता है ।

स्वाति नक्षत्र की बूँद का उदाहरण देकर रहीम कहते हैं कि जैसी संगति मिलती है वैसा फ़ायदा होता है । जैसे - स्वाति की बूँद केले, सीप और साँप के संस्पर्श में आकर भिन्न-भिन्न रूप धारण करती है यानी कपूर, मोती और विष बन जाती है ।

1.2.5. आपने यह सीखा कि चन्द्रमा हमारा बहुत उपकार करता है। रात के अंधकार में वह हमें रोशनी प्रदान करता है। सूर्य सदैव हमारा उपकार करता है क्योंकि उसके बिना जीवजंगत ही न होता। सूर्य हमें प्राणशक्ति प्रदान करता है। चन्द्र हमें शीतलता प्रदान करता है। इन दोनों से हम उपकृत होते हैं। इस तरह नदियाँ हमें स्वच्छ और निर्मल जल प्रदान करती हैं क्योंकि जल ही जीवन है। इस देश में अनेक पर्वत हैं जिनसे अनेक झारने निकले हैं और इनसे भी हमें लाभ मिलता है। आकाश में इन्द्रधनुष निकलकर हमारे लिए प्रेरणादायक बनता है। यह अनंत सौन्दर्य का प्रतीक है। इनमें सात रंग हैं। इन रंगों से भी हम प्रेरित होते हैं। जीवन को सरस सुन्दर बनाने की प्रेरणा पाते हैं। इन सारे सवालों को उठानेवाले हम ही हैं। अगर हम न होते तो इन सारे सवालों को कौन उठाता?

1.3.5. इस कविता से आपने यही सीखा कि जो अपने आप कर्म के प्रति सचेतन नहीं रहता, उसे प्रकृति जगाती है। प्रकृति के अनुकूल हमें उससे सीख कर अपने कर्तव्यकर्म के प्रति जागरूक होना चाहिए। संसार में प्रत्येक व्यक्ति अपने अपने-कर्म के प्रति समय पर ध्यान देंगे तो जीवन में कोई समस्या दिखाई नहीं देगी। मनुष्य सुखी बनकर समृद्धि की ओर बढ़ पाएगा।

1.4.5. संसार में सभी महापुरुष साहसी थे। साहस के बिना कोई काम, चाहे छोटा हो या बड़ा, नहीं हो पाता। साहस के कारण आज हम रामायण और महाभारत के अनेक चरित्रों को याद करते हैं। भीम, अर्जुन, भीष्म, अभिमन्यु आदि हमारे लिए आदर्श चरित्र हैं। इसे हम उत्तम श्रेणी का साहस कहते हैं। मध्यम श्रेणी का साहस उसे कहते हैं जिन में बेपरवाही और स्वार्थहीनता की कमी नहीं होती, लेकिन ज्ञान की कमी अवश्य होती है।

सत्साहस को समझाने के लिए लेखक दो उदाहरण प्रस्तुत करते हैं: एक अकबर के दरबार में आए दो राजपूतों की आपस में लड़ाई का प्रसंग और दूसरा बुद्धन सिंह का अपने देश और राजा के लिए प्रदर्शित साहस का प्रसंग। साहस में ज्ञान कौशल की भी आवश्यकता है। इस ओर लेखक ने ध्यान दिलाया है। उन्होंने कहा है कि सत्साहसी व्यक्ति में गुप्तशक्ति रहती है।

लेकिन उसे विचार करना है कि वह उसका कब और कैसे उपयोग करे । सत्साहस-प्रदर्शन का अवसर प्रत्येक मनुष्य के जीवन में आता है । लेकिन उसे देश, काल और कर्तव्य विचार करना चाहिए और स्वार्थ रहित होकर साहस न छोड़ते हुए कर्तव्यपरायण बनने के प्रयास करना चाहिए ।

1.5.5. पर्यटन के दो लाभ होते हैं । ऐतिहासिक स्थलों के बारे में ज्ञानप्राप्ति होता है और साथ मनोरंजन भी होता है । भुवनेश्वर, पुरी, कोणार्क इन तीनों को मिलाकर स्वर्ण-त्रिकोण नाम नामित किया गया है । इस लेख में इन तीनों स्थानों के बारे में विशेष जानकारी प्राप्त सकी । भुवनेश्वर मंदिरों के लिए खास कर लिंगराज मंदिर के लिए, पुरी जगन्नाथ मंदिर तथा सागर के लिए तथा कोणार्क मंदिर के स्थापत्य के लिए प्रसिद्ध हैं । विश्व भर के पर्यटक का आते हैं । हमें इन प्राचीन कृतियों को सुरक्षित रखना चाहिए ।

1.6.5. किसी का धन हड़पने की कोशिश नहीं करनी चाहिए ।

राजा और प्रजा के बीच उत्तम संपर्क बनाए रखने के लिए इनमें परामर्श दिए गए हैं ।

अपनी गलती का एहसास हो जाय तो कोई आगे चलकर किसी से हरकत नहीं करेगा ।

एक राजा को किसी का धन हड़पने की कोशिश नहीं करनी चाहिए ।

1.7.5. एकता में ही बल है । सब लोग एक साथ मिलकर काम करने से वे शांति पूर्वक रह सकते हैं । शत्रु की शक्ति भी इसके सामने पराहत होती है । दो उदाहरण देकर लेखक ने हमें समझाने की कोशिश की है । मिलजुलकर रहने से ताकत मिलती है ।

1.9 स्वमूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर :

1.1.6

- (i) कस्तूरी मृग की नाभि में रहती है और बहुत कीमती चीज़ है ।
(ii) कबीर ने ईश्वर की सत्ता से कस्तूरी की सुगंधि की तुलना की है ।

- (iii) कुम्हार मिट्ठी को रौंदता है। कुम्हार घड़ा बनाता है।
- (iv) एक दिन मैं भी तुझे रौंदूँगी।
- (v) संत की।
- (vi) संत का स्वभाव आम के पेड़ के समान उदार होना चाहिए।
- (vii) सागर से मिलकर गंगा का अस्तित्व मिट जाता है।
- (viii) जब कोई पराए घर में जाकर रहता है, तब उसकी प्रभुता मिट जाती है।
- (ix) एक ही बूंद कैसे भिन्न-भिन्न रूप धारण करती है, रहीम ने उनके उदाहरण दिए हैं।
- (x) मोती बन जाती है।
- (xi) विष बन जाती है।
- (xii) कपूर बन जाती है।

Page - 12

1.2.6. स्वमूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर :

- (i) रात को हमें दिशा दिखानेवाला कोई न होता।
- (ii) दिन को सोने-सा चमकानेवाला कोई न होता। जीवजगत का पोषण कौन करता?
- (iii) नदियाँ नहीं होतीं तो जग की प्यास बुझानेवाला कोई न होता।
- (iv) झरनों को बहानेवाला कोई न होता।
- (v) इन्द्रधनुष कोई नहीं बना पाता।
- (vi) प्रश्न उठानेवाला कोई न होता।
- (vii) 'कौन' कविता के कवि बालस्वरूप राही हैं।

भाषा कार्य-उत्तर :

1. चाँद - चंद्रमा, सूरज - सूर्य, नदी - तटिनी, पर्वत - गिरि, नभ - आकाश, बादल - नीरद

2. भारत के उत्तर में हिमालय पर्वत है। भारत में बहुत सी नदियाँ बहती हैं, आकाश में चाँद निकला। सूरज प्रकाश देता है। मन निर्मल रखना चाहिए। आसमान में इन्द्रधनुष दिखाई पड़ता है।

3. प्यास - स्त्री, चाँद - पु, नदियाँ - स्त्री, पर्वत - पुं, झरना - पुं, नभ - पुं

Page 16 1.3.6. (i) भवानी प्रसाद मिश्र ।

- (ii) कवि आदमी को जगाने की बात कह रहे हैं।
- (iii) कवि पवन से सोए हुए आदमी को हिलाने की बात कह रहे हैं।
- (iv) सोए हुए आदमी के कानों पर।
- (v) कवि वक्त पर जगाने की बात कह रहे हैं।
- (vi) जो लोग पहले से जग कर कर्मक्षेत्र में चले गए हैं।
- (vii) कवि ने मनुष्य को जगाने का अनुरोध सूर्य, पवन और पक्षी से किया है।
- (viii) आदमी जब सोया रहता है, तब वह सच से बेखबर रहता है।
- (ix) समय पर नींद से जागकर जो कर्म के लिये निकल पड़ते हैं।
- (x) असमय जागने पर मनुष्य घबरा कर भागता है क्योंकि वह अपना काम ठीक से समय पर समाप्त नहीं कर सका।

भाषाकार्य के उत्तर :

1. चिड़िया, रवि, वायु, समय, सत्य

2. जागना, पाना, झूठ, रात

3. सूरज जगाता है

पवन - हिलाता है

पक्षी - चिल्लाता है

आदमी -- सोया है।

1.4.6.

Page-23

- (i) जब किसी देश या जाति के लोग अपना साहस प्रदर्शन करते हैं, तब इतिहास बन जाता है।
- (ii) सर्वोच्च श्रेणी के साहस के लिए हृदय की पवित्रता, उदारता और चरित्र की दृढ़ता आदि गुणों का होना आवश्यकता है।
- (iii) सत्साहस के लिए कर्तव्यपरायणता की आवश्यकता है। स्वार्थहीनता, साहस, हृदय की पवित्रता, उदारता और चरित्र की दृढ़ता की आवश्यकता है।
- (iv) कुत्सित अभिलाषाओं को पूर्ण करने के लिए कभी-कभी लोग इससे भी बढ़कर साहस के काम कर डालते हैं। इस प्रकार के साहस को निम्न श्रेणी का साहस कहा गया है। इसे सत्साहस नहीं कहा जा सकता है।

अतिसंक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर :

- (i) संसार के सभी महापुरुष साहसी थे।
- (ii) हमारे हृदय में अर्जुन, भीम, भीष्म, अभिमन्यु जैसे महापुरुष बसे हुए हैं।
- (iii) ज्ञान की आभा की कमी के कारण साहस निस्तेज प्रतीत होता है।
- (iv) सत्साहस विचार प्रधान लेख है।
- (v) इस पाठ के लेखक गणेश शंकर विद्यार्थी हैं।
- (vi) सत्साहसी व्यक्ति को स्वार्थहीन और कर्तव्यपरायण होना चाहिए।
- (vii) जमींदार बुद्धन सिंह मारवाड़ के मौलदा गाँव में रहता था।

भाषा-कार्य प्रश्नों के उत्तर :

1. (i) जोर-जोर से (ii) जल्दी (iii) वहाँ (iv) भली-भाँति

2. नौका = स्त्री, सेठ = पुं, महोदय = पुं, छात्र = पुं,

शिष्य = पुं, रूपवान = पुं, गायक = पुं, लेखक = पुं

3. निंदा, निःस्वार्थ, उच्च, अप्रकट, भीरु, अनुदार, अपवित्र

4. (i) अकर्मक (ii) सकर्मक (iii) सकर्मक (iv) अकर्मक (v) अकर्मक

1.5.6.

1. ओडिशा की राजधानी का नाम भुवनेश्वर है।
2. भुवनेश्वर, पुरी और कोणार्क को स्वर्ण त्रिकोण कहते हैं।
3. भुवनेश्वर में लिंगराज मंदिर है।
4. लिंगराज मंदिर की ऊँचाई 180 फुट है।
5. अशोक ने
6. बौद्धधर्म
7. खण्डगिरि-उदयगिरि में
8. लगभग - 215 फुट
9. जैन, बौद्ध, शैव, शाक्त, वैष्णव और आदिवासी
10. 120 किलोमीटर की दूरी पर पारादीप बंदरगाह है।
11. ओडिशा की पूर्व दिशा में बंगोपसागर है।

भाषाकार्य के उत्तर :

1. मस्जिद, भुवनेश्वर, धउलि

2. (i) सुन्दर

(ii) बड़े, साहसी

(iii) विशाल

1.6.6.

Page - 36

- (i) शहर में करोड़पति सेठ रहता था ।
- (ii) बुलावे का हुक्म सुना तो ऐसा लगा जैसे सेठजी की जान डर से ही निकल गई हो ।
- (iii) ऐसी कौन-सी चीज है जो सदैव घटती रहती है ।
- (iv) कौन-सी चीज है जो सदैव बढ़ती रहती है ।
- (v) उम्र सदा घटती रहती है ।
- (vi) लोभ सदा बढ़ता रहता है ।
- (vii) कटोरे में दूध और घास
- (viii) सेठानी ने महाराज से कहा कि आपकी उम्र अधिक हो गई, लेकिन आपकी आदत अभी तक बच्चों की तरह है ।

स्वमूल्यांकन अतिसंक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर :

- (i) सुदर्शन
- (ii) सेठ
- (iii) दो प्रश्न पूछे ।
- (iv) एक महीने का ।
- (v) राजा ने

भाषा-कार्य के उत्तर :

1. (i) तुम्हारे दोनों जवाब ठीक हैं ।
(ii) राजा ने सेठानी को दरबार में बुला भेजा ।
(iii) उम्र सदा घटती रहती है ।
(iv) सेठानी ने जवाब दिया ।
(v) सारी कहानी कह सुनायी ।

2. उम्र - स्त्री, लोभ - पुं, चीज - स्त्री,
हानि - स्त्री, रूपया - पुं, सवाल - पुं ।

3. रात - रात्रि, दिन - दिवस, राजा - भूपति,
दूध - पय, पानी - जल,

4. (i) राजा ने कहा, “सेठ साहब, मेरे दो सवाल हैं।”
(ii) राजा ने पूछा, “वह कौन-सी चीज है जो हमेशा घटती रहती है?”
(iii) पैसा उनके पास होना चाहिए, जो सूझ-बूझ वाले हों।
(iv) आप दूध पीजिए, आपका वजीर घास खाएगा।

5. (i) सेठ दरबार में आए।

- (ii) तुम क्यों उदास हो।
(iii) सेठ बहुत चालाक है।
(iv) मेरे सवाल का जवाब दो।
(v) आपका हुक्म सुनाइए।
(vi) सूझ-बूझ से काम करो।
(vii) धन दौलत के पीछे पागल मत बनो।

1.7.6.

- Page - 91
- (i) अपने पुत्रों में मेल न था इसलिए बूढ़ा दुखी था।
(ii) खेत की फसल को हानि पहुँचती थी।
(iii) सभी ने एक साथ मिलकर खींचा तो डाल टूटी।
(iv) ‘एकता में बल है’ कहानी के लेखक रामचन्द्र पाण्डेय हैं।
(v) एकता में बल है।
(vi) लेखक ने वृक्ष की एक बड़ी डाल और रस्सी के उदाहरण दिए हैं।

भाषा कार्य के उत्तर :

1. मित्र, धूप, बच्चा, हार

2. (i) एक मनुष्य के सात पुत्र थे ।

(ii) एकता में बल है ।

(iii) लड़के ने थोड़े ही श्रम से धागे को तोड़ दिया ।

(iv) बूढ़े मनुष्य को इससे बड़ा दुख था ।

(v) खेत की मेंड के निकट आम का एक वृक्ष था ।

3. धागा - धागा टूट गया ।

फसल - फसल को नुकसान पहुँचा ।

शत्रु - शत्रु से दूर रहो ।

मेल - लड़कों में मेल न था ।

अकेला - अकेला आदमी कुछ नहीं कर सकता ।

4. पुंलिंग - पुत्र, धागा, प्रयत्न

स्त्रीलिंग - फसल, बात, शक्ति, एकता

5. (i) बूढ़े (ii) सात (iii) आम (iv) खेत (v) एकता

1.10 इकाई के समाप्ति के बाद के प्रश्न :

1.1.7

(i) कबीर ने कस्तूरी का उदाहरण क्यों दिया है ?

(ii) माटी कुम्हार से क्या कहना चाहती है ?

(iii) संत का स्वभाव कैसा होता है ?

(iv) तुलसी ने कोयल और कौए के उदाहरण किस लिए दिए हैं ?

(v) रहीम ने गंगा और सागर के उदाहरण देकर क्या कहना चाहा है ?

(vi) रहीम ने कदली, सीप और भुजंग के उदाहरण क्यों दिए हैं ?

1.2.7.

- (i) 'कौन' कविता का सारमर्म अपने शब्दों में लिखिए।
- (ii) 'कौन' कविता में कवि क्या कहना चाहते हैं? संक्षेप में लिखिए।

1.3.7

- 1. पठित कविता की आवृत्ति कीजिए और याद रखिए।
- 2. पठित कविता के अनुकरण में और एक कविता लिखिए।
- 3. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(i) वक्त पर जगाओ,

नहीं तो जब बेवक्त जगेगा यह
तो जो आगे निकल गए हैं
उन्हें पाने घबराकर भागेगा यह।

(ii) घबरा के भागना अलग है

क्षिप्र गति अलग है
क्षिप्र तो वह है
जो सही क्षण में सजग है।

(iii) यह आदमी जो सोया पड़ा है,

जो सबसे बेखबर है
सपनों में खोया पड़ा है।

1.4.7. अध्यास के लिए :

- (i) लेखक के अनुसार साहस कितने प्रकार के होते हैं?
- (ii) मध्यम श्रेणी का साहस किसे कहा गया है? इस प्रकार के साहस को सत्साहस क्यों कहा नहीं जाता?
- (iii) बुद्धन सिंह कौन था? मारवाड़ के लोग उसे आज भी सम्मान पूर्वक क्यों याद करते हैं?

1.5.7.

1. स्वर्ण त्रिकोण में क्या-क्या हैं - अपने शब्दों में लिखिए ।
2. पुरी की विशेषता बताइए ।
3. कोणार्क क्यों प्रसिद्ध है ?
4. स्वर्ण त्रिकोण के अलावा ओडिशा में और कौन-कौन से दर्शनीय स्थान हैं, लिखिए ।

1.6.7. अभ्यास के लिए प्रश्न :

- (i) राजा ने कौन से दो सवाल पूछे ?
- (ii) राजा के सवालों का सेठानी ने क्या जवाब दिया ?
- (iii) पठित कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए ?

1.7.7. अभ्यास के लिए प्रश्न

- (i) बूढ़े मनुष्य को किससे दुख मिलता था ?
- (ii) बूढ़े मनुष्य के कितने पुत्र थे ?
- (iii) क्या रहने पर एक अकेला शत्रु तुम सबको जीत सकता है ?
- (iv) डाल की छाँह से किसे हानि पहुँचती थी ?
- (v) बूढ़े ने अपने पुत्रों से डाल तोड़ने के लिए क्या कहा ?
- (vi) डाल टूटने के बाद लड़कों ने पिताजी से क्या कहा ?
- (vii) बटा हुआ धागा क्यों नहीं टूटा ?
- (viii) इस कहानी से क्या शिक्षा मिलती है ?



UNIT - 2

इकाई - 2

हिन्दी व्याकरण

2.0. व्याकरण

2.1. प्रारंभ

2.2 उद्देश्य

2.3 वर्णमाला : मात्राएँ । देखें और पढ़ें । आएँ ऐसे लिखें । गिनती ।

2.4 संयुक्त व्यंजन

2.5 ध्वनियाँ

2.6 उच्चारण

2.7 वर्तनी

2.7.1 स्वमूल्यांकन के प्रश्न

2.8 पद विचार

2.8.1. संज्ञा

2.8.1.1 स्वमूल्यांकन के प्रश्न

2.8.2 वचन

2.8.2.1 स्वमूल्यांकन के प्रश्न

2.8.3 लिंग

2.8.3.1 स्वमूल्यांकन के प्रश्न

2.8.4 कारक

2.8.4.1 स्वमूल्यांकन के प्रश्न

2.8.5 सर्वनाम

2.8.5.1 स्वमूल्यांकन के प्रश्न

2.8.6 विशेषण

2.8.6.1 स्वमूल्यांकन के प्रश्न

2.8.7 क्रिया

2.8.7.1 स्वमूल्यांकन के प्रश्न

2.9. इस इकाई से आपने जो सीखा

2.9.1.1 स्वमूल्यांकन के प्रश्न

2.10 स्वमूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर

2.11 इकाई की समाप्ति के बाद के प्रश्न

2.12 संदर्भ ग्रंथ सूची

2.0. व्याकरण

2.1 प्रारंभ

व्याकरण क्यों ?

हम आपस में विचारों का आदान-प्रदान करने के लिए भाषा का प्रयोग करते हैं। भाषा का मूल रूप वह है, जिसे हम बोलते हैं। यह उसका मौखिक या उच्चरित रूप है। इस उच्चरित रूप को हम लिखते भी हैं। यह भाषा का दूसरा और स्थायी रूप है। इसके लिए हम लिपियों या वर्णों का प्रयोग करते हैं। इसलिए हम हिन्दी ठीक से बोलें। अच्छी तरह प्रत्येक शब्द और वाक्य का उच्चारण करें। उसे ठीक से लिखें भी।

आप ओड़िआ वर्णमाला से परिचित हैं। हिन्दी की वर्णमाला भी लगभग वैसी ही है। जहाँ भिन्नता है, उसे अच्छी तरह समझ लें। हिन्दी और ओड़िआ वर्णमाला की तुलनात्मक सारणी देखें। वर्णों के समूह को वर्णमाला कहते हैं। वर्णमाला में स्वर और व्यंजन होते हैं। स्वर भी मात्रा रूपों में व्यंजनों के साथ मिलकर आते हैं। दो व्यंजनों के मेल से संयुक्त व्यंजन बनते हैं। स्वर और व्यंजन के उच्चारण के लिए प्रत्येक भाषा में निश्चित व्यवस्था है। भाषा-भेद से उच्चारण में भिन्नता भी पाई जाती है। वर्ण संयोजन करके शब्द बनाते समय भी शब्दों की सही वर्तनी पर ध्यान दिया जाता है। एक ही शब्द की वर्तनी भी भिन्न भिन्न भाषाओं में भिन्न भिन्न हो सकती है। वर्तनी सही न होने से भाषा अशुद्ध हो जाती है। इसलिए शब्दों की वर्तनी पर ध्यान देना आवश्यक है।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई में आप –

- लिखित भाषा के प्रयोग में वर्णमाला के महत्व को समझ सकेंगे।
- ध्वनि-वर्ण के सह-संबंध को पहचान सकेंगे।
- वर्णों, संयुक्त व्यंजनों का व्यवहार करके शुद्ध रूप से पढ़ सकेंगे और लिख सकेंगे।
- वर्णों का सही उच्चारण कर सकेंगे और शब्द की सही वर्तनी का प्रयोग कर सकेंगे।

2.3 वर्णमाला

ਅ	ਆ	ਇ	ਈ	ਉ	ਊ	ਊ	ਊ
ਥ	ਥਾ	ਇ	ਈ	ਊ	ਊ	ਊ	ਊ
ਏ	ਏ	ਓ	ਐ	ਕ	ਖ	ਗ	
ਏ	ਐ	ଓ	ਐ	ਕ	ਖ	ਗ	
ਘ	ਕੁ	ਚ	ਛ	ਜ	ਝ	ਜ	
ਘ	ਕੁ	ਚ	ਛ	ਜ	ਝ	ਜ	
ਟ	ਠ	ਡ	ਫ	ਣ	ਤ	ਤ	
ਟ	ਠ	ਡ	ਫ	ਣ	ਤ	ਤ	
ਤ	ਥ	ਦ	ਧ	ਨ	ਪ	ਫ	
ਤ	ਥ	ਦ	ਧ	ਨ	ਪ	ਫ	
ਥ	ਥ	ਦ	ਧ	ਨ	ਪ	ਫ	
ਭ	ਭ	ਮ	ਯ	ਰ	ਲ	ਵ	
ਭ	ਭ	ਮ	ਯ	ਰ	ਲ	ਵ	
ਹ	ਹ	ਨ	ਹ	ਰ	ਲ	ਵ	
ਹ	ਹ	ਨ	ਹ	ਰ	ਲ	ਵ	
ਸ	਷	ਸ	ਹ	ਖ	ਤ੍ਰ	ਜ੍ਰ	
ਸ	਷	ਸ	ਹ	ਖ	ਤ੍ਰ	ਜ੍ਰ	
ਣ	ਣ	ਏ	ਹ	ਕਿ	ਤ੍ਰ	ਜ੍ਰ	
ਣ	ਣ	ਏ	ਹ	ਕਿ	ਤ੍ਰ	ਜ੍ਰ	
ਤ੍ਰ	.	:	ੴ				
ਤ੍ਰ	੦	੦	੦				

मात्राएँ

आ	-	ा	का	गा	चा	झा	ता	मा
इ	-	ि	कि	गि	चि	जि	ति	मि
ई	-	ी	की	गी	ची	झी	ती	मी
उ	-	ु	कु	खु	चु	जु	तु	मु
ऊ	-	ू	कू	खू	चू	जू	तू	मू
ऋ	-	ृ	कृ	खृ	गृ	जृ	तृ	मृ
ए	-	े	के	खे	गे	चे	ते	मे
ऐ	-	ै	कै	खै	चै	तै	मै	है
ओ	-	ो	को	खो	चो	तो	मो	हो
औ	-	ौ	कौ	खौ	चौ	तौ	मौ	हौ
.	-	.	कं	खं	गं	तं	मं	हं
:	-	:	कः	खः	गः	तः	मः	हः
्	-	्	आँ	एँ	गँ	लँ	ञँ	ঁ

देखें और पढ़ें

आम, कलम, ऐनक, ओखली, ऊन, ऋषि, ईश, घर,
नमक, मटर, हल, वन, फल, खटमल, सड़क, नहर,
चहलपहल, यक्ष, श्रम, इत्र, गाय, लता, जहाज, इकतारा, अनार,
गमला, घड़ा, चरखा, टमाटर, नाम, तालाब, माला, पहाड़,
तकिया, मणि, यति, किसान, विष, विहार, लिपि, गिलहरी,
हाथी, पगड़ी, मकड़ी, अलमारी, ओखली, घड़ी, छतरी, छड़ी,
ढफली, मछली, नदी, डाली, शारीफा, बुढ़िया, मुनि, सुमन,
पुल, चुहिया, चूहा, झूला, तरबूज, खरबूजा, झाड़ू, तराजू,
बहू, शेर, रेल, करेला, देश, नेवला, केला, भेड़, पेट, ठठेरा,
पैसा, मैना, थैला, बैल, मैदान, बैठक, घोड़ा, तोता, कोट,
मोर, टोकरी, सरोवर, खरगोश, तौलिया, पकौड़ी, चौका,
रौनक, हौसला, पतंग, बंदर, मंदिर, शंख, हंस, वंश, पूँछ,
सूँड, पाँव, चाँद, गाँव, साँप, माँ, दुःख, अतः ।

आएँ ऐसे लिखें

अ	उ	उ	अ	आ	आ
इ	॒	॒	इ	ई	ई
ऊ	॑	॑	ऊ	ऊ	ऊ
ऋ	॒	॒	ऋ	ऋ	ऋ
ए	॒	॒	ए	ऐ	ऐ
ओ	॒	॒	ओ	ओ	ओ
क	॒	॒	क	क	क
ख	॒	॒	ख	ख	ख
ग	॒	॒	ग	ग	ग
घ	॒	॒	घ	घ	घ
ड	॒	॒	ड	ड	ड
च	॒	॒	च	च	च
छ	॒	॒	छ	छ	छ
ज	॒	॒	ज	ज	ज

କ୍ଷ	କ୍ଷ	କ୍ଷ	କ୍ଷ	କ୍ଷ
ଜ	ଜ	ଜ	ଜ	ଜ
ଟ	-	ଟ	ଟ	ଟ
ଠ	-	ଠ	ଠ	ଠ
ଣ	-	ଣ	ଣ	ଣ
ତ	ତ	ତ	ତ	ତ
ଥ	ଥ	ଥ	ଥ	ଥ
ଦ	ଦ	ଦ	ଦ	ଦ
ଧ	ଧ	ଧ	ଧ	ଧ
ନ	ନ	ନ	ନ	ନ
ପ	ପ	ପ	ପ	ପ
ଫ	ଫ	ଫ	ଫ	ଫ

ब	८	व	६	श	५	ब
भ	९	३	४	८	७	भ
म	-	-	-	५	५	म
य	२	२	१	४	१	य
र	४	४	२	२	१	र
ल	०	०	०	०	०	ल
व	८	१	१	१	१	व
श	७	१	१	१	१	श
ष	८	५	५	५	५	ष
स	५	८	८	८	८	स
ह	-	-	१	१	१	ह
क्ष	१	१	१	१	१	क्ष
त्र	-	-	२	२	२	त्र
ञ	२	२	२	२	२	ञ
ऋ	५	५	५	५	५	ऋ

गिनती

१. एक	२६. छब्बीस	५१. इक्यावन	७६. छिहतर
२. दो	२७. सत्ताईस	५२. बावन	७७. सतहत्तर
३. तीन	२८. अठाईस	५३. तिरपन	७८. अठहत्तर
४. चार	२९. उनतीस	५४. चौवन	७९. उन्यासी
५. पाँच	३०. तीस	५५. पचपन	८०. अस्सी
६. छह	३१. इकतीस	५६. छप्पन	८१. इक्यासी
७. सात	३२. बत्तीस	५७. सत्तावन	८२. बयासी
८. आठ	३३. तैंतीस	५८. अद्वावन	८३. तिरासी
९. नौ	३४. चौंतीस	५९. उनसठ	८४. चौरासी
१०. दस	३५. पैंतीस	६०. साठ	८५. पच्चासी
११. ग्यारह	३६. छत्तीस	६१. इकसठ	८६. छियासी
१२. बारह	३७. सैंतीस	६२. बासठ	८७. सत्तासी
१३. तेरह	३८. अड़तीस	६३. तिरसठ	८८. अद्वासी
१४. चौदह	३९. उनतालीस	६४. चौंसठ	८९. नवासी
१५. पन्द्रह	४०. चालीस	६५. पैंसठ	९०. नब्बे
१६. सोलह	४१. इकतालीस	६६. छियासठ	९१. इक्यानबे
१७. सत्रह	४२. बयालीस	६७. सड़सठ	९२. बयानबे
१८. अठारह	४३. तैंतालीस	६८. अड़सठ	९३. तिरानबे
१९. उन्नीस	४४. चवालीस	६९. उनहत्तर	९४. चौरानबे
२०. बीस	४५. पैंतालीस	७०. सत्तर	९५. पचानबे
२१. इक्कीस	४६. छियालीस	७१. इकहत्तर	९६. छियानबे
२२. बाईस	४७. सैंतालीस	७२. बहत्तर	९७. सत्तानबे
२३. तेर्झीस	४८. अड़तालीस	७३. तिहत्तर	९८. अद्वानबे
२४. चौबीस	४९. उनचास	७४. चौहत्तर	९९. निन्यानबे
२५. पच्चीस	५०. पचास	७५. पचहत्तर	१००. सौ

2.4. संयुक्त व्यंजन

क् + ष = क्ष	(ष)	अक्षर	कक्षा	सक्षम
त् + र = त्र	(त्र)	पत्र	मित्र	छात्र
श् + र = श्र	(श्र)	श्रम	श्रवण	श्रमिक
क् + य = क्य	(क्य)	क्या	क्यारी	क्यों
क् + र = क्र	(क्र)	चक्र	वक्र	क्रोध
क् + ल = क्ल	(क्ल)	क्लान्त	क्लेश	क्लिष्ट / छ
क् + व = क्व	(क्व)	पक्व	क्वाँरा	पक्वान्न/ न
ग् + य = ग्य	(ग्य)	भाग्य	योग्य	ग्यारह
ग् + र = ग्र	(ग्र)	ग्रहण	ग्राम	ग्राहक
ग् + ल = ग्ल	(ग्ल)	ग्लास	ग्लानि	ग्लूकोज
ग् + व = ग्व	(ग्व)	ग्वाला	ग्वालियर	ग्वार
ज् + य = ज्य	(ज्य)	राज्य	ज्योति	ज्योतिष
ज् + र = ज्ञ	(ज्ञ)	वज्ञ	वज्ञपात	वज्ञाधात
ज् + ज = ज्ञ	(ज्ञ)	विज्ञ	विज्ञान	यज्ञ
क् + क = क्क	(क्क)	चक्का	पक्का	सिक्का
च् + च = च्च	(च्च)	बच्चा	कच्चा	सच्चा
ट् + ट = द्वि/ट्ट	(द्वि)	पद्मी/टटी	मिद्दी/टटी	छुद्दी/टटी
ड् + ड = द्वु/ड्ड	(द्वु)	गुद्दा/डडा	गुद्दी/डडी	कबड्डी/डडी
ष् + ण = ष्ण	(ष्ण)	कृष्ण	विष्णु	सहिष्णु

त् + त = त्त/ल्ल	(२)	पत्ता/ल्ला	कुत्ता	सत्ता / ल्ला
न् + न = न्न/न्न	(२)	गन्ना/न्ना	मुन्ना/न्ना	तमन्ना / न्ना
प् + प = प्प	(८)	गप्प	पिप्पल	कुप्पा
म् + म = म्म	(२)	सम्मान	अम्मा	चम्मच
ल् + ल = ल्ल	(२)	बल्ला	बिल्ली	तिल्ली
स् + त = स्त	(४)	मस्तक	हस्त	पुस्तक
प् + य = प्य	(८५)	प्यार	प्यास	प्याला
द् + ध = द्ध/द्व	(७)	बुद्धि/दधि	सिद्धि/दधि	शुद्ध/दधि
म् + ब = म्ब	(८)	लम्बा	अम्बा	लुम्बिनी
श् + च = श्च	(८)	निश्चय	पश्चिम	आश्चर्य
ल् + ह = ल्ह	(८)	कुल्हड़	कुल्हड़ी	अल्हड़
न् + द = न्द	(८)	चन्दन	बन्दर	मन्दिर
च् + छ = छ्छ	(८)	अच्छा	मच्छर	पुच्छ
ण् + ड = ण्ड	(८)	अण्डा	गण्डूष	भण्डार
त् + य = त्य	(८५)	सत्य	नित्य	त्योहार
ब् + द = ब्द	(८)	शब्द	शताब्दी	निःशब्द
स् + व = स्व	(८)	स्वर	स्वभाव	स्वाद
स् + क = स्क	(८)	स्कूल	चुस्की	संस्कृत
न् + त = न्त	(८)	अन्त	वसन्त	प्रान्त

2.5. ध्वनियाँ

भाषा का मूल रूप उसकी ध्वनियाँ हैं। ये मुख के विभिन्न अंगों की मदद से उच्चारित होती हैं। हिंदी की ध्वनियों में ग्यारह स्वर ध्वनियाँ हैं और पैंतीस व्यंजन ध्वनियाँ हैं। कुछ ध्वनियों के उच्चारण में विशेष प्रयास करना पड़ता है, जैसे - मात्रा, घोषत्व और प्राणत्व आदि। इन ध्वनियों को लिखने के लिए वर्णमाला बनाई गई है। पर ध्वनियों का सही उच्चारण वर्णमाला से नहीं, अलग कोशिश करके सीखना पड़ता है।

2.6 उच्चारण

हिन्दी भाषा बोलते समय निम्नलिखित बातों पर आप विशेष ध्यान दें :

- हिन्दी के हस्त स्वर और दीर्घ स्वर के उच्चारण में सावधान रहना होगा। हस्त स्वरों का उच्चारण जल्दी से या कम समय में होता है। लेकिन दीर्घ स्वरों के उच्चारण में अधिक समय लगता है। वह लंबा होता है। इनका उच्चारण करके देखिए : दिन, अमल, जाति, तिथि, उम्र, ऋण, करुण, दीन, राम, इमली, झाड़ू, ऊसर, आनंद, करुणा।
- शब्दों के अंतिम वर्ण में 'अ' का उच्चारण नहीं होता, ओड़िआ में होता है। इसलिए हिन्दी में 'कलम' का उच्चारण 'कलम्' होता है। इन शब्दों का उच्चारण करें : कमल, फल, कम, घर, ऊपर।
- 'ऋ' का उच्चारण 'रि' या 'र' जैसे होता है। जैसे, ऋषि = रिषि या रषि।
- 'ऐ' और 'औ' को एक झटके में उच्चारण करते हैं तो ये मूल स्वर जैसे होते हैं, जैसे - ऐनक, औरत। इनका अइनक और अउरत जैसा उच्चारण नहीं होता, जो संयुक्त स्वर होते हैं।
- हिन्दी में वर्ण 'ब' और अंस्तस्थ 'व' का उच्चारण अलग-अलग है। ओड़िआ में दोनों का उच्चारण 'ब' जैसा होता है। इसलिए सावधानी से इन शब्दों का उच्चारण कीजिए और मातृभाषा के प्रभाव से बचिए :

बार – वार, बहन – वाहन, बाद – वाद, बिना – वीणा, वर – वधू, बब्बर, अकबर ।

→ इसी प्रकार हिन्दी में ‘ज’ और ‘य’ (ः) का उच्चारण भिन्न है । देखिए और ठीक से बोलिए : इअ (ः) यम, यमुना, यज्ञ, याद, याम, यदा, यद्यपि, यान, यश, यात्रा, कायर, माया । इनको जम, जमुना मत कहिए ।

→ हिन्दी में ‘ल’ (ळ) एक ही ध्वनि है । ‘ळ’ (ळ) नहीं है । ‘ल’ है । जैसे – फल, सलिल, कल, नल, हल, जल, जाल, माला ।

→ हिन्दी में ‘श’ का उच्चारण तालु और जीभ की सहायता से किया जाता है । शासक, प्रशासन, विश्वास आदि का उच्चारण करके देखिए । ‘ष’ का उच्चारण भी जीभ और मूर्धा या तालु की सहायता से करते हैं । ‘स’ का उच्चारण हिन्दी और ओड़िआ में बराबर है । ओड़िआ में सारे ‘श, ष, स’ → ‘स’ की तरह बोले जाते हैं ।

→ विसर्ग का साफ उच्चारण करें – अतः, अधःपतन ।

क्ष = कृष और ज्ञ = ग्य होता है ।

2.7. वर्तनी

हिन्दी में कुछ वर्ण और कुछ संयुक्त वर्ण दो-दो रूपों में प्रचलित हैं । लेखन और मुद्रण में एकरूपता लाने के लिए सर्वग्राह्य रूप को मानक रूप कहा जाता है । दूसरे को मानकेतर रूप कहा जाता है । नीचे कुछ उदाहरण दिए गए हैं । इनमें से केवल मानक रूपों का प्रयोग करना चाहिए ।

मानक रूप	मानकेतर रूप	मानक रूप	मानकेतर रूप
अ	ऋ	भ	व
ऋ	ऋ	ल	ल
ख	ख	श	ज्ञ
छ	छ	क्ष	च्छ
झ	झ	त्त	त्त
ण	ण	क्त	क्त
ध	ध	द्द	द्द

मानक रूप	मानकेतर रूप	मानक रूप	मानकेतर रूप
ड़	डु	प्त	प्त
द्य	द्य	श्च	श्च
द्व	द्व	ह्न	ह्न
ट्ट	ट्ट	ह्य	ह्य
न	न्न	ह्ल	ह्ल
द्म	द्म	ह्व	ह्व
द्ध	द्ध		

मानक वर्तनी – कुत्ता, उद्देश्य, द्वितीय, बुद्धिमान, चिह्न, उद्यान, विद्या, विद्वान, आह्लाद, ब्रह्म, श्लेष, उक्त, चक्र, पद्म

मानकेतर वर्तनी – कुत्ता, उद्देश्य, द्वितीय, बुद्धिमान, चिह्न, उद्यान, विद्या, विद्वान, आह्लाद, ब्रह्म, श्लेष, उक्त, पद्म

छ्, ट् ठ् ड् में जुड़ने पर 'र' का दूसरा रूप(्) प्रयुक्त होता है ।

जैसे – कृच्छ्र, ट्रेन, ड्रामा ।

ड और ढ का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है –

शब्द के आरंभ में – डर, डिब्बा, डाली, ढेर, ढाल, ढाई

उपसर्ग के बाद – निडर, सुडौल, निढाल, बेढंगा

अनुस्वार के बाद – अंडा, ठंडा, ठंडक

संयुक्त व्यंजन में – अड़ा, बुड़ा, लड्डू, गड़ा

ड़ और ढ़ का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है –

शब्दों के बीच में – लड़का, गाड़ी, पढ़ना, चढ़ाई

शब्दों के अंत में – पेड़, रगड़, बाढ़, रीढ़

अनुनासिकता के बाद – साँड़, सूँड़, ढूँड़ना

अनुस्वार :

संयुक्त व्यंजन के रूप में वर्ग के नासिक्य व्यंजन के बाद स्ववर्गीय अन्य वर्ण हो तो अनुस्वार का प्रयोग किया जाता है –

जैसे – (i) पंकज, गंगा, चंचल, कंजूस, कंठ, दंड, संत, मंदिर, चंपा, संबंध आदि ।

(इनको पङ्कज, गङ्गा, चङ्चल, कङ्जूस, कण्ठ, दण्ड, सन्त, मन्दिर, चम्पा, सम्बन्ध के रूप में लिखा जा सकता है । लेकिन हिन्दी भाषा में अनुस्वार युक्त रूप मानक है ।)

(ii) य, र, ल, व, श, स, ह, क्ष, झ के तुरंत पूर्व के व्यंजन के साथ अनुस्वार का प्रयोग होता है ।

जैसे – संयम, संरचना, संलाप, संवाद, अंश, हिंसा, संहार, संक्षेप, संज्ञा ।

नासिक्य व्यंजन –

नासिक्य व्यंजन के बाद अन्य वर्ग का कोई नासिक्य व्यंजन आए तो नासिक्य व्यंजन ही रहेगा । उसका अनुस्वार के रूप में परिवर्तन नहीं होगा ।

जैसे – वाड्मय, चिन्मय, उन्मुख, षण्मुख ।

द्वित्व रूप में नासिक्य व्यंजन आने से उनका अनुस्वार में परिवर्तन नहीं होता ।

जैसे – अन्न, सम्मेलन, सम्मति, विषण्ण, सम्मान ।

अनुनासिकता –

(चन्द्रबिन्दु) इसके उच्चारण के समय हवा नासाविवर और मुखविवर – दोनों विवरों से निकलती है, पर अनुस्वार के उच्चारण के समय हवा केवल नासाविवर से निकलती है ।

चन्द्रबिन्दु को दो तरह से लिखा जाता है ।

- जहाँ शिरोरेखा के ऊपर कोई मात्रा चिह्न न हो, वहाँ चन्द्रबिन्दु का प्रयोग होता है ।

जैसे – दाँत, आँख, गेहूँ, साँस, लड़कियाँ, बहुएँ, करूँ ।

- जहाँ शिरोरेखा के ऊपर मात्राचिह्न हो, वहाँ बिन्दु का प्रयोग किया जाता है ।

जैसे – सिंचाई, नहीं, मैं, हैं, हमें, थीं, माताओं, कहीं, क्योंकि ।

शिरोरेखा – शब्दों के ऊपर शिरोरेखा (बाईं से दाहिनी ओर) अवश्य दी जाएगी ।

अ, थ, थ, क्ष, श्र : आदि शब्द के बीच में आने से शिरोरेखा खंडित होती है ।

जैसे – अथःपतन, लाभ, यक्ष, आश्रय

2.7.1. स्वमूल्यांकन के प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

(i) ख का मानक रूप _____ है।

(ii) बुद्धि का मानक रूप _____ है।

(iii) 'क्ष' का उच्चारण _____ होता है।

2. कोष्ठक में से उपयुक्त शब्द चुन कर रिक्त स्थान भरिए -

(i) ड + र का रूप _____ होगा। (ड्र, डु)

(ii) हम महाविषुव संक्रांति को _____ वर्ष मनाते हैं। (नव, नव)

(iii) मेरी _____ आ रही है। (बहन, वहन)

(iv) हिन्दी में 'ऋ' का उच्चारण _____ होता है। (रि, रु)

3. किन-किन स्थितियों में 'ड' का प्रयोग होता है ?

4. किन-किन स्थितियों में नासिक्य व्यंजन संयुक्त रूप में आता है ?

■ ■ ■

2.8. पद विचार

2.8.0. प्रारंभ

भाषा की लघुतम अर्थभेदक इकाई – ध्वनि है। 'काना' और 'खाना' दो शब्दों में 'क्' और 'ख्' अलग-अलग ध्वनियाँ हैं और बाकी सब ध्वनियाँ समान हैं। पर ये दो शब्द इस भिन्नता के कारण अलग अर्थ देते हैं।

एकाधिक ध्वनियाँ एक साथ उच्चरित होती हैं तो 'शब्द' बनते हैं। शब्द का अर्थ होता है। निरर्थक ध्वनिसमूह शब्द नहीं माने जाते, जैसे – इमआ, हरत आदि। शब्द वाक्य में प्रयुक्त होते हैं तो 'पद' कहलाते हैं। हिंदी में – संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और अव्यय पाँच प्रकार के पद हैं। इनमें से पहले चार प्रकार के पद वाक्य में प्रयुक्त होने पर उनके रूप बदलते हैं। जैसे – बालक, बालक ने, बालक को, बालक से, वह, उसने, उससे, अच्छा, अच्छी, गया, गए, गई आदि। शब्द के रूपों में परिवर्त्तन –

लिंग (लड़का, लड़की) वचन (बच्चा, बच्चे) और कारक (वह, उसने) के कारण होते हैं।

2.8.1. संज्ञा

इस इकाई में आप :

- वाक्य में संज्ञाओं को पहचान सकेंगे।
- संज्ञाओं को वर्गीकृत कर सकेंगे।
- भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण कुशलता के साथ कर सकेंगे।

किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, गुण, भाव आदि के नाम को संज्ञा कहते हैं। जैसे – राम, भात, कटक, दया, अच्छाई आदि।

संज्ञा के पाँच भेद होते हैं :

व्यक्तिवाचक संज्ञा –

किसी भी व्यक्ति, प्राणी, वस्तु या स्थान का बोध करानेवाले शब्द को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे – राम, माधुरी, सुभाषचन्द्र बोस, चेतक, रामायण, जापान, हिमालय, गंगा आदि।

जातिवाचक संज्ञा -

व्यक्तियों, प्राणियों या वस्तुओं की पूरी जाति (सर्वसामान्य नाम) का बोध करानेवाले शब्द को जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे - पुरुष, स्त्री, लड़का, लड़की, बच्चा, बेटा, पशु, पक्षी, कुत्ता, घोड़ा, गाय, पर्वत, कुर्सी, मेज, नथ, पायल, शिक्षक, डॉक्टर, कवि, दवाखाना, नगर, देश, हण्डे आदि।

द्रव्यवाचक संज्ञा -

किसी द्रव्य या पदार्थ का बोध कराने वाले शब्द को द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे - सोना, चाँदी, ऊन, लकड़ी, ताँबा, घास, आटा, चाय, चावल, गेहूँ, तेल, घी, पानी, दूध, शहद, दाल, शराब आदि।

(ऐसी संज्ञा को अलग-अलग खण्डों में बाँटने पर भी मूल नाम नहीं बदलता।)

समूहवाचक संज्ञा -

किसी समुदाय या समूह का बोध कराने वाले शब्द को समूहवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे - कक्षा, दल, गुच्छा, जुलूस, मंडली, शृंखला, संघ, सेना, झुंड आदि।

भाववाचक संज्ञा -

किसी भाव, दशा, अवस्था, धर्म, गुण या कार्य का बोध कराने वाले शब्द को भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे - अंधेरा, उत्साह, क्रोध, झूठ, देना, दौड़, नींद, पीड़ा, प्रेम, साहस, रोना आदि। ये भाववाचक संज्ञाएँ मूल रूप में हैं। कुछ अन्य भाववाचक संज्ञाएँ मूल शब्द के साथ प्रत्यय जोड़कर बनायी जाती हैं। कुछ उदाहरण देखें :

प्रत्यय	मूलशब्द	भाववाचक संज्ञाएँ
आ	झगड़, ठेल, झूल	झगड़ा, ठेला, झूला
आई	अच्छा, बुरा, सच्चा, पढ़, कट	अच्छाई, बुराई, सच्चाई, पढ़ाई, कटाई
ई	धमका, हँस, नवाब	धमकी, हँसी, नवाबी
आवट	लिख, बना, मिला, सजा	लिखावट, बनावट, मिलावट, सजावट

आहट	घबरा, चिकना, मुस्करा, कड़वा	घबराहट, चिकनाहट, मुस्कराहट, कड़वाहट
आस	मीठा, खट्टा	मिठास, खटास
ता	मित्र, साधु, सरल, मूर्ख, एक	मित्रता, साधुता, सरलता, मूर्खता, एकता
त्व	देव, गुरु, वीर, मम	देवत्व, गुरुत्व, वीरत्व, ममत्व
पन	बच्चा, पागल, काला, लड़का	बचपन, पागलपन, कालापन, लड़कपन,
पा	बूढ़ा, मोटा	बुढ़ापा, मोटापा
य	ईश्वर, उचित, सुंदर, पंडित	ऐश्वर्य, औचित्य, सौंदर्य, पांडित्य

2.8.1.1. स्वमूल्यांकन के प्रश्न

5. रेखांकित पद संज्ञा के किस भेद के अंतर्गत आते हैं ?

- (i) भुवनेश्वर ओडिशा की राजधानी है।
- (ii) गंगा नदी हिमालय से निकलती है।
- (iii) मदन दुकान से तेल खरीदेगा।
- (iv) पुलिस ने भीड़ में से चोर को पकड़ लिया।
- (v) गुलाब का सौंदर्य मन को आकर्षित कर लेता है।
- (vi) इस गन्ने में मिठास नहीं है।

6. निम्नलिखित प्रश्नों में से भाववाचक संज्ञाएँ छाँटिए :

- (i) इतिहास, घबराहट, यमुना
- (ii) देवत्व, दीन, देव
- (iii) दयानिधि, दयालु, दया
- (iv) साधुता, साधु, पहाड़
- (v) औषध, औरत, औचित्य

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से व्यक्तिवाचक संज्ञाओं को छाँटिए :

मनुष्यता, बलांगीर, अमेरिका, पानी, मछली, चेतक, ऋषिकुल्या, कपिलास, अंजना, सेवा, भूगोल, रीता

8. कोष्ठक में दिए गए शब्दों से भाववाचक संज्ञाएँ बनाकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

- (i) चोर की _____ ने सारा भेद खोल दिया । (घबराना)
- (ii) भारतेंदु हरिश्चंद्र _____ में भी कविता रचना करते थे । (बच्चा)
- (iii) मोहन की _____ की सभी ने सराहना की । (साधु)
- (iv) कल धान की _____ होगी । (कटना)
- (v) तुम्हारी _____ से मैं नहीं डरूँगा । (धमकाना)

9. 'क' स्तंभ में कुछ व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ और 'ख' स्तंभ में कुछ जातिवाचक संज्ञाएँ दी गयी हैं । उपयुक्त शब्दों का मिलान कीजिए :

'क'	'ख'
सुनीता	नगर
कोलकाता	बालक
विनोद	नदी
यमुना	देश
भारत	लड़की

10. भाववाचक संज्ञाएँ बनाइए :

सजाना, बूढ़ा, लड़का, गुरु, मित्र, खट्टा, झगड़ना, अच्छा, कटना, बच्चा

11. द्रव्यवाचक संज्ञाएँ छाँटिए :

झाड़ू, सोना, झुंड, लकड़ी, सेना, चाँदी, मैदान, घास, दरवाजा, पानी

12. समूहवाचक संज्ञाएँ छाँटिए :

प्रार्थना, सेना, मन, भीड़, कक्षा, पुस्तक, परिवार, महिला, झूँड, ऐरावत

13. 'क' विभाग में कुछ द्रव्यवाचक संज्ञाएँ और 'ख' विभाग में कुछ जातिवाचक संज्ञाएँ दी गयी हैं । उनका उपयुक्त मिलान कीजिए -

(क) सोना, चाँदी, लकड़ी, अलुमिनियम, मिट्टी

(ख) मटकी, पायल, कुर्सी, देगची, कर्णफूल

2.8.2 वचन

इस इकाई में आप

- भाषा में वचन के महत्त्व को समझ सकेंगे।
- लिंग और शब्दांत मात्रा के आधार पर वचन परिवर्तन कर सकेंगे।
- बहुवचन के रूप के आधार पर लिंग भी पहचान सकेंगे।
- परसर्ग युक्त शब्दों के बहुवचन में आनेवाले प्रत्ययों का प्रयोग सीख जाएँगे।

वचन परिवर्तन के नियम

✓ संज्ञा शब्द के जिस रूप से एक व्यक्ति या वस्तु का बोध होता है उसे एक वचन और जिस रूप से एक से अधिक व्यक्तियों या वस्तुओं का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं। अतएव, ओड़िआ की भाँति हिन्दी में भी दो ही वचन हैं – एकवचन और बहुवचन। शब्द का मूल रूप एकवचन में होता है, जैसे – बालक, फल, बच्चा, माता आदि।

शब्दों के अंतिम स्वर या शब्दांत मात्रा से हम उसके वचन को पहचानते हैं और वचन बदल भी सकते हैं। नीचे इसके कुछ नियम दिए जा रहे हैं।

पुलिंग शब्दों के वचन परिवर्तन

नियम -1 : आकारांत पुलिंग शब्द बहुवचन में एकारांत हो जाते हैं, जैसे –

बच्चा - बच्चे

लड़का - लड़के

घोड़ - घोड़ेकेला - केले

पंखा - पंखे

संतरा - संतरे

नोट : इन शब्दों के साथ विभक्ति या परसर्ग लगाने पर एक वचन में – ए और बहुवचन में – ओं लगता है, जैसे – बच्चे का – बच्चों का

नियम - 2 : पुंलिंग के अन्य सभी शब्दों का कोई परिवर्तन नहीं होता । दोनों वचनों में एक ही रूप रहता है; जैसे –

घर – घर

साधु – साधु

मुनि – मुनि

भालू – भालू

भाई – भाई

रेडियो – रेडियो

नोट : इन शब्दों के साथ विभक्ति या परसर्ग लगने से एकवचन में कोई परिवर्तन नहीं होता । बहुवचन में – ओं/यों लगता है; जैसे – घर को – घरों को, मुनि को – मुनियों को, भाई को – भाईयों को, भालू को – भालूओं को आदि ।

नियम - 3 : स्त्रीलिंग अकारांत, आकारांत, उ – ऊ कारांत, औकारांत शब्दों के अंत में – एँ जोड़कर बहुवचन बनाया जाता है; जैसे –

बात – बातें

रात – रातें

गाय – गायें

किताब – किताबें

माता-माताएँ

माला – मालाएँ

ऋतु – ऋतुएँ

लता - लताएँ

बहू – बहुएँ

वस्तु – वस्तुएँ

झाडू – झाडुएँ

गौ – गौएँ ।

नोट : इन शब्दों के साथ विभक्ति या परसर्ग जुड़ने पर बहुवचन में – ओं हो जाता है; जैसे – बात में – बातों में, माला से – मालाओं से, वस्तु की – वस्तुओं की ।

नियम - 4 : स्त्रीलिंग के इकारांत, ईकारांत, याकारांत शब्दों को बहुवचन बनाने के लिए – याँ जोड़ना पड़ता है, जैसे –

जाति – जातियाँ

तिथि - तिथियाँ

रीति – रीतियाँ

नदी - नदियाँ

लड़की – लड़कियाँ

स्त्री – स्त्रियाँ

नोट : (क) ध्यान दीजिए कि ई / ऊ में अंत होनेवाले शब्द बहुवचन में हस्त इ / उ में बदल जाते हैं, जैसे – लड़की – लड़कियाँ, बहू – बहुएँ आदि ।

(ख) इ / ईकारांत शब्दों के साथ विभक्ति या परसर्ग जुड़ने पर बहुवचन में – यों होता है; जैसे – जाति में – जातियों में । लड़की को – लड़कियों को आदि ।

2.8.2.1 स्वमूल्यांकन के प्रश्न :

14. वचन की परिभाषा दीजिए।

15. वचन कितने प्रकार के हैं और वे कौन-कौन से हैं ?

16. बहुवचन रूप लिखिए :

फोड़ा, गुड़िया, गुड़ा, लड्डू, गौ, बात, रीति, बालक, भालू, भाई

17. शुद्ध करके लिखिए :

(i) मोहन और सोहन अच्छा लड़का है।

(ii) मेरे हाथ में दो पपीता हैं।

(iii) ओडिशा में बहुत-सी नदी बहती हैं।

(iv) पाँच बालिका जा रही हैं।

(v) आपका बेटा ने यही कहा।

18. प्रत्येक वाक्य के अंत में मोटे शब्दों के वचन लिखिए :

(i) बच्चे पढ़ रहे हैं। (..... वचन)

(ii) पाँच बालक दौड़ रहे हैं। (..... वचन)

(iii) शिशु खेल रहा है। (..... वचन)

(iv) ये आदेश किसके हैं ? (..... वचन)

(v) ये किताबें नयी हैं। (..... वचन)

19. शब्दों को जोड़िए -

मेरा घर + में, केला + के लिए, तीन भाई + को, शिशु + पर, नदियाँ + से



2.8.3. लिंग

इस इकाई में आप समझ सकेंगे कि

- हिन्दी में केवल दो लिंग होते हैं – पुंलिंग, स्त्रीलिंग
- कुछ प्राणिवाचक शब्द केवल पुंलिंग में और कुछ प्राणिवाचक शब्द केवल स्त्री लिंग में प्रयुक्त होते हैं।
- कुछ अप्राणिवाचक शब्द केवल पुंलिंग में और कुछ अप्राणिवाचक शब्द केवल स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होते हैं।
- वचन परिवर्तन द्वारा लिंग जानना आसान तरीका है।
- कुछ शब्दों में परिवर्तन करके पुंलिंग या स्त्री लिंग रूप बनाये जाते हैं।
- शब्दों में नर या मादा शब्द जोड़कर पुंलिंग और स्त्री लिंग शब्दों को सूचित किया जाता है।

लिंग - परिभाषा और उदाहरण

परिभाषा – लिंग का मतलब है चिह्न। प्राणियों की पुरुष या स्त्री जाति को लिंग से पहचाना जाता है। इसी प्रकार शब्द के जिस रूप से यह पता चले कि वह पुरुष जाति का बोध करता है या स्त्री जाति का – उसे लिंग कहते हैं। अतएव दो लिंग हुए - पुंलिंग और स्त्रीलिंग।

हिन्दी में अप्राणिवाचक शब्दों को भी पुंलिंग और स्त्रीलिंग में विभाजित किया जाता है। इसलिए यह जरूरी है कि शब्द को जानने के साथ उसका लिंग भी जान लें। यह अभ्यास द्वारा आसान होता है।

नीचे कुछ पुंलिंग और स्त्री लिंग शब्द दिए गए हैं। ऐसे अन्य शब्दों के लिंग भी जान लीजिए।

पुंलिंग शब्द :- केला, आलू, पपीता, कान, गाल, हाथ, पैर, रसगुल्ला, पानी, साहस, देश, हृदय, स्वार्थ, काम, बरछा, आक्रमण, संकट, परिवार, मर्यादा, ज्ञान, पर्यटन, मनोरंजन, भवन, मंदिर, बापार, पछताबा, चुक्सान, फूल, पत्ता ।

स्त्रीलिंग शब्द :- बात, नाक, घाल, छुट्टी, सब्जी, चाय, जाति, प्रशंसा, निर्भीकता, आशा, बुद्धि, शक्ति, ग्रसन्नता, आवश्यकता, आँख, चीज, छवि, भुजा, सड़क, राजधानी, आबादी, खेतीबारी, जीत, पहाड़ी, तरंग, दुनिया, मछली, उदारता, प्रगति, खुदाई, मदद ।

अप्राणिवाचक शब्दों के लिंग :- अप्राणिवाचक / नपुंसक शब्दों के लिंग जानने का एक आसान तरीका है— उन्हें वचन के साथ समझाना । नीचे कुछ उपाय बताए गए हैं, इनको आजमाइए :

नियम -1 : जिन अकारांत (जिन शब्दों के अंत में - अ - हो) अप्राणिवाचक संज्ञाओं के रूप एक वचन और बहु वचन में एक-से रहते हैं, वे सब पुंलिंग हैं, जैसे — घर, भवन, खेत, दौत, हाथ, गाल, कान, पवन, खेल, बाजार, नगक, पेड़, आँसू, शरीर, आदि ।

नियम -2 : जिन अकारांत अप्राणिवाचक शब्दों के बहुवचन में – एँ (`)हो जाता है, वे स्त्रीलिंग हैं । जैसे — बात, रात, लात, पुस्तक, किताब, चाल आदि । (बात - बातें)

नियम -3 : जिन आकारांत अप्राणिवाचक शब्दों के बहुवचन रूप एकारांत होते हैं, वे पुंलिंग हैं; जैसे — केला, काँटा, ताला, कपड़ा, तारा, पंखा, मेला, चना, मसाला, आँगूठा, पहिया आदि । (केला - केले)

नियम -4 : जिन आकारांत अप्राणिवाचक भाववाचक संज्ञाओं के एकवचन और बहुवचन में कोई परिवर्तन नहीं होता, वे स्त्रीलिंग हैं, जैसे — दया, माया, कृपा, कल्पना, वेदना, क्षमा, गरिमा, छाया, कृपा, कालिमा, बन्दना, शोभा, ममता, एकता, जनता, आशा, अहिंसा, प्रतीक्षा, लालसा, मित्रता आदि ।

नियम -5 : जिन आकारांत अप्राणिवाचक संज्ञाओं के बहुवचन रूप — आ के स्थान पर — एँ होता है, वे सब स्त्रीलिंग शब्द हैं, जैसे — शाखा, लता, कथा, हवा, दिशा, माला, सभा, कामना, यात्रा, ज्वाला, इच्छा, आशा आदि । (शाखा - शाखाएँ)

नियम -6 : जिन अप्राणिवाचक इ / ईकारांत संज्ञाओं के बहुवचन वाले रूप 'याँ' या 'इयाँ' लगाकर बनते हैं, वे स्त्रीलिंग हैं, जैसे - नदी - नदियाँ, लड़की - लड़कियाँ, लड़ाई - लड़ाइयाँ, पूड़ी - पूड़ियाँ, चींटी - चींटियाँ, मक्खी - मक्खियाँ, नीति - नीतियाँ, जाति - जातियाँ, पकौड़ी - पकौड़ियाँ, गली - गलियाँ, मिठाई - मिठाइयाँ, चिट्ठी - चिट्ठियाँ ।
ध्यान दें कि इनके बहुवचन रूप में ई → इ हो जाती है ।

नियम -7 : जिन इ - ई में अंत होने वाले शब्दों बहुवचन में कोई परिवर्तन नहीं होता, वे पुंलिंग हैं, जैसे - मोती - मोती, पानी - पानी, पक्षी - पक्षी, धी - धी, गिरि - गिरि, जलधि - जलधि, जी - जी आदि ।

नियम -8 : क्रियार्थक संज्ञाएँ पुंलिंग में आती हैं, जैसे - पढ़ना, खाना, पीना, सोना, समझना आदि ।
इन वाक्यों को देखिए : रोज पढ़ना अच्छा अभ्यास है ।

आपको यह समझना चाहिए ।

यह खाना अच्छा नहीं था ।

नियम -9 : भाव वाचक संज्ञाएँ जो क्रियार्थक संज्ञाओं से बनती हैं, वे सब स्त्रीलिंग हैं, जैसे -

चमकना (पुं) → चमक (स्त्री.), दौड़ना (पुं) → दौड़ (स्त्री.)

देना (पुं) → देन (स्त्री.), खोजना (पुं) → खोज (स्त्री.)

इन वाक्यों को देखिए : सूर्य की चमक आँखों को लगती है ।

उन्होंने लंबी दौड़ लगाई ।

उनकी खोज से यह बात निकली ।

अन्य उपाय :

ऐसे अनेक दूसरे तरीके भी हैं; इन्हें देखिए :

→ शरीर के कुछ अंग स्त्रीलिंग हैं तो कुछ पुंलिंग हैं, जैसे -

स्त्रीलिंग : जीभ, नाक, पीठ, चोटी, उँगली, गर्दन ।

पुंलिंग : बाल, कान, पेट, मुँह, दाँत, होंठ, पाँव, कंधा ।

- कुछ खाने-पीने की चीजें स्त्रीलिंग हैं तो कुछ पुंलिंग, जैसे -
स्त्रीलिंग : रोटी, जलेबी, पूँड़ी, सब्जी ।
पुंलिंग : भात, लड्डू, मालपूआ ।
- कुछ प्राणिवाचक शब्द सदा पुंलिंग हैं तो दूसरे सदा स्त्रीलिंग, जैसे -
स्त्रीलिंग : चिड़िया, चींटी, मछली, छिपकली, मक्खी ।
पुंलिंग : खरगोश, पक्षी, खटमल, चीता, मच्छर, बिच्छू ।

निर्देश : इसलिए आप जो शब्द जानते हैं, उनके लिंग भी जान लीजिए । क्योंकि हिन्दी में संज्ञा के लिंग के अनुसार क्रिया बनती है, जैसे - लड़का जाता है । लड़की जाती है ।
हवा बहती है । पवन बहता है ।
किताब छोटी है । ग्रंथ बड़ा है ।
मेघ गरजता है । बिजली चमकती है ।
राम वन में गए तो सीता भी उनके साथ गयी ।

क्रिया, विशेषण, कर्म और संबंध कारक से लिंग की जानकारी :

- क्रिया से कर्ता का लिंग जाना जा सकता है, जैसे -
पानी बहता है । लड्डू बनेगा । नदी बहती है । जलेबी बनेगी ।
- विशेषण से भी कर्ता का लिंग पहचाना जा सकता है; जैसे -
अच्छा लड़का - अच्छी लड़की
ठंडी चाय - ठंडा पानी, आदि ।
- कर्म से भी कर्ता का लिंग पहचाना जा सकता है; जैसे -
राम ने फल खाया । राम ने रोटी खाई ।
- संबंध कारक से भी कर्ता का लिंग पहचाना जा सकता है; जैसे -
रमेश की बहन, रमेश का भाई, रमेश के खिलौने । आदि ।
अभ्यास द्वारा हिन्दी शब्दों का लिंग-ज्ञान आसान होगा ।

पुंलिंग से स्त्रीलिंग बनाने के कुछ नियम -

पुंलिंग शब्दों के साथ कुछ प्रत्यय या शब्दांश जोड़कर -

- (i) आ → गायक - गायिका
- (ii) ई → नट - नटी, घोड़ा - घोड़ी
- (iii) नी → मोर - मोरनी
- (iv) इन → साँप - साँपिन
- (v) आनी → नौकर - नौकरानी
- (vi) आइन → लाल - ललाइन

- कुछ पुंलिंग शब्द ऐसे हैं, जिनके स्त्रीलिंग रूप भिन्न होते हैं । जैसे -

पुंलिंग	स्त्रीलिंग	पुंलिंग	स्त्रीलिंग
पिता	माता	कवि	कवयित्री
राजा	रानी	वर	वधू
बैल	गाय	ससुर	सास
नर	नारी	युवक	युवती

- कुछ शब्दों में नर/मादा जोड़कर लिंग स्पष्ट किया जाता है । जैसे -

नर कौआ, मादा कौआ, नर कोयल, मादा कोयल

2.8.3.1 स्वमूल्यांकन के प्रश्न :

20. लिंग किसे कहते हैं ?
21. लिंग कितने प्रकार के हैं ? वे कौन-कौन से हैं ?
22. इनके स्त्री लिंग रूप लिखिए :

नर, युवक, बैल, वर, राजा

23. नीचे लिखे शब्दों के लिंग बताइए :

स्कूटर, कोयल, चिड़िया, महल, उँगली, कंधा, पीठ, आँख, चींटी, रसमलाई

24. निम्नलिखित वाक्यों के रेखांकित शब्दों का लिंग परिवर्तन करके रिक्त स्थानों को भरिए -

- (i) नर और _____ आ रहे हैं ।
- (ii) सम्मेलन कक्ष में कवि और _____ पहुँचे ।
- (iii) युवक गया और एक _____ भी ।
- (iv) मोर नाच रहा है, पर _____ उसे देख रही है ।
- (v) उसके ससुर और _____ कल आएंगे ।

25. नीचे लिखे वाक्यों को पुंलिंग में बदल कर लिखिए -

- (i) रानी बैठी हैं ।
- (ii) गाय चरती है ।
- (iii) नौकरानी सो गयी ।
- (iv) कवयित्री लिखती है ।
- (v) बालिका पढ़ती है ।

26. कोष्ठक में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए -

- (i) मछली _____ है । (तैरती, तैरता)
- (ii) स्कूटर गिर _____ । (पड़ा, पड़ी)
- (iii) गिलहरी भाग _____ । (गया, गई)
- (iv) उसने गर्दन _____ । (घुमाया, घुमाई)
- (v) _____ पीठ में दर्द है । (मेरे, मेरी)

2.8.4. कारक

इस इकाई में आप समझ सकेंगे कि

- कारकों की परिभाषा, वाक्य में उनके स्थान और प्रकार्य आदि से परिचित होंगे ।
- परसर्गों का उचित प्रयोग सीख जाएँगे ।

कारक का अर्थ है - करनेवाला । कारक कोई कार्य करता है । कारक का संबंध मुख्य रूप

से क्रिया से होता है । इस संबंध के अंतर्गत कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान और अधिकरण कारक आते हैं । इसके अलावा कुछ कारकों का क्रिया से सीधा संबंध नहीं रहता । इनका दूसरे कारकों से संबंध रहता है । ऐसे कारक हैं - संबंध कारक और संबोधन कारक ।

शब्द परसर्ग युक्त होने से कारक बनता है । जहाँ परसर्ग नहीं जुड़ता, वहाँ \emptyset शून्य परसर्ग माना जाता है । परसर्गों की सहायता के बिना कारकों की अभिव्यक्ति नहीं हो सकती । परसर्ग अकेले में अर्थहीन हैं, पर शब्द के साथ आकर अर्थवान होते हैं और विभिन्न व्याकरणिक संबंध व्यक्त करते हैं । एक परसर्ग कई कारकों में आ सकता है, उसी प्रकार एक कारक में कई परसर्ग आ सकते हैं ।

वाक्य के क्रियापद के साथ अन्य पदों का संबंध अथवा पदों का पारस्परिक संबंध कारक कहलाता है । इस संबंध को पहचानने के लिए जो चिह्न लगते हैं, उनको विभक्ति या परसर्ग कहा जाता है ।

कितने कारक हैं ?

हिन्दी में आठ कारक माने जाते हैं । नीचे सभी कारकों और उनकी विभक्तियों/परसर्गों की तालिका दी जा रही है :

१ कर्ता \emptyset , ने, से

२ कर्म \emptyset , को, से

- ३ सरणी रो, द्वारा, के द्वारा
- ४ सप्ततम तो, के लिए
- ५ अग्रवान् रो
- ६ राज्य का, को, की, रा, रे, री, गा, गे, गी
- ७ अधिकारण गे, पर
- ८ संबोधन ते, तरे, तारी, औ आदि

१. कर्ताकारक : काम करने वाले को कर्ता कारक कहते हैं।

श्रीला पुरतक पढ़ती है।

श्रीला ने पुरतक पढ़ी।

राम रो तौड़ा नहीं जाएगा।

महां श्रीला पढ़ो का काम करती है। वह कर्ता कारक है। मथग वान्य में कोई विभवित या परराग नहीं जुड़ा है। द्वितीय वान्य में 'ने' परराग जुड़ा है, तीसरे वान्य में 'रो' है। कर्ता कारक के परराग हैं- शूल, फ, ने, और रो।

२. कर्म कारक : जिस पर क्रिया-व्यापार का फल या प्रभाव पड़ता है, वह कर्मकारक है।

रीता किताब खरीदी।

रीता ने गीता को बुलाया।

उसने गोहन रो पूछा।

यहाँ खरीदी जाने वाली तरतु है - किताब। बुलाई जाने वाली लड़की है - गीता। पूछा जाने वाला है गोहन। 'किताब', 'गीता को' और 'गोहन रो' कर्मकारक में हैं। पर किताब के साथ कोई परराग नहीं जुड़ा है। गीता के साथ 'को' परराग जुड़ा है। गोहन के साथ 'रो' परराग जुड़ा है। इस कारक के परराग हैं- फ, तो, रो।

३. करण कारक : जिस राज्य रो क्रिया का साधन, कारण, रीति आदि का नोच होता है, वह करण कारक है।

मैं कलम से लिखता हूँ ।

वह हैजे से मर गया ।

आप के द्वारा यह काम हो पाएगा ।

लिखने का साधन है – कलम से

मरने का कारण है – हैजे से ।

कलम से, हैजे से करण कारक में हैं । इस कारक के परसर्ग हैं – से, के द्वारा ।

4. संप्रदान कारक : जिसके लिए कुछ काम किया जाए या जिसे कुछ दिया जाए, वह संप्रदान कारक है ।

पिताजी बेटी के लिए खिलौना लाए ।

मैंने मोहन को सौ रुपये दिए ।

यहाँ बेटी के लिए, मोहन को संप्रदान कारक में हैं । इस कारक के परसर्ग हैं - को, के लिए ।

5. अपादान कारक : जिससे कोई वस्तु अलग हो, उसे अपादान कारक कहते हैं ।

पेड़ से पत्ता गिरा ।

गंगा हिमालय से निकली है ।

यहाँ पेड़ से, हिमालय से अपादान कारक में हैं । इस कारक का परसर्ग है - से ।

6. संबंध कारक : क्रिया से भिन्न, दूसरे शब्द के साथ संबंध प्रकट करने वाले पद को संबंध कारक कहते हैं ।

वह राम का लड़का है ।

वह राम की लड़की है ।

वे राम के लड़के हैं ।

उसी प्रकार- मेरा लड़का, मेरी लड़की, मेरे लड़के, अपना देश, अपनी बात, अपने बेटे । इस कारक के परसर्ग हैं – का, की, के, रा, री, रे, ना, नी, ने ।

7. अधिकारण कारक : वरतु के आधार की अधिकारण कारक कहते हैं।

बन्दर छत पर बैठा है।

गिलास में पानी है।

छत पर, गिलास में अधिकारण कारक में है।

इस कारक के पद्धति हैं - पर, में।

8. संबोधन कारक : जिसे पुकारा या बुलाया जाए, उसे संबोधन कारक कहते हैं।

जैरी - अपि लीला । हे गग्नान । ओ लङ्के ! भाइयो और बहनो !

इस कारक में शब्द के पाण, आपि, हे, ओ आदि जुड़ते हैं।

आइए, इन रूपों को 'बालक' शब्द में देखें :

'बालक' शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	बालक, बालक मैं	बालक, बालकों ने
कर्म	बालक को	बालकों को
करण	बालक से	बालकों से
प्रपत्तन	बालक को, के लिए	बालकों को, के लिए
उपायन	बालक से	बालकों से
पर्याप्त	बालक का, के, की	बालकों का, के, की
अधिकारण	बालक में, बालक पर	बालकों में, बालकों पर
प्रश्नायन	हे बालक	हे बालकों

‘बालिका’ शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	बालिका, बालिका ने	बालिकाएँ, बालिकाओं ने
कर्म	बालिका को	बालिकाओं को
करण	बालिका से	बालिकाओं से
संप्रदान	बालिका को, के लिए	बालिकाओं को, के लिए
उपादान	बालिका से	बालिकाओं से
संबंध	बालिका का, के, की	बालिकाओं / का, के, की
अधिकरण	बालिका में, पर	बालिकाओं में / पर
संबोधन	हे बालिका	बालिकाओं

2.8.4.1. स्वमूल्यांकन के प्रश्न

27. कारक किसे कहते हैं ? इसके कितने भेद हैं ?
28. ‘से’ परसर्ग किस किस कारक में आता है ?
29. ‘लेखक’ शब्द का सब कारकों में रूप लिखिए ।
30. ‘लेखिका’ शब्द का सब कारकों में रूप लिखिए ।
31. जो वाक्य शुद्ध हैं उनेक सामने (✓) चिह्न और जो अशुद्ध हैं अनेक सामने (✗) चिह्न लगाइए -
 - (i) कारक आठ हैं ।
 - (ii) पुकारने के लिए संबोधन कारक का प्रयोग होता है ।
 - (iii) ‘का’ संप्रदान कारक का परसर्ग है ।

(iv) 'से' का प्रयोग अपादान कारक में होता है।

(v) 'पर' का प्रयोग अधिकरण कारक में होता है।

32. निम्नलिखित वाक्यों में से कर्ता कारक चुनिए -

(i) मदन रोज स्कूल जाता है।

(ii) माँ खीर बनाती है।

(iii) बच्चे ने केला खाया।

(iv) रोगी से उठा नहीं जाता।

(v) अध्यापिका इतिहास पढ़ाएँगी।

33. निम्नलिखित वाक्यों में से कर्मकारक छाँटिए -

(i) वह घोड़ा खरीदेगा।

(ii) गोपाल ने आम खाया।

(iii) राधा ने कलम खो दी।

(iv) मैं इतिहास पढ़ूँगी।

(v) कमल रामू को बुला रहा है।

34. निम्नलिखित वाक्यों के रेखांकित शब्दों के कारक बताइए -

(i) राजू घर से निकला।

(ii) बीजू की बहन छत पर बैठी है।

(iii) वह चाकू से फल काटता है।

(iv) मैंने मोहन को पाँच रुपए दिए।

(v) हे बच्चे ! तुम क्यों रो रहे हो ?

35. कोष्ठक में से परस्र्ग चुनकर रिक्त स्थान भरिए -

(से, पर, ने, की, में)

- (i) हम _____ खाना खा लिया ।
- (ii) चहे साइकिल _____ आया ।
- (iii) बक्से _____ साड़ी है ।
- (iv) भेज _____ कागज है ।
- (v) दिल्ली भारत _____ राजधानी है ।

36. नीचे लिखे वाक्यों को उदाहरण के अनुसार बदलिए-

उदाहरण : मधु पपीता खाएगी ।

मधु ने पपीता खाया ।

- (i) तुम नाटक देखोगे ।
- (ii) कमला पत्र लिखेगी ।
- (iii) संतोष दूध पिएगा ।
- (iv) छात्र इतिहास पढ़ेगा ।
- (v) चोर ताला तोड़ेगा ।

37. निम्नलिखित वाक्तों के खाली स्थानों को कोष्ठक में दिए गए उपयुक्त परस्र्गों से कीजिए -

- (i) अतिथि _____ प्रणाम करो । (को, ने)
- (ii) आपने मुझ _____ पूछा । (के, से)
- (iii) भेज _____ कलम है । (पर, में)
- (iv) लता _____ रोटी खाई । (ने, को)
- (v) बंदर ऊत _____ कूदा । (में, से)

2.8.5. सर्वनाम

इस इकाई में आप समझ सकेंगे कि

- सर्वनाम किसे कहते हैं – यह जान सकेंगे ।
- सर्वनामों के भेदों को जान सकेंगे ।
- वाक्यों में सर्वनामों का उचित प्रयोग कर सकेंगे ।

सर्वनाम की परिभाषा और उसके भेद –

जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त हो, उसे सर्वनाम कहते हैं ।

सर्वनाम के छह भेद होते हैं –

1. पुरुषवाचक सर्वनाम - मैं – हम, तू – तुम, आप, यह – ये, वह – वे
2. निश्चयवाचक सर्वनाम – यह, ये, वह, वे
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम – कोई, कुछ
4. संबंधवाचक सर्वनाम – जो - सो/वह
5. प्रश्नवाचक सर्वनाम – कौन, क्या
6. निजवाचक सर्वनाम - आप, स्वयं, खुद, अपने आप

परसर्ग के साथ आने पर परिवर्तित रूप – मुझे, मुझको, मेरा, हमें, हमारा, तुझे, तुझको, तेरा, तुम्हें, तुमको, तुम्हारा, इसने, इसे, इन्होंने, इन्हें, उसने, उसे, उन्होंने, उन्हें जिसने, जिसे, जिन्हें, जिसका, जिन में ।

2.8.5.1.

38. सर्वनाम किसे कहते हैं ?
39. सर्वनामों के भेदों का परिचय दीजिए ।
40. निम्नलिखित वाक्यों में से सर्वनामों को छाँटिए-
 - (i) तुम तो महान कलाकार हो ।
 - (ii) मैं रोज तुम्हें यह कहता रहता हूँ ।
 - (iii) आप स्वयं इस पर विचार करें ।
 - (iv) जो जागता है, वह पाता है ।
 - (v) वे सज्जन हैं, इसलिए तुम मनमाना करते हो ।
 - (vi) सही बात वह अवश्य मान लेगा ।
 - (vii) कौन वहाँ पढ़ रहा है ?
 - (viii) तुमने भोज में क्या खाया ?
 - (ix) कोई खाए या न खाए, तुम कुछ खा लो ।
 - (x) यह मेरी बहन है, वह तुम्हारी बहन है ।

2.8.6. विशेषण

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप –

- वाक्य में विशेषणों के प्रकार्य को समझ सकेंगे ।
- विशेषण के भेदों को जान सकेंगे ।
- विशेषण – विशेष्य का संयोग कर सकेंगे ।
- वाक्यों में विशेषणों के रूप-परिवर्तन को समझ सकेंगे ।

विशेषण की परिभाषा और भेद

संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बनाने वाले पद को विशेषण कहते हैं । विशेषण आकारांत पुलिंग शब्द होने पर वह परवर्ती संज्ञा के लिंग, वचन के अनुसार परिवर्तित होगा । जैसे – अच्छा लड़का, अच्छी लड़की, अच्छे लड़के ।

विशेषण के चार भेद होते हैं :

1. गुणवाचक विशेषण

2. संख्यावाचक विशेषण

3. परिमाणवाचक विशेषण

4. सार्वनामिक विशेषण

गुणवाचक विशेषण

गुणवाचक विशेषण संज्ञा या सर्वनाम के रूप-रंग, अवस्था, आकार-प्रकार, गुण, दोष इत्यादि की सूचित करते हैं। जैसे -

गुणवाचक विशेषण	विशेष्य (संज्ञा)	गुणवाचक विशेषण	विशेष्य (संज्ञा)
काला	घोड़ा	मासिक	पत्रिका
लंबी	छड़ी	मीठा	फल
बड़ा	शहर	सही	बात
ऊँची	इमारत	क्षेत्रीय	भाषा
पुराना	कपड़ा	साफ	पानी
टेढ़ी	छड़ी	मेहनती	किसान

संख्यावाचक विशेषण

संख्यावाचक विशेषण संज्ञा की संख्या बताते हैं। जैसे -

संख्यावाचक विशेषण	विशेष्य (संज्ञा)	संख्यावाचक विशेषण	विशेष्य (संज्ञा)
चार	बालक	थोड़े	आम
दूसरा	लड़का	अनेक	बातें
पहली	गाड़ी	कुछ	बच्चे
तीनों	काम	सभी	विद्यार्थी

परिमाणवाचक विशेषण

परिमाणवाचक विशेषण संज्ञा की मात्रा (नाप-तौल) व्यक्त करते हैं। जैसे -

परिमाणवाचक विशेषण	विशेष्य (संज्ञा)	परिमाणवाचक विशेषण	विशेष्य (संज्ञा)
दो किलोग्राम	चीनी	थोड़ा-सा	दूध
पाँच लिटर	दूध	बहुत	घी
तीन मीटर	कपड़ा	अधिक	गेहूँ
आधा लिटर	तेल	ज्यादा	चावल

सार्वनामिक विशेषण

सार्वनामिक विशेषण संज्ञा शब्द के पहले आकर उसकी विशेषता बताते हैं । जैसे –

सार्वनामिक विशेषण	विशेष्य (संज्ञा)	सार्वनामिक विशेषण	विशेष्य (संज्ञा)
यह	पुस्तक	उस	बच्चे का
वह	लड़का	कुछ	बात
ऐसी	बात	कौन	लड़का
जो	आदमी	अपने	कमरे
अपनी	बात	उसका	भाई

2.8.6.1. स्वमूल्यांकन के प्रश्न

41. विशेषण किसे कहते हैं ?

42. इसके भेदों को सोदाहरण बताइए ।

43. नीचे लिखे वाक्यों में से विशेषण शब्दों को छाँटिए –

(i) बूढ़ा आदमी गड्ढ़ा खोद रहा था ।

(ii) हमने पाँच केले खाए ।

(iii) लीला मेरी बहन है ।

(iv) वह छड़ी कहाँ है ?

(v) थोड़ी-सी चाय पी लीजिए ।

(vi) ज्यादा बात मत करो ।

(vii) इस लड़की ने किताब खरीदी ।

(viii) तुम दो मीटर कपड़ा खरीदो ।

(ix) मेले में बहुत लोग आए थे ।

(x) काला घोड़ा दौड़ रहा है ।

44. 'क' स्तंभ के विशेषणों के साथ 'ख' स्तंभ के विशेषणों (संज्ञाओं) का मिलान कीजिए

'क'

'ख'

साहसी

पर्वत

सर्वोच्च

कर्तव्य

दृढ़

शक्ति

गुप्त

व्यक्ति

अपना

चरित्र



2.8.7. क्रिया

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप—

- क्रिया -पदों का निर्माण कर सकेंगे ।
- अकर्मक क्रिया और सकर्मक क्रिया का अंतर समझ सकेंगे ।
- समय के प्रभाव से क्रिया में होनेवाले रूपांतर को समझ सकेंगे ।
- भूतकाल, वर्तमान काल और भविष्यत् काल में वाक्य-निर्माण कर सकेंगे ।

क्रिया की परिभाषा और भेद

जिस शब्द से किसी काम का करना या होना प्रकट हो, उसे क्रिया कहते हैं ।

जैसे — मधु दौड़ती है ।

चिड़िया उड़ती है ।

रानी ने खाना खा लिया ।

तुम कब पढ़ोगे ?

इन वाक्यों में रेखांकित पद क्रियाएँ हैं ।

इन क्रियाओं के सामान्य रूप हैं— दौड़ना, उड़ना, खाना, लेना, पढ़ना ।

इनमें से 'ना' हटा देने से क्रिया का मूल रूप दिखाई देता है । क्रिया के मूल रूप को 'धातु' कहते हैं ।

वाक्यों में कर्म के होने या न होने की दृष्टि से क्रिया के दो प्रकार हैं —

(1) अकर्मक क्रिया

(2) सकर्मक क्रिया

अकर्मक क्रिया :

जो क्रिया कर्म की अपेक्षा नहीं रखती, वह अकर्मक क्रिया है। अकर्मक क्रिया के वाक्य कर्म के आने की संभावना नहीं रहती।

घोड़ा दौड़ता है ।

मछली पानी में तैरती है ।

लड़की आती है ।

इन वाक्यों में दौड़ना, तैरना, आना क्रियाएँ अकर्मक हैं।

अकर्मक क्रिया की पहचान :

कर्ता और क्रिया के बीच 'क्या' या 'किसको' जोड़कर यदि प्रश्न पूछा जाए, और कोई जलन मिले, तो ऐसी क्रिया अकर्मक है ।

जाना, उड़ना, कूदना, भागना, सोना आदि अकर्मक क्रियाएँ हैं।

सकर्मक क्रिया :

वाक्य में प्रयुक्त क्रिया का फल जिस पर पड़ता है, वह कर्म है। कर्म के साथ आने वाले क्रिया को सकर्मिक क्रिया कहते हैं।

वाक्य में कर्म हो, या न हो, सकर्मक क्रिया के प्रयोग से उसकी संभावना अवश्य रहती है।

मैं रोटी खाऊँगी । (रोटी कर्म है ।)

रमेश इतिहास पढ़ रहा है । (इतिहास कर्म है ।)

गोपाल ने श्याम को लिखा ।

(‘श्याम को’ प्राणिवाचक कर्म है। ‘पत्र’ अप्राणिवाचक कर्म की संभावना भी है

सकर्मक क्रिया की पहचान :

इन क्रियाओं में खाना, पढ़ना, लिखना आदि सकर्मक क्रियाएँ हैं। कर्ता और क्रिया के बीच 'क्या' या 'किसको' जोड़कर यदि प्रश्न पूछा जाए, और उत्तर मिले या उत्तर मिलने की संभावना रहे, तो ऐसी क्रिया सकर्मक है।

काल

कार्य के समय का बोध करने के लिए क्रिया में होने वाले परिवर्तन को काल कहते हैं।

काल तीन प्रकार के हैं :

- (1) भूतकाल - इससे बीते हुए समय में कार्य के होने का बोध होता है।

जैसे - रघु गया।

राधा आयी।

मोहन ने खाया।

कुसुम पढ़ रही थी।

माधव पढ़ता था।

- (2) वर्तमान काल - इससे वर्तमान समय में कार्य के होने का बोध होता है।

जैसे - हम पाठ पढ़ते हैं।

वह शिक्षक है।

लड़के खेल रहे हैं।

माँ खाना पकाती है।

- (3) भविष्यत काल - इससे आनेवाले समय में या भविष्य में कार्य के होने का बोध होता है।

जैसे - लड़की नाचेगी।

मालती कटक जाएगी।

बच्चे खेलेंगे।

2.8.7.1. स्वमूल्यांकन के प्रश्न :

45. क्रिया किसे कहते हैं ।
46. धातु किसे कहते हैं ।
47. निम्नलिखित क्रियाओं में से अकर्मक और सकर्मक क्रियाओं को अलग अलग छँटा
पढ़ना, जाना, लौटना, खाना, भागना, लिखना, देखना, रोना, आना, देना, लेना, पाना, करना,
दौड़ना, छोड़ना, उतरना, चढ़ना, धोना, सोना, बैठना, हिलना, खड़ा होना ।
48. निम्नलिखित वाक्यों में से भूत, वर्तमान और भविष्यत् काल को अलग-अलग कीजिए।
- (i) वीर देश के लिए लड़ते हैं ।
 - (ii) हम कायर नहीं हैं ।
 - (iii) मैं परिश्रम करूँगा ।
 - (iv) गाड़ी तेज़ चलती है ।
 - (v) उसने दो केले खाए ।
 - (vi) ममता गीत गा रही थी ।
 - (vii) हम कामयाब होंगे ।
 - (viii) पिताजी कल यहाँ पहुँचेंगे ।
 - (ix) कौन रोया ?
 - (x) वह कल क्यों रोती थी ?

2.9. इस इकाई से आपने जो सीखा :

2.7.2.

- वर्णमाला से परिचित हुए ।
- संयुक्त व्यंजन-वर्णों के रूप लिखने का तरीका सीखा ।
- वर्ण संयोजन सीखा ।
- हिन्दी और ओड़िआ भाषा में ध्वनिगत अंतर को पहचाना ।
- सही उच्चारण करने का तरीका सीखा ।
- मानक वर्णों से और मानक वर्तनी से परिचित हुए ।
- ड, ढ और ड़, ढ़ के प्रयोगों को सीखा ।
- अनुस्वार, अनुनासिकता और नासिक्य व्यंजन के प्रयोगों के नियमों से परिचित हुए ।

2.8.1.2

- इस इकाई से आपने जो सीखा –
- किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, स्थिति, गुण या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं ।
- संज्ञाएँ पाँच प्रकार की होती हैं : व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, द्रव्यवाचक संज्ञा, समूहवाचक संज्ञा और भाववाचक संज्ञा ।
- भाववाचक संज्ञाएँ –
 - (i) मूल शब्द भी होते हैं ।
 - (ii) प्रत्यय लगाकर नए शब्द बनाए भी जाते हैं ।

2.8.2.2.

- शब्द के जिस रूप से यह पता चलता है कि वह एक को बताता है या अनेक को, उसे वचन कहते हैं। वचन दो प्रकार के हैं। वे हैं - एक वचन और बहुवचन। एक वचन से एक का और बहुवचन से एक से अधिक का बोध होता है।
- एक वचन का शब्द बहुवचन में परिवर्तित होते समय लिंग और शब्दांत मात्रा के आधार पर कुछ परिवर्तन होता है।
- आकारांत पुलिंग शब्द बहुवचन में एकारांत होता है।
- अन्य मात्रा में अंत होने वाले पुलिंग शब्द दोनों वचनों में समान-समान रहते हैं। इ/ई मात्रातः स्त्री लिंग शब्द के बहुवचन में 'याँ' जुड़ता है। अन्य मात्रा के स्त्री लिंग शब्द के बहुवचनों में 'एँ' जुड़ता है।

2.8.3.2.

- शब्द के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि वह पुरुष जाति का है या स्त्री जाति का, उसे लिंग कहते हैं।
- लिंग दो हैं - पुंलिंग और स्त्रीलिंग
- शब्द प्राणिवाचक हो या अप्राणिवाचक, वे या तो पुंलिंग में होते हैं, या स्त्री लिंग में।
- वचन-परिवर्तन द्वारा लिंग पहचानना एक आसान तरीका है।
- कुछ प्राणिवाचक शब्द सदा पुंलिंग में आते हैं, तो कुछ प्राणिवाचक शब्द सदा स्त्रीलिंग में आते हैं।
- कुछ अप्राणिवाचक शब्द सदा पुंलिंग में आते हैं, तो कुछ अप्राणिवाचक शब्द सदा स्त्रीलिंग में आते हैं।
- कुछ पुंलिंग शब्दों में प्रत्यय जोड़कर स्त्रीलिंग शब्द बनाये जाते हैं।
- कुछ शब्दों में नर या मादा जोड़कर पुंलिंग या स्त्रीलिंग को सुनिश्चित किया जाता है।

2.8.4.2.

- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य के अन्य शब्दों के साथ उसका संबंध सूचित हो, उसे कारक कहते हैं।
- कारकों की अभिव्यक्ति कारक चिन्हों या परसर्गों से होती है।
- जहाँ परसर्ग नहीं होता, वहाँ शून्य परसर्ग माना जाता है।
- कारक आठ हैं – कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, संबंध, अधिकरण और संबोधन।
- भिन्न-भिन्न कारकों में भिन्न-भिन्न परसर्ग आते हैं। एक कारक में अनेक परसर्ग हो सकते हैं और एक परसर्ग अनेक कारकों में आ सकता है।
- पद के प्रकार्य के अनुसार उचित परसर्ग का प्रयोग जान गये।
- फ़, ने, को, से, के द्वारा, के लिए, का, की, के, रा, री, रे, ना, नी, ने, पर, में, अजी, अरी, री, हे, ओ आदि का शुद्ध प्रयोग सीखा।

2.8.5.2.

- संज्ञा के बदले जो शब्द प्रयुक्त होता है, उसे सर्वनाम कहते हैं।
- सर्वनाम के छह भेद हैं।
ये हैं – पुरुषवाचक सर्वनाम, निश्चयवाचक सर्वनाम, अनिश्चयवाचक सर्वनाम, संबंधवाचक सर्वनाम, प्रश्नवाचक सर्वनाम, निजवाचक सर्वनाम

2.8.6.2.

- संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बनाने वाले शब्द को विशेषण कहते हैं।
- विशेषण आकरंत पुंलिग शब्द होने पर वह परवर्ती संज्ञा के लिंग, वचन के अनुसार परिवर्तित होगा।
- विशेषण के चार भेद होते हैं :
गुणवाचक विशेषण, संख्यावाचक विशेषण, परिमाणवाचक विशेषण और सार्वनामिक विशेषण
- सर्वनाम संज्ञा शब्द के पहले आकर सार्वनामिक विशेषण कहलाता है।

2.8.7.2.

- क्रिया और धातु-रूप से परिचित हुए ।
- अकर्मक और सकर्मक क्रिया पहचानने में समर्थ हुए ।
- काल के प्रकारों से परिचित हुए ।
- वाक्य-निर्माण में समर्थ हुए ।

2.10. स्वमूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर

2.7.3.

1. (i) ण, (ii) बुद्धि, (iii) क्ष
2. (i) झ, (ii) नव, (iii) बहन (iv) रि
3. (i) शब्दों के बीच में
(ii) शब्दों के अंत में
4. (i) नासिक्य व्यंजन के साथ अन्य वर्ग का नासिक्य व्यंजन आने से
(ii) द्वित्व रूप में नासिक्य व्यंजन आने से

2.8.1.3

5. (i) भुवनेश्वर, ओडिशा – व्यक्तिवाचक संज्ञा
राजधानी – जातिवाचक संज्ञा
(ii) गंगा, हिमालय – व्यक्तिवाचक संज्ञा
नदी -जातिवाचक संज्ञा
(iii) मदन – व्यक्तिवाचक संज्ञा
दुकान – जातिवाचक संज्ञा

(iv) पुलिस, चोर – जातिवाचक संज्ञा

भीड़ - समूहवाचक संज्ञा

(v) गन्ना – द्रव्यवाचक संज्ञा

मिठास – भाववाचक संज्ञा

6. (i) घबराहट (ii) देवत्व (iii) दया (iv) साधुता (v) औचित्य
7. व्यक्तिवाचक संज्ञा – बलांगीर, अमेरिका, चेतक, ऋषिकुल्या, कपिलास, अंजना, रीता
8. (i) घबराहट (ii) बचपन (iii) साधुता (iv) कटाई (v) धमकी
9. सुनीता – लड़की
कोलकाता – नगर
विनोद – बालक
यमुना – नदी
भारत – देश
10. सजावट, बुढ़ापा, लड़कपन, गुरुत्व, मित्रता, खटास, झगड़ा, अच्छाई, कटाई, बचपन
11. सोना, लकड़ी, चाँदी, घास, पानी
12. सेना, भीड़, कक्षा, परिवार, झुंड
13. सोना – कर्णफूल, चाँदी – पायल, लकड़ी – कुर्सी, अलुमिनियम – देगची, मिट्टी – मटकी

2.8.2.3

14. शब्द के जिस रूप से यह मालूम होता है कि वह एक को बताता है या अनेक को, उसे वचन कहते हैं।
15. वचन दो प्रकार के हैं – एकवचन तथा बहुवचन
16. फोड़े, गुड़ियाँ, गुड़डे, लड्डू, गौएँ, बातें, रीतियाँ, बालक, भालू, भाई

17. (i) मोहन और सोहन अच्छे लड़के हैं ।

(ii) मेरे हाथ में दो पपीते हैं ।

(iii) ओडिशा में बहुत-सी नदियाँ बहती हैं ।

(iv) पाँच बालिकाएँ जा रही हैं ।

(v) आपके बेटे ने यही कहा ।

18. (i) बहुवचन (ii) बहुवचन, (iii) एकवचन (iv) बहुवचन (v) बहुवचन

19. मेरे घर में, केले के लिए, तीन भाइयोंको, शिशु पर, नदियों से

2.8.3.3.

20. शब्द के जिस रूप से यह पता चलता है कि वह पुरुष जाति का है या स्त्री जाति का, उसेलि कहते हैं ।

21. लिंग दो प्रकार के हैं । वे हैं – पुंलिंग और स्त्रीलिंग ।

22. नारी, युवती, गाय, वधू, रानी

23. स्कूटर-पुं, कोयल - स्त्री, चिड़िया - स्त्री, महल - पुं, उँगली - स्त्री, कंधा - पुं, पीठ - स्त्री आँख -स्त्री, चींटी - स्त्री, रसमलाई - स्त्री

24. (i) नर और नारी आ रहे हैं ।

(ii) सम्मेलन कक्ष में कवि और कवयित्री पहुँचे ।

(iii) युवक गया और एक युवती भी ।

(iv) मोर नाच रहा है, पर मोरनी उसे देख रही है ।

• (v) उसके संसुर और सास कल आएँगे ।

25. (i) राजा बैठे हैं ।

(ii) बैल चरता है ।

(iii) नौकर सो गया ।

(iv) कवि लिखता है ।

(v) बालक पढ़ता है ।

26. (i) तैरती, (ii) पड़ा, (iii) गई, (iv) घुमाई, (v) मेरी

2.8.4.3.

27. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य के अन्य शब्द के साथ उसका संबंध सूचित हो, उसे कारक कहते हैं ।

इसके आठ भेद हैं ।

28. 'से' परसर्ग करण और अपादान कारक में आता है ।

'लेखक' शब्द के रूप

29. एक बचन

बहुबचन

कर्ता लेखक, लेखक ने

लेखक, लेखकों ने

कर्म लेखक को

लेखकों को

करण लेखक से

लेखकों से

संप्रदान लेखक को / के लिए

लेखकों को / के लिए

अपादान लेखक से

लेखकों से

संबंध लेखक का / की / के

लेखकों का / की / के

अधिकरण लेखक में / पर

लेखकों में / पर

संबोधन हे लेखक !

हे लेखको !

‘लेखिका’ शब्द के रूप

30.

एकवचन

कर्ता

लेखिका, लेखिका ने

कर्म

लेखिका को

करण

लेखिका से

संप्रदान

लेखिका को / के लिए

उपादान

लेखिका से

संबंध

लेखिका का, की, के

अधिकरण

लेखिका में / पर

संबोधन

हे लेखिका !

बहुवचन

लेखिकाएँ, लेखिकाओं ने

लेखिकाओं को

लेखिकाओं से

लेखिकाओं को, के लिए

लेखिकाओं से

लेखिकाओं का, की, के

लेखिकाओं में / पर

हे लेखिकाओ !

31. (i) ✓ (ii) ✓ (iii) ✗ (iv) ✓ (v) ✓

32. (i) मदन (ii) माँ (iii) बच्चे ने (iv) रोगी से (v) अध्यापिका

33. (i) घोड़ा (ii) आम (iii) कलम (iv) इतिहास (v) रामू को

34. (i) राजू - कर्ता कारक, घर से - अपादान कारक

(ii) बीजू की - संबंध कारक, छत पर - अधिकरण कारक

(iii) चाकू से - करण कारक, फल - कर्म कारक

(iv) मोहन को - संप्रदान कारक, रूपए - कर्म कारक

(v) हे बच्चे - संबोधन कारक, तुम - कर्ता कारक

35. (i) ने (ii) से (iii) में (iv) पर (v) की

36. (i) तुमने नाटक देखा । (ii) कमला ने पत्र लिखा ।

(iii) संतोष ने दूध पिया । (iv) छात्र ने इतिहास पढ़ा ।

(v) चोर ने ताला तोड़ा ।

37. (i) को (ii) से (iii) पर (iv) ने (v) से

2.8.5.3.

38. जो संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त हो, उसे सर्वनाम कहते हैं ।

39. सर्वनामों के छह भेद हैं । वे हैं—

पुरुषवाचक सर्वनाम

निश्चयवाचक सर्वनाम

अनिश्चयवाचक सर्वनाम

संबंधवाचक सर्वनाम

प्रश्नवाचक सर्वनाम

निजवाचक सर्वनाम

40. (i) तुम (ii) मैं, तुम्हें, यह

(iii) आप, स्वयं, इस (iv) जिसकी, उसकी

(v) वे, तुम (vi) हमारी, वह (vii) — प्रकार की लालच

(viii) कौन (ix) तुमने, क्या

(x) कोई, तुम, कुछ (xi) यह, वह

2.8.6.3.

2.8.7.3.

45. जिस शब्द से किसी काम का करना या होना प्रकट हो, उसे क्रिया कहते हैं।

46. क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं।

47. अकर्मक क्रियाएँ – जाना, लौटना, भागना, रोना, आना, दौड़ना, उतरना, सोना, बैठना, हिलना, खड़ा होना।
सकर्मक क्रियाएँ – पढ़ना, खाना, लिखना, देना, लेना, पाना, करना, छोड़ना, धोना

48. भूतकाल के वाक्य – (iv), (v), (vi), (ix), (x)

वर्तमान काल के वाक्य – (i), (ii)

भविष्यत् काल के वाक्य – (iii), (vii), (viii)

2.11. इकाई की समाप्ति के बाद के प्रश्न

2.7.4. इकाई की समाप्ति के बाद के प्रश्न

1. अनुस्वार का प्रयोग कब होता है ?

2. निम्नलिखित शब्द-युग्मों में से सही / मानक शब्द चुन कर लिखिए –

(i) पवन – पबन

(ii) जमुना – यमुना

(iii) उद्देश्य – उद्देश्य

(iv) ऊंट – ऊँट

(v) टट्ठू – टट्ठू

2.8.1.4. इकाई की समाप्ति के बाद अभ्यास के लिए प्रश्न

1. संज्ञा किसे कहते हैं ? इसके कितने भेद हैं ?

2. व्यक्तिवाचक संज्ञा किसे कहते हैं ? दो उदाहरण दीजिए ।

3. जातिवाचक संज्ञा किसे कहते हैं ? दो उदाहरण दीजिए ।

4. द्रव्यवाचक संज्ञा किसे कहते हैं ? दो उदाहरण दीजिए ।

5. समूहवाचक संज्ञा किसे कहते हैं ? दो उदाहरण दीजिए ।

6. भाववाचक संज्ञा किसे कहते हैं ? पाँच उदाहरण देकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।

2.8.2.4.

निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए –

लड़का, लड़की, भालू, साधु, भाई, रात, बसेरा, माला, रेडियो, पुस्तक, झील, खिड़की, झरोखा, दरवाजा, सजा

2.8.3.4.

1. लिंग की परिभाषा लिखकर बताइए कि हिन्दी में कितने लिंग हैं ?

2. नीचे लिखे शब्दों के लिंग बताइए -

गाय, खिड़की, दरवाजा, खिचड़ी, चावल, साइकिल, रिक्शा,

बाल, कंधा, एड़ी, चिट्ठी, बिच्छू, महल, दीमक, खरगोश ।

2.8.4.4.

1. कारक की परिभाषा लिखिए ।

2. किस कारक में कौन-से परसर्ग आते हैं, लिखिए ।

3. ने, को, से, के लिए, का, की, के, रा, री, रे, ना, नी, ने, में, पर का प्रयोग करके एक-एक वाक्य लिखिए ।

4. अपादान कारक का प्रयोग करके एक वाक्य लिखिए ।

5. उपयुक्त परसर्ग लगाकर वाक्य को अर्थवान कीजिए -

श्रीराम भाई लक्ष्मण पर्शुराम जवाब दिया ।

2.8.5.4.

1. सर्वनाम की परिभाषा बताकर उसके भेदों का उल्लेख कीजिए ।

2. निम्नलिखित सर्वनामों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

मैंने, यह, कुछ, क्या, किसे, अपने आप, कोई, किसी

3. निम्नलिखित वाक्यों में से सर्वनामों को छाँटिए-

(i) रीता ने मुझे कलम दी ।

(ii) क्या खो गया ?

(iii) तुम कुछ खा लो ।

(iv) कौन आ रहा है ?

(v) जो ताकतवर है, वह आगे आ जाए ।

4. रेखांकित सर्वनामों के प्रकार बताइए—

- (i) वह नहीं गया ।
- (ii) तुम कुछ बोलो तो सही ।
- (iii) जिसे चाहो, उसे ले लो ।
- (iv) मैं आप ही चली जाऊँगी ।
- (v) यहाँ कोई आया था ?

5. कोष्ठक में से उपयुक्त सर्वनाम चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(हम, मैं, कुछ, कोई, जिससे)

- (i) _____ बार-बार यही कहता हूँ ।
- (ii) दूध में _____ गिरा है ।
- (iii) _____ बहादुर है ।
- (iv) मैं _____ पूछूँ वही उत्तर दे ।

2.8.6.4.

1. विशेषण किसे कहते हैं ? सोदाहरण लिखिए ।
2. निम्नलिखित शब्दों में से गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाणवाचक और सार्वनामिक विशेषणों को अलग-अलग कीजिए—

सात लिटर, जरा-सी, सफेद, पाँच, बहुत, सम्बलपुरी, अपनी, तिगुनी, पहली, डरपोक, कई, अधूरी, उसका, जो ।

2.8.7.4.

1. कर्म की दृष्टि से क्रिया के कितने प्रकार हैं ? सब के दो-दो उदाहरण दीजिए ।
2. नीचे लिखी क्रियाओं में से कौन-सी सकर्मक है और कौन-सी अकर्मक ?—

मरना, मारना, जाना, खाना, गिरना, गाना, तोड़ना, छोड़ना, रखना, हटना

3. नीचे लिखे प्रत्येक वाक्य के सामने के कोष्ठक में वाक्य के काल का नाम लिखिए।

- (i) अच्छे लड़के हमेशा सच बोलते हैं। (.....)
- (ii) चिड़िया आसमान में उड़ी। (.....)
- (iii) हमारी परीक्षा कल से शुरू होगी। (.....)
- (iv) तुम कब यहाँ आओगे ? (.....)
- (v) उसने कहा। (.....)

2.12. संदर्भ ग्रन्थ सूची

(i) सरल हिन्दी व्याकरण

कक्षा - आठवीं

भाग-1

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, कटक

(ii) सरल हिन्दी व्याकरण

कक्षा-नवीं और दसवीं

भाग-2

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, कटक

■ ■ ■

UNIT - 3

इकाई - 3

अनुवाद

- 3.0 अनुवाद
- 3.1. प्रारंभ
- 3.2. उद्देश्य
- 3.3. संरचना-१ उदाहरण
- 3.3.1. स्वमूल्यांकन के प्रश्न
- 3.4. संरचना-२
- 3.4.1. स्वमूल्यांकन के प्रश्न
- 3.5. संरचना - ३
- 3.5.1. स्वमूल्यांकन के प्रश्न
- 3.6. संरचना - ४
- 3.6.1. स्वमूल्यांकन के प्रश्न
- 3.7. संरचना-५
- 3.7.1. स्वमूल्यांकन के प्रश्न
- 3.8 संरचना - ६
- 3.8.1 स्वमूल्यांकन के प्रश्न
- 3.9. संरचना - ७
- 3.9.1 स्वमूल्यांकन के प्रश्न
- 3.10. इस इकाई से आपने क्या सीखा
- 3.11 स्वमूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर
- 3.12. अभ्यास के लिए प्रश्न
- 3.13. संदर्भ ग्रन्थ



3.0. अनुवाद

3.1. प्रारंभ

अनुवाद का अर्थ है “पीछे-पीछे कहना”। मूल जो लिखा है – उसके पीछे - पीछे किसी दूसरी भाषा में वही बात कह दी जाती है। तराजू की तरह दोनों भाषाओं में वह बात बराबर होनी चाहिए। अर्थ ही नहीं, प्रभाव भी बराबर होना चाहिए। तब हम अनुवाद को ठीक मानते हैं।

आज हमारे जीवन में अनुवाद का महत्व बहुत ज्यादा हो गया है। इसके बिना जीवन कम हो जाता है। आपसी संबंध टूट, कट जाते हैं। देश अलग-थलग पड़ जाते हैं। मेल-जोल, भाईचारे एवं निकट आने के लिए अनुवाद की जरूरत पड़ती है। आज देश में सरकारी कामकाज में अनुवाद की जरूरत बढ़ गई है। दूसरी भाषा के साहित्य, कला, चिंतन को हम कैसे जानेंगे? एक आदमी अपने जीवन में दो-तीन से ज्यादा भाषाएँ नहीं सीख सकता, मगर अनुवाद के जरिए अनेक भाषाओं के महान साहित्य सहज ही घर बैठे जान लेता है। अतः आज दुनिया के हर देश में अनुवाद का महत्व स्वीकार किया गया है। चाहे गीता, कुरान, बाइबल हो, चाहे शेक्सपीयर अथवा टालस्टाय - सब हमारे हो जाते हैं। अनुवाद के जरिए दूरियाँ कम हो जाती हैं।

परंतु यह काम बहुत खतरे का है। इसमें दोनों भाषाएँ जानना जरूरी है। साथ-साथ उनकी संस्कृति, परंपरा और चालचलन भी जानना जरूरी है। एक भाषा के धन लेकर दूसरी भाषा को सौंपना है। अनुवादक की ईनामदारी बड़ी चीज है। उसे न कुछ छोड़ना है और न कुछ जोड़ना। तभी वह अच्छा कहलाएगा, वरना युगों तक गाली खानी पड़ेगी। वैसे तो हम कह देते हैं— सब भाषाएँ बराबर हैं। परन्तु संसार में कोई दो भाषाएँ समान नहीं हो सकतीं। शब्द, मुहावरे, वाक्य- गठन आदि कई स्तर पर भिन्नताएँ होती हैं। इसके अलावा भाषा के गठन का सौन्दर्य होता है। अपने-अपने अर्थ के कारण वह महान बनती है। उसके समान भाषा दूसरे क्षेत्र में ढूँढ पाना बहुत कठिन होता है।

अनौपचारिक रूप से किसी अन्य भाषा को समझना और बोल पाना एक बात है। पर औपचारिक रूप से उसका अध्ययन करना, परिनिष्ठित भाषा में बोलना और लिखना अलग बात है। दूसरी भाषा में कुशलता प्राप्त करने के लिए पहले स्नोत भाषा और लक्ष्य भाषा के व्यवस्थागत अंतर को समझना आवश्यक है।

ओडिआ से हिंदी में अनुवाद करते समय देख लें कि वाक्य लंबे हैं, तो छोटे-छोटे कई वाक्य बना लें। इसमें वचन, लिंग या पुरुष का परिवर्तन न करें। बहुत जरूरी हो, तभी ऐसा कोई

बदलाव करें। वाक्यगठन हिन्दी के अनुसार ही बनाएँ। ओड़िआ की समान अर्थ बताने वाली कहावत या मुहावरे प्रयोग करें। शब्दानुवाद ठीक नहीं है। हिन्दी में विभक्ति प्रयोग (जैसे - ने, से) ध्यान से करें। क्रिया के लिंग प्रयोग में सावधान रहें। एक-वचन बहुवचन का प्रयोग करते समय भी सावधान रहें।

ओड़िआ में अनुवाद करते समय हिन्दी पर ज्यादा निर्भर न करें। ओड़िआ की संस्कृतनिष्ठ शैली से दूर रहें। संबंधवाचक (माँ, बेटी, भाई, काका, नाना आदि) शब्दों के लिए आवश्यक शब्दों और स्नेहातिरेक में व्यवहृत शब्दों का ध्यान रखें। नकारात्मक वाक्य की क्रिया का अंत ओड़िआ ढंग से करें। आदर में क्रिया बहुवचन हो, मगर 'तुम' शब्द के लिए भी उचित ध्यान दें। सरकारी काम-काज में अन्यपुरुष का प्रयोग बेहतर है।

इस प्रकार की दो-चार बातों से भाषाओं की ही नहीं, समाज को करीब लाने, सौहार्द बढ़ाने में अनुवाद सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सेवा है।

3.2. उद्देश्य :

- इस इकाई को पढ़ने के बाद आप ओड़िआ और हिन्दी में सामान्य वर्तमान काल, भूत काल एवं भविष्यत् काल के वाक्यों का अनुवाद कर सकेंगे।
- 'ने' परसर्ग का प्रयोग करके सकर्मक क्रिया युक्त सामान्य भूतकाल के वाक्यों का अनुवाद कर सकेंगे।

3.3. संरचना-१ :

मूँ थठे।	मैं हूँ गाल।
आमे थटू।	हम हैं।
तू थटू।	तू है।
तुमे थट।	तुम हो।
आपଣ ଥଟନ୍ତି।	आप हैं।
ଏହା ଥଟେ।	यह है।
ତାହା ଥଟେ।	वह है।

एगुड़िक थत्ति ।	ये हैं ।
ऐगुड़िक थत्ति ।	वे हैं ।
एहा टेब्ल थठे ।	यह मेज है ।
उहा चउकि थठे ।	वह कुर्सी है ।
ऐमाने शिक्षक थत्ति ।	वे शिक्षक हैं ।
एगुड़िक जबाग ।	ये किवाड़ हैं ।
एहा रहि ।	यह किताब है ।
उहा घण्ठा थठे ।	वह घड़ी है ।
ऐमाने अथापक थत्ति ।	वे अध्यापक हैं ।
मुँ छात्र थठे ।	मैं छात्र हूँ ।

3.3.1 स्वमूल्यांकन के प्रश्न :

(i) हिन्दी मे अनुवाद कीजिए :-

उहा टेब्ल थठे । मुँ शिक्षक थठे । ऐमाने छात्र थठे । एगुड़िक आम । ऐगुड़िक पञ्चा । आमे श्रुतिक थट्टू । तु कृषक थट्टू । एहा छूरका । उहा जबाग । ऐगुड़िक छबि ।

(ii) ओडिआ मे अनुवाद कीजिए :-

तुम कलाकर हो । हम किसान हैं । वे छात्र हैं । हीरालाल दुकानदार है । वे पपीते हैं । तु किसान है । तुम डॉक्टर हो । आप दयालु हैं । वे मंत्री हैं । मैं चन्द्रमोहन हूँ ।

संचरना - २ :

उदाहरण : सामान्य वर्तमान काल

मूँ पढ़े ।

मैं पढ़ता हूँ / पढ़ती हूँ ।

आमे पछू ।

हम पढ़ते हैं / पढ़ती हैं ।

तु पछू ।

तू पढ़ता है / तू पढ़ती है ।

उमे पढ़ ।

तुम पढ़ते हो / तुम पढ़ती हो ।

आपका वक्ता ।	आप पहले हैं / आप पहली हैं ।
मेरे दिन ।	मेरे पहले हैं / मेरे पहली हैं ।
वेशालय का वक्ता ।	मेरे पहले हैं / मेरे पहली हैं ।
वेशालय को लेकर ।	प्राप्ति निरन्तरी लियता है ।
विजयालय के विजयालय का वक्ता ।	बच्चे भी उनमें बिलते हैं ।
वेशालय का विजय ।	वे दृश्य भी हैं ।
विजय वाले वक्ता ।	गाय घाय चाली है ।
वेशालय वक्ता हैं ।	मी प्राप्ति लियती है ।
वेशालय वक्ता हैं ।	दुकानदार फल बेचता है ।
वेशालय वक्ता हैं ।	लोग प्रथमा काटते हैं ।
विजयविजय वेशालय का वक्ता ।	बहने देवाली पर आती है ।
विजयविजय वेशालय का वक्ता ।	धीरे जो से लौटते हैं ।
विजयविजय वक्ता हैं ।	डाकिया गोज खिरदियाँ लाता है ।
विजय वाले विजय वक्ता हैं ।	मी खाड़ दिल्ली में पहुंचते हैं ।
विजय विजय विजयविजय का वक्ता ।	मी बहन अपीलका में पहुंचती है ।

3.4.1 स्वप्नावक्तन के प्रकार :

(I) हिन्दी में अनुवाद कीजिए :

मैं बदला आए । वेशालय का वक्ता है । बुलाता आठ बाज । छहसाथ दिन लेहड़ ।
वेशालय का वक्ता है । आठवा नौबू आवाज । इस आकाशमें उड़े । आज उड़ाने की ही है । उम्र आकाशमें उड़े । वे दृष्टिकोश आव दिए ।

(II) ओडिया में अनुवाद कीजिए :

राजेश हमेशा सब बोलता है । विनीता गीत गाती है । पर्णिता भी आलगता है । विश्वास्यदम बोले खुलता है । मीं स्त्री बनाती है । वे आपसे प्रश्न पूछते हैं । गुरुजी पाठ पढ़ते हैं । साधु लोगों को उपदेश देते हैं । लड़कियाँ चित्र बनाती हैं । आपाजी हमारे लिए मिटाई जाते हैं ।

3.5 संचरना - ३ :	सामान्य भविष्यत् काल
मूँ पढ़िबि ।	मैं पढ़ूँगा / पढ़ूँगी ।
आमे पढ़िबु ।	हम पढ़ेंगे / पढ़ेंगी ।
तु पढ़िबु ।	तू पढ़ेगा / पढ़ेगी ।
तुमे पढ़िब ।	तुम पढ़ोगे / पढ़ोगी ।
आपश पढ़िबे ।	आप पढ़ेंगे / पढ़ेंगी ।
ऐ पढ़िब ।	वह पढ़ेगा / पढ़ेगी ।
ऐमाने पढ़िबे ।	वे पढ़ेंगे / पढ़ेंगी ।
पिलामाने पूठबल् क्षेलिबे ।	बच्चे फुटबॉल खेलेंगे ।
कृषक मोाते पड़ाइबे ।	शिक्षक मुझे पढ़ाएँगे ।
बापा मोाते भूगोल पड़ाइबे ।	पिताजी मुझे भूगोल पढ़ाएँगे ।
गाँर पिलामाने गाठ गाइबे ।	गाँव के बच्चे गीत गाएँगे ।
तुमे कमला खाइब ।	तुम संतरे खाओगे ।

3.5.1 स्वमूल्यांकन के प्रश्न :

(i) हिन्दी में अनुवाद कीजिए :-

बापा टङ्का पठाइबे । कृषक टि जमि हल करिब । मोा बड़ उद्घाणा रुठि बेलिबे ऐमाने रठना लेखूबे । ऐ बहि प्रेरणे देब । रमेश गछरु नहिं चोलिब । आपश गप छुशेइबे । मूँ लेम्हु चिपुढ़िबि । आम दल कालि क्रिकेट क्षेलिब । बापा ढाढ़रक्कु ढाकिबे ।

(ii) ओडिआ में अनुवाद कीजिए :-

वे कभी सिर नहीं झुकाएँगे । आलू सड़ जाएँगे । चोर पकड़े जाएँगे । मैं धागे में फूल गूथूँगी । बंदर पेड़ से कूदेंगे । हम स्वतंत्रता दिवस को राष्ट्रीय झंडा फहराएँगे । पाँच मिनट के बाद पानी उबलेगा । दिसम्बर में परीक्षा होगी । बच्ची की नींद अभी टूट जाएगी । वे हिफाजत में सामान रखेंगे । मजदूर गड्ढा खोदेगा ।

3.6 संचरना - ४

अकर्मक क्रिया में सामान्य भूत काल

मूँ गलि ।

मैं गया / गई ।

आमे गलू ।

हम गए । / गई ।

तु गलू ।

तू गया । / गई ।

तुमे गलू ।

तुम गए । / गई ।

आपशा गले ।

आप गए । / गई ।

ऐ गला ।

वह गया / गई ।

ऐमाने गले ।

वे गए / गई ।

मदन कालि एठाकु आविला ।

मदन कल यहाँ आया ।

द्विथंडि ज्ञोररे कादिला ।

लड़की जोर से रोई ।

हरिणी दोड़िला ।

हिरनी दौड़ी ।

काठ नदीरे भाविगला ।

लकड़ी नदी में बह गई ।

फूल धारे मधुलिगला ।

फूल शाम को मुरझा गया ।

गिलास उले पड़िगला ।

गिलास नीचे गिर पड़ा ।

खेलरे किए जिणिला ?

खेल में कौन जीता ?

दिन याक छोट द्विथंडि कादिला ।

दिन भर छोटी बच्ची रोई ।

दुःखी लोकटि कु देख ढाङ्क हृदय

दुःखी आदमी को देखकर उनका हृदय

उरलिगला ।

पसीज गया ।

साप देखु कमला उमकि पड़िला ।

साँप देखकर कमला चौंक पड़ी ।

पिलाटि खेलना देखु हविला ।

बच्चा खिलौना देखकर हँसा ।

पबनरे गङ्ग नज़्र गला ।

हवा से पेड़ झुक गया ।

दृढ़रु केहि रक्षा पाइले नाहँ ।

आँधी से कोई नहीं बचा ।

मूँ दुमर लेखा पड़ि पारिलि नाहँ ।

मैं तुम्हारी लिखावट पढ़ नहीं सका ।

कृष्ण बिलरु पेरिला ।

ललिता एकथा जाणि पारिला नाही ।

बूढ़ाटि ठिआ हेला ।

बूढ़ाटि वधिगला ।

किसान खेत से लौटा ।

ललिता यह बात जान नहीं सकी ।

बूढ़ा खड़ा हुआ ।

बूढ़ी बैठ गई ।

3.6.1 स्वमूल्यांकन के प्रश्न :-

(i) हिन्दी में अनुवाद कीजिए :-

दाप लिभिगला । माङडे गळ उपरु उलकु डेज़ला । घाप घर उत्तरकु पर्शि आसिला ।
श्रुमिकटि बहुत काम करि मध्य थकिला नाही । एथर एबु मञ्चितक नष्ट होइगला ।
झरकाटि भाङ्गिगला । काढुअरे मो गोड़ खधिगला । ढाङ्ग गोड़र हाड़ भाङ्गिगला ।
जाहाज घमुद्दरे बूड़िगला । कुकुर काहिंकि भुकिला ?

(ii) ओडिशा में अनुवाद कीजिए :-

लड़की खूब नाची । मौसम बदल गया । तुम क्यों चिल्लाये ? हम तो तुम्हारी बातों से ऊब
गये । लड़की जाड़े से ठिठुरने लगी । दीवार नीचे धँस गयी । राजू यहाँ पढ़ने आया । रीता
खेलने नहीं गई । वह लड़ाई में हारा । तू दुकान से क्या लाया ? बच्ची जल्दी सो गई ।

3.7. संरचना - ५

सकर्मक क्रिया में सामान्य भूत काल

मूँ खाइलि ।

मैंने खाया ।

आमे खाइलू ।

हमने खाया ।

तू खाइलू ।

तूने खाया ।

तुमे खाइलै ।

तुमने खाया ।

आपण खाइलै ।

आपने खाया ।

ऐ खाइला ।

उसने खाया ।

ऐमाने खाइले ।
बापा लेखूले ।
मा' लेखूले ।
मोर घाजमाने देखूले ।
ठोरमाने लुटिनेले ।
दूमे क'श किणील ?

उन्होंने खाया ।
पिताजी ने लिखा ।
माँ ने लिखा ।
मेरे दोस्तों ने देखा ।
चोरों ने लूट लिया ।
तुमने क्या खरीदा ?

वाक्य में क्रिया सकर्मक भूतकालिक हो तो कर्ता के साथ 'ने' लगता है । जब वाक्य में कर्म नहीं होता तो क्रिया स्वतंत्र होगी, अर्थात् क्रिया पुंलिंग, एकवचन तथा अन्य पुरुष में होगी ।

3.7.1 स्वमूल्यांकन के प्रश्न :

(i) हिन्दी में अनुवाद कीजिए :-

ऐमाने पढ़िले । किए देला ? मनोज लेखूला । दूमे चिरिल कि ? किए ठोलिला ?
आमे देखूलू । ऐमाने पचारिले । गुरुजी पठोइले । आमे बिकिलू । आपश
किणीले नाहौं कि ?

(ii) ओडिशा में अनुवाद कीजिए :-

किसने लिखा ? आपने देखा । दुकानदार ने बेचा । लड़के ने खरीदा । लड़की ने बुलाया ।
बच्चों ने पढ़ा । किसने लौटाया ? हमने सजाया । लोगों ने खोदा । उसने कहा । क्या तुमने
देखा ? क्या तुमने नहीं देखा ?

3.8. संरचना-६ :

सामान्य भूतकाल (सकर्मक क्रिया और पुंलिंग कर्म के साथ)

मूँ पळ खाइलि ।

मैने फल खाया ।

आमे नाटक देखूलू ।

हमने नाटक देखा ।

दू चक घिणीलू ।

तूने चॉक फेंका ।

दूमे चिठि लेखूल ।

तुमने पत्र लिखा ।

ଆପଣ ଉପନ୍ୟାସ ପଡ଼ିଲେ ।	ଆପନେ ଉପନ୍ୟାସ ପଡ଼ା ।
ସେ ଗାତ ଖୋଲିଲା ।	ତସନେ ଗଡ଼ା ଖୋଦା ।
ସେମାନେ ମୋତେ ପ୍ରଶ୍ନ ପଠାଇଲେ ।	ତହୋନେ ମୁଝସେ ପ୍ରଶ୍ନ ପୂଛା ।
ରଜନୀ ପୋଖରୀ ଦେଖୁଲା ।	ରଜନୀ ନେ ତାଲାବ ଦେଖା ।
ମା' ଭାତ ରାନ୍ଧିଲେ ।	ମା' ନେ ଚାଵଲ ପକାଯା ।
ଆଇ ନାତୁଣୀକୁ ଗାତ ଶୁଣାଇଲେ ।	ନାନୀ ନେ ନାତିନ କୋ ଗୀତ ସୁନାଯା ।
ଜୀତୁ କଦଳୀ ଖାଇଲା ।	ଜୀତୁ ନେ କେଲା ଖାଯା ।
ମୁଁ ରେଡ଼ିଓ କିଣିଲି ।	ମୈନେ ରେଡ଼ିଓ ଖରିଦା ।

3.8.1 स्वमूल्यांकन के प्रश्न :

(i) हिन्दी में अनुवाद कीजिए :-

ତୁମେ ତାଜମହଲ ଦେଖୁଲ । ସେମାନେ ସାପ ଦେଖୁଲେ । ସେ ମୋତେ କଦଳୀଟିଏ ଦେଇ
ବୀରଭଦ୍ର ପିଲାଙ୍କୁ କାଗଜ ବାଣିଲେ । ମୁଁ ଗୋଟିଏ ଚିକେଟ କିଣିଲି । ତୁ ଅମୃତଭଣ୍ଟା କାଣ୍ଡୁ
ଶିକ୍ଷକ ଛାତ୍ରମାନଙ୍କୁ ଇତିହାସ ବୁଝାଇଲେ । ମୋ ଅପା ଚିତ୍ର ଆଙ୍କିଲା । ସେ ମନ୍ଦିରରେ ବା
ବଜାଇଲେ । କୃଷ୍ଣକଟି ଧାନ ବିକିଲା ନାହିଁ ।

(ii) ओडिआ में अनुवाद कीजिए :-

उसने मुझे फोन किया । बच्ची ने कागज फाड़ा । आपने सच कहा । मीरा ने राधा को चश्मा दिखाया । तूने नीबू निचोड़ा । लीला ने अपना दाहिना हाथ उठाया । संगीता ने पानी पीया । हमने नाच नहीं देखा । तुमने गधे पर सामान रखा । किसान ने जमीन में हल चलाया ।

जब वाक्य भूतकाल में हो, क्रिया सकर्मक हो, तब कर्ता के साथ 'ने' लगेगा । क्रिया का रूप कर्म के लिंग, वचन के अनुसार होगा । कर्म पुंलिंग एक वचन में होगा तो क्रिया भी पुंलिंग एक वचन में होगी ।

3.9. संरचना-७ :

सामान्य भूत काल

(सकर्मक क्रिया और स्त्री लिंग कर्म के साथ)

मूँ गोठिए आँख बद्ध कलि ।

मैंने एक आँख बंद की ।

ऐ छरका खोलिला ।

उसने खिड़की खोली ।

तुमें हिंदा शिखल ।

तुमने हिन्दी सीखी ।

ऐ मो कथा बुझे पारिलानि ?

उसने मेरी बात नहीं समझी ।

गढ़ड़ क्षाररे पाणि मिशाइला ।

खाले ने दूध में पानी मिलाया ।

कृष्ण बंशा बजाइले ।

कृष्ण ने वंशी बजाई ।

मूँ आपशाङ्क उपरे दायित्व न पृष्ठ कलि ।

मैंने आप पर जिम्मेदारी सौंपी ।

तुमें एकथा काहिंकि लूचाइल ?

तुमने यह बात क्यों छुपाई ।

रण्टि पिलू देखला ।

रश्मि ने फिल्म देखी ।

ऐ महुरे ओषध घोठिला ।

उसने शहद में दवा घोटी ।

3.9.1. स्वमूल्यांकन के प्रश्न :-

(i) हिन्दी में अनुवाद कीजिए :-

ऐ चा'रे चिनि पकाइले । तुमें घबू योजना बिगाढ़ि देले । मा' माछ राशिले । दोकानी बहि बिकिले । पिलाटि बहि किशिला । ऐ मो कथा एड़ेज देले । तुमें पूदिटि हज्जेज देले । राधा क्षाररे किछि चिनि पकाइला । आपश बाढ़िटि जाजिले कि ? ऐ घबू कथा निज पूछ उपरकु नेजनेले ।

(ii) ओडिया में अनुवाद कीजिए :-

उसने दीवार पर घड़ी लटका दी । चोरों ने सारी संपत्ति लूट ली । मैंने उस पर एक बार नजर डाली । आपने एक कहानी लिखी । मैंने चाय पी ली । उसने मेरी बात समझी । बच्चे ने छड़ी तोड़ दी । मालती ने माधुरी को किताब लौटाई । क्या तुमने हिन्दी सीखी ? सब्जी सड़ गई ।

3.10. इस इकाई से आपने जो सीखा :

- कर्ता के पुरुष और वचन के अनुसार कुछ क्रिया - रूपों में परिवर्तन होता है। जैसे - हूँ। हम हैं। तू है। तुम हो, आप हैं। वह है। वे हैं। (संरचना - १)
- कर्ता के लिंग, पुरुष और वचन के अनुसार कुछ क्रिया-रूपों में परिवर्तन होता है। सामान्यवर्तमान, सामान्य भविष्यत और सामान्य भूत (अकर्मक क्रिया युक्त) वाक्यों में ऐसा होता है। (संरचना - २, ३, ४)
- सकर्मक क्रिया युक्त भूतकालिक वाक्यों में कर्ता के साथ 'ने' परसर्ग आता है। ने युक्त कर्ता के अनुसार क्रिया नहीं बनती।
- कर्ता 'ने' युक्त होने पर क्रिया कर्म के लिंग-वचन के अनुसार बनती है।
- वाक्य में कर्म न हो, तो क्रिया स्वतंत्र रहती है। अर्थात् क्रिया पुंलिंग एकवचन तथा अन्य पुरुष में रहती है। (संरचना - ५)
- कर्म पुंलिंग एकवचन में हो, तो क्रिया पुंलिंग एकवचन में रहती है। (संरचना - ६)
- कर्म स्त्री लिंग एकवचन में हो, तो क्रिया स्त्रीलिंग एकवचन में रहती है। (संरचना - ७)

3.11. स्वमूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर

3.3.1 संरचना - १

- (i) यह मेज है। मैं शिक्षक हूँ। वे छात्र हैं। ये आम हैं। वे पंखे हैं। हम शिक्षक हैं। तू किसान है। यह खिड़की है। वह दरवाजा है। वे तस्वीरें हैं।
- (ii) तुमें कलाकार थठ। आमें कृषक थठ। घोमाने छात्र थठन्हि। हारालाल दोकान। थठन्हि। घेगुड़िक थमृतजघ्या। तु छात्र थठ। तुमें ढाकर थठ। आपण दम्बालु थठन्हि। घे / घोमाने मन्हा थठन्हि। मुँ चम्बुमोहन थठ।

3.4.1 (i) मैं केला खाता हूँ। वे किताब पढ़ते हैं। सुनीता गीत गाती है। रमेश चिट्ठी लिखता है। वे नाटक देखते हैं। आप यहाँ आते हैं। पक्षी आसमान में उड़ता है। चिड़िया आसमान में उड़ती है। बंदर डाली पर कूदता है। चाँद आसमान में उगता है। वह रोज दूध पीता है।

(ii) राजेश घर्षदा सृष्टि कुहे। बिना ता गीत गाए। अमृतजिता मीठा लागे। बिद्यालय दिशा बेले खोले। मा क्षीरा छिआरि करन्ति। घेमाने आपशाङ्का प्रश्न पठारन्ति। गूरुजी पाठ पढ़ान्ति। याधु लोकाङ्कु उपदेश दिअन्ति। छिअमाने छित्र छिआरि करन्ति। मामु आम पाइ नीठोल आणन्ति।

3.5.1 (i) पिताजी रूपये भेजेंगे। किसान खेत में हल चलाएगा। मेरी बड़ी बहन रोटी बेलेगी। वे निबंध लिखेंगे / लिखेंगी। वह किताब लौटा देगा।। रमेश पेड़ से नारियल तोड़ेगा।। आप कहानी सुनाएँगे। मैं नीबू निचोड़ूँगा। हमारा दल कल क्रिकेट खेलेगा।। पिताजी डॉक्टर को बुलाएँगे।।

(ii) ये केबेहेले मूष्टि नुआँज़बे नाहि। आळु पोठा होऱ्यिब। चोर धरापड़िबे। मुँ सूठारे पूल गूम्हिबि। माङड़माने गँड़रु छेँज़बे। आमे धाधीनता दिवस दिन जातीय पठाका उड़ाँज़रु। पाञ्च मिनीट परे पाणी पूचिब। छिएमररे पराया हँवे। छिकि छिअट्टिर निद एवे भाङ्गियिब। ये/ घेमाने यहूरे जिनीषपत्र रखूँबे। श्रुतिक गोचिएं गात खोलिब।

3.6.1 (i) दीप बुझ गया। बंदर पेड़ से नीचे कूदा। साँप घर के अंदर घुस आया। मजदूर बहुत काम करके भी थका नहीं। इस बार सारे बीज बरबाद हो गये। खिड़की टूट गयी। कीचड़ में मेरा पैर फिसल गया। उनके पैर की हड्डी टूट गयी। जहाज समुद्र में झूब गया। कुत्ता क्यों भौंका।

(ii) ଛିଆଟି ରହୁଥି ନାଚିଲା । ଏବେ ପାଗ ବଦଳିଗଲା । ତୁମେ କାହିଁକି ଚିକାର କଲା
ଆମେ ତ ତୁମ ଜଥାରେ ଅତିଷ୍ଠ ହୋଇଗଲୁ । ଛିଆଟି ଶୀତରେ ଥରିବାକୁ ଲାଗିଲା
କାହିଁ ତଳକୁ ଦବିଗଲା । ଗାଜୁ ଏଠାକୁ ପଡ଼ିବାକୁ ଆସିଲା । ରୀତା ଖେଳିବାକୁ ଗଲା
ସେ ଲଢ଼େଇରେ ହାରିଲା । ତୁ ଦୋକାନରୁ କ'ଣ ଆଣିଲୁ ? ଟିକି ଛିଆଟି ଜଳଦି ଖୋଲା
ପଡ଼ିଲା ।

3.7.1 (i) ଉନ୍ହୋନେ ପଡ଼ା । କିସନେ ଦିଯା ? ମନୋଜ ନେଲିଖା । କ୍ୟା ତୁମନେ ଫାଡ଼ା ? କିସନେ ଧକେଲା ?
ହମନେ ଦେଖା । ଉନ୍ହୋନେ ପୂଞ୍ଜା । ଗୁରୁଜୀ ନେ ଭେଜା । ହମନେ ବେଚା । କ୍ୟା ଆପନେ ନହିଁ ଖରୀଦା ?
(ii) କିଏ ଲେଖିଲା ? ଆପଣ ଦେଖିଲେ । ଦୋକାନୀ ବିକିଲା । ପୁଅ ପିଲାଟି କିଣିଲା । ଛିଆଟି
ଡାକିଲା । ପୁଅ ପିଲାମାନେ ପଡ଼ିଲେ । କିଏ ଫେରାଇଲା ? ଆମେ ସଜେଇଲୁ ।
ଲୋକମାନେ ଖୋଲିଲେ । ସେ କହିଲା । ତୁମେ ଦେଖିଲ କି ? ତୁମେ ଦେଖିଲ ନାହିଁକି ?

3.8.1 (i) ତୁମନେ ତାଜମହଲ ଦେଖା । ଉନ୍ହୋନେ ସାୟ୍ ଦେଖା । ଉସନେ ମୁଝେ ଏକ କେଲା ଦିଯା । ଵୌରଭଦ୍ର
ନେ ବଚ୍ଚୋଂ କୋ କାଗଜ ବାଁଟା । ମୈନେ ଏକ ଟିକଟ ଖରୀଦା । ତୁନେ ପପୀତା କାଟା । ଶିକ୍ଷକରେ
ଭାତ୍ରୋଂ କୋ ଇତିହାସ ପଡ଼ାଯା । ମେରୀ ବଢ଼ି ବହନ ନେ ଚିତ୍ର ବନାଯା । ଉସନେ ମଂଦିର ମେବାଜା
ବଜାଯା । କିସାନ ନେ ଧାନ ନହିଁ ବେଚା ।

(ii) ସେ ମୋତେ ପୋନ କଲା । ଟିକି ଛିଆଟି କାଗଜ ଚିରିଲା । ଆପଣ ସତ କହିଲେ ।
ମୀରା ରାଧାକୁ ଚକ୍ଷମା ଦେଖାଇଲା । ତୁ ଲେଖୁ ଚିପୁଡ଼ିଲୁ । ଲୀଲା ତା' ଡାହାଣ ହାତ
ଟେକିଲା । ସଙ୍ଗୀତା ପାଣି ପିଇଲା । ଆମେ ନାଚ ଦେଖିଲୁ । ତୁମେ ଗଧ ଉପରେ
ଜିନିଷପତ୍ର ଲଦିଲ । କୃଷକ ଜମିରେ ହଳ କଲା ।

3.9.1 (i) ଉସନେ ଚାୟ ମେ ଚୀନୀ ଡାଲି । ତୁମନେ ସାରି ଯୋଜନା ବିଗାଢ଼ ଦୀ । ମାଁ ନେ ମଛଲୀ ପକାଈ ।
ଦୁକାନଦାର ନେ କିତାବ ବେଚି । ବଚ୍ଚୋଂ ନେ କିତାବ ଖରୀଦି । ଉସନେ ମେରୀ ବାତ ଟାଲ ଦୀ । ତୁମେ
ଅଁଗୁଠି ଖୋ ଦୀ । ରାଧା ନେ ଦୂଧ ମେ କୁଛ ଚୀନୀ ଡାଲି । କ୍ୟା ଆପନେ ଛଡ଼ି ତୋଡ଼ି ? ଉନ୍ହୋନେ
ସାରି ବାତ ଅପନେ ସିର ପର ଲେ ଲି ।

(ii) ए वाहुरे घणा टाङ्गिदेले । चोरमाने सबू एमधि लूटि नेले । मुँ ताङ्ग
उपरे थरे नजर पकाइले । आपण गोठिए गप लेख्ले । मुँ च' पिलदेली ।
ए मो कथा बुझ्ले । पिलाटि बाढि भाङ्ग देला । मालती माधुरीकृ बहि
प्रेरेइला । तुमे हिंदी शिख्ल कि ? परिबा परिगला ।

3.12 अभ्यास के लिए प्रश्न

(i) हिन्दी में अनुवाद कीजिए :-

मुँ कृषक अठे । ऐमाने श्रमिक अठन्ति । तुमे अथापक अठ । आपण सबू दिन
गाउ गाआन्ति । बाणा सत कहे । मोहन माझ खाए नाहीं । ए काहाकू मानन्ति ?
आमे कालि कठक यिरु । पिलामाने बर्तमान दोड्हिबे । पक्षामाने उड्हिले ।
द्युअमाने दोड्हिले । चमन कदली खाइला । रजनी छता किशीला । उन्नु कलम
हजेइ देला । ए मोठे बहि देला । ए पढ्हिबाकू गला नाहीं ।

(ii) ओडिशा में अनुवाद कीजिए :-

दूरदर्शन-कार्यक्रम आकर्षक होता है । ओडिशा के पूर्व में बंगोपसागर (बंगाल की
खाड़ी) है । पढ़ने से ज्ञान बढ़ता है । नरसिंह देव ने कोणार्क मंदिर बनवाया । उसने
एक सुंदर गीत गाया । राकेश ने लीची खाई । मैं रोया । गीता सोई । शिक्षक ने
कहानी सुनाई । हम कामयाब होंगे । शायद कल वर्षा होगी । वह पढ़ने नहीं गया ।

3.13. संदर्भ ग्रन्थ

(i) अनुवाद विज्ञान - डॉ भोलानाथ तिवारी ।

UNIT - 4

इकाई - 4

भाषा-शिक्षण और भाषाई कौशल

- 4.0. भाषा-शिक्षण और भाषाई कौशल
- 4.1. प्रारंभ
- 4.2. उद्देश्य
- 4.3. तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण का अर्थ तथा महत्व
- 4.4. प्रारंभिक स्तर पर हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य
- 4.5. भाषाई कौशल
- 4.51. श्रवण कौशल का अर्थ
- 4.5.1.1. श्रवण कौशल को विकसित करने के सोपान
- 4.5.2. भाषण कौशल का अर्थ
- 4.5.2.1. भाषण कौशल को विकसित करने के सोपान
- 4.5.3. वाचन कौशल का अर्थ
- 4.5.3.1. वाचन कौशल को विकसित करने के सोपान
- 4.5.4. लेखन कौशल का अर्थ
- 4.5.4.1. लेखन कौशल को विकसित करने के सोपान
- 4.6. इस इकाई से आपने जो सीखा
- 4.7. स्वमूल्यांकन के प्रश्न।
- 4.8. स्वमूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर।
- 4.9. इकाई की सामाप्ति के बाद के प्रश्न।
- 4.10. संदर्भ ग्रन्थ सूची।

4.0. भाषा-शिक्षण और भाषाई कौशल

4.1. प्रारंभ

तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण :

बच्ची हो या बच्चा, अपनी माँ से, परिवार से और अपने मित्रों से जो भाषा सीखता है, वह उसकी मातृभाषा है। मातृभाषा ही प्रथम भाषा है जिसकी मदद से वह प्रारंभिक जीवन का कार्य चलाता है। वह मातृभाषा बोलता है, समझता है और सीखता भी है।

जब वह छात्र बनता है, विद्यालय में जाता है तो पहले इसी भाषा के माध्यम से ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में प्रवेश करता है। लेकिन विद्यालय में अन्य भाषाएँ भी सिखाई जाती हैं।

ओडिशा के स्कूल-पाठ्यक्रम में अंग्रजी को द्वितीय भाषा और हिन्दी को तृतीय भाषा का स्थान मिला है। आधुनिक युग में मानव के ज्ञान का क्षेत्र इतना विस्तृत है कि अन्य भाषाएँ सीखना जरूरी है। विज्ञान, व्यवसाय और अंतर्राष्ट्रीय व्यवहार की भाषा अंग्रेजी है लेकिन अपने प्रांत से बाहर निकलते ही हम हिन्दी का उपयोग करते हैं। हिन्दी हमारे देश की राष्ट्रभाषा है। यह विभिन्न प्रांतों में प्रयोग में आनावाली लोकप्रिय भाषा है। यह भारतीय संविधान में स्वीकृत राजभाषा है। अर्थात् दफ्तरों में काम आनेवाली भाषा भी है। अतएव, इसका महत्व सर्वाधिक है, क्योंकि यह हमारी राष्ट्रीय अस्मिता की प्रतिनिधि भाषा है।

यह आश्चर्य की बात नहीं है कि बड़े लोगों की तुलना में छोटे बच्चे एकाधिक भाषा आसानी से सीख जाते हैं। हमारा देश बहुभाषी देश है। अक्सर एक ही प्रांत में दो या तीन भाषाओं का व्यवहार होता है। बच्चे इन सभी भाषाओं को एक साथ आसानी से सीख जाते हैं और उनका उपयोग भी करते हैं।

आइए, हम अपने स्कूली बच्चों के लिए हिन्दी भाषा के शिक्षण के लिए विविध विधियों के जरिए व्यवस्थित ढंग से हिन्दी भाषा को सिखाने का प्रयाश करें।

द्वितीय या (तृतीय) भाषा सीखने में कभी मातृभाषा मदद करती है तो कभी बाधा हुँचती है। हम उन बिंदुओं पर विचार करके अपने शिक्षण विधियों का रास्ता अपनाएँ।

4.2. उद्देश्य :

तृतीय भाषा शिक्षण के उद्देश्य :

मातृभाषा तो स्वाभाविक रूप से अपने परिवेश से सीख ली जाती है, परंतु द्वितीय भाषा सीखते समय स्वाभाविक परिवेश अक्सर नहीं मिलता। इसीलिए खास कोशिश करनी पड़ती है।

भिन्न भाषाभाषियों के बीच विचार-विनिमय के लिए दूसरी (अन्य) भाषा सीखनी पड़ती है। इससे मातृभाषाभाषी अधिक विस्तृत क्षेत्र में प्रवेश करता है। उसे अन्य भाषा में समझना, अपने को अभिव्यक्त करना आवश्यक होता है।

दूसरी भाषा के माध्यम से ज्ञानार्जन का क्षेत्र भी विस्तृत होता है। अन्य भाषा में लिखित साहित्य, वैज्ञानिक- तकनीक ज्ञान पाने के लिए दूसरी भाषा सीखनी पड़ती है। उससे दूसरे लोगों के जीवन, रहन-सहन, संस्कृति, रीति-रिवाज जीवन-शैली तथा मूल्यों से परिचित होना संभव होता है।

अपने को दूसरों के साथ तुलना करने से ज्ञान बढ़ता है, मानवीय चेतना प्रसारित होती है और आनन्द मिलता है। इससे व्यक्तित्व का परिमार्जन होता है। ज्ञान को नया आयाम मिलता है। अतः छात्रों को अन्य भाषा सीखने में रुचि लेनी चाहिए।

4.3. तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण का अर्थ और महत्व :

भाषा के माध्यम से भावों और विचारों का आदान- प्रदान किया जाता है। भाषा किसी समाज द्वारा स्वीकृत होती है। इसमें ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य आदि की निश्चत व्यवस्था रहती है।

बालक पहले जिस भाषा के माध्यम से समझना और बोलना सीखता है, वह उसकी मातृभाषा होती है। माँ-बाप से परिवार के परिवेश में सहज स्वाभाविक रूप से वह इसे सीख जाता है।

फिर बालक जब विद्यालय में प्रवेश करता है, तब इसी भाषा के माध्यम से वह अन्य ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र से परिचित होता है। इसे उसकी प्रथम भाषा कहते हैं। समाज के शिष्ट लोग इसी भाषा का ही प्रयोग करते हैं।

प्रथम भाषा के अलावा विद्यालय में अन्य भाषाएँ भी औपचारिक रूप से सिखायी जाती हैं। ये भाषाएँ द्वितीय भाषाएँ कहलाती हैं। लेकिन प्रशासनिक दृष्टि से विद्यालयीन शिक्षा में इन्हें द्वितीय और तृतीय भाषा कहते हैं।

ओडिआ भाषी क्षेत्र में ओडिआ प्रथम भाषा है; अंग्रेजी द्वितीय भाषा है और हिन्दी तृतीय भाषा है।

इस वैज्ञानिक युग में एक ही भाषा में न तो कोई संतुष्ट हो सकता है न उसकी सभी आवश्यकताएँ एक ही भाषा के द्वारा पूरी हो सकती हैं। दूर संचार के माध्यमों, आवागमन का साधनों, रेडियो, दूरदर्शन, कम्प्यूटर आदि के कारण समय और स्थान काफी सीमति हो गये हैं। अपने भाषा- क्षेत्र की सीमा में सिमटकर रहना कर्तई संभव नहीं है। अन्तर्राष्ट्रीय भाषा अंग्रेजी-ज्ञान से परिचित होने से ही हम विश्व की प्रगति की दौड़ में शामिल हो सकते हैं। फिर भी हिन्दी की भूमिका कम नहीं है। यह जन-जन की भाषा है।

हिन्दी भारत के संविधान द्वारा स्वीकृत राजभाषा है। यह भारत की अधिकांश जनता द्वारा समझी और बोली जाती है। इसलिए हिन्दी को राष्ट्रभाषा का गौरव भी प्राप्त है।

हम ओडिशा से बाहर जाएँगे तो दूसरों के साथ बात-चीत करने के लिए हमें अपनी मातृभाषा ओडिआ सहायता नहीं कर सकती। अगर हम हिन्दी भाषा से परिचित रहे होएंगे तो भारत के किसी भी स्थान में हिन्दी के माध्यम से दूसरों को अपनी बात समझा सकेंगे और दूसरों की बात भी समझ सकेंगे। इसलिए विद्यालयों में हिन्दी शिक्षण अत्यंत जरूरी है।

वयस्क छात्रों की तुलना में प्राथमिक विद्यालय के छात्र कोई भी भाषा जल्दी सीख जाते हैं। वे भिन्न-भिन्न भाषाओं की ध्वनियों का सही उच्चारण कर सकेंगे। वे मातृभाषा और द्वितीय भाषा की ध्वनियों के अंतरों को भी जल्दी समझ जाएँगे। वे सीखते समय त्रुटि से नहीं घबराते या लज्जा का अनुभव नहीं करते। सीखने की तीव्र इच्छा होने के कारण वे जल्दी-जल्दी अन्य भाषा की विशेषताओं, व्याकरण-व्यवस्था, उच्चारणगत अंतर आदि को फूहान सकेंगे और गतिपूर्वक बोल सकेंगे। वाचन और लेखन में भी कुशलता अर्जित कर सकेंगे।

इस दृष्टि से ओडिशा में प्रारंभिक स्तर से तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण की व्यवस्था की गई है।

4.4. प्रारंभिक स्तर पर हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य :

द्वितीय/तृतीय भाषा शिक्षण मातृभाषा शिक्षण की तरह सहज-स्वाभाविक परिवेश में नहीं होता। विशेष प्रयास पूर्वक इसे सीखना पड़ता है। भाषायी कुशलता प्राप्त करना इसका मूल उद्देश्य है। इसके साथ-साथ अन्य उद्देश्य भी इसमें शामिल हैं। ये उद्देश्य निम्न प्रकार के हैं :

(1) विचार-विनिमय-क्षेत्र का विस्तार : द्वितीय/तृतीय भाषा शिक्षण का यह उद्देश्य होता है कि छात्र अन्य भाषा-भाषियों के साथ विचारों का आदान-प्रदान कुशलता के साथ कर सकें। यह कार्य मातृभाषा द्वारा संभव नहीं है। अन्य भाषा द्वारा विस्तृत क्षेत्र में विचार विनिमय संभव होता है। अन्य भाषा में भाव-ग्रहण और भाव-प्रकाशन में कुशलता प्राप्त करने के लिए पर्याप्त अभ्यास की आवश्यकता है।

(2) ज्ञानार्जन- स्रोत का विस्तार : छात्र के प्रारंभिक ज्ञान का माध्यम मातृभाषा है। द्वितीय/तृतीय भाषा के द्वारा उसे विविध विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है। अन्य भाषा के समृद्ध साहित्य कला, वैज्ञानिक उपलब्धियों, नवीन तकनीकी से परिचित होने से ज्ञान की सीमा बढ़ जाती है। अन्य मूल भाषा की विशिष्ट रचनाओं का स्वाद चखना भी संभव होता है।

(3) नवीन संस्कृति का परिचय : भाषा के साथ संस्कृति का संबंध निविड़ है। अन्य भाषाभाषी समाज की सांस्कृतिक विशेषताओं को जानने के लिए द्वितीय/तृतीय भाषा शिक्षण की आवश्यक पड़ती है। इससे हम अन्य भाषा-भाषियों की मान्यताओं, जीवन-मूल्यों, जीवन-स्तर, रीति-नीति और विचारधाराओं को समझ सकेंगे और कुशलतापूर्वक भाषा का प्रयोग कर सकेंगे।

(4) आनन्दानुभूति और साहित्यिक रसास्वादन: एक व्यक्ति अपनी मातृभाषा में उपलब्ध साहित्य (गद्य, पद्य, उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी आदि) को पढ़कर आनन्द का अनुभव करता है और साहित्यिक रस आस्वादन करता है। फिर उसके मन में अन्य भाषाओं में उपलब्ध साहित्य को जानने की इच्छा होती है। अन्य भाषा शिक्षण द्वारा उसकी यह इच्छा पूरी होती है।

(5) व्यक्तित्व का परिमार्जन: मातृभाषा का अध्ययन करके व्यक्ति अपने समाज की कीर्तियों, चिंतन-धाराओं, आदर्शों, जीवन-मूल्यों और विचारों को जानता है। इससे वह गैरव का अनुभव करता है। वह उदात्त मानवीय गुणों को अपनाकर अपने व्यक्तित्व का निर्माण करता है। उसी प्रकार द्वितीय/तृतीय भाषा शिक्षण द्वारा वह अन्य भाषा-भाषी समाज की सभ्यता, संस्कृति, जीवनमूल्यों तथा इतिहास को जान सकता है। इससे उसका दृष्टिकोण उदार होता है तथा व्यक्तित्व का परिमार्जन होता है।

(6) व्यावसायिक कौशलता का विकास : आजकल कोई भी व्यक्ति अपने भाषा-क्षेत्र में सीमित होकर रह नहीं सकता। उसे व्यापार, नौकरी आदि करने के लिए अन्य भाषा-भाषी क्षेत्र में जाना पड़ता है। वह वहाँ की भाषा का जितनी कुशलता से प्रयोग करेगा, लोगों के साथ बात-चीत कर सकेगा, उनको उतना प्रभावित कर सकेगा। अतः द्वितीय/तृतीय भाषा का शिक्षण इस उद्देश्य से भी जरूरी है।

(7) भाषा-तुलना और साहित्य-तुलना के ज्ञान का विकास : एक अशिक्षित व्यक्ति भाषा का व्यवहार करके अपने दैनंदिन जीवन की आवश्यकताओं को तो पूरा कर पाएगा; पर एक शिक्षित व्यक्ति भाषा का सूक्ष्म ज्ञान प्राप्त कर सकेगा। वह भाषा-व्यवस्था और साहित्य को समझ सकेगा। द्वितीय/तृतीय भाषा शिक्षण द्वारा अन्य भाषा का ज्ञान प्राप्त करने के साथ-साथ उस भाषा की व्यवस्था और साहित्य को भी समझ सकेगा। दोनों भाषा की व्यवस्थागत अन्तर समझ सकेगा। दोनों साहित्य की तुलना कर सकेगा।

4.5 : भाषाई कौशल :

भाषा का शिक्षण वस्तुतः: भाषाई कौशलों का विकास करना है। मातृभाषा से भिन्न अन्य भाषा शिक्षण में इन कौशलों का विशेष महत्व है। भाषा सीखने और सिखाने का उद्देश्य मुख्तः छात्रों में भाषा कौशलों की आदत विकसित करना है।

भाषा सीखने के चार कौशल हैं :

1. श्रवण (सुनना) कौशल }
2. भाषण (बोलना) कौशल }
3. वाचन (पढ़ना) कौशल }
4. लेखन (लिखना) कौशल }

मुख्य कौशल

गौण कौशल

पुस्तकों का प्रयोग

4.5.1 : श्रवण कौशल

अर्थ : समान्यतः कानों के माध्यम से ध्वनि ग्रहण की क्रिया को सुनना कहा जाता है। कान से कुछ सुनकर उसे समझने की चेष्टा ही श्रवण है। अतः श्रवण कौशल का अर्थ है भाषा की उच्चरित ध्वनियों को सुनना, समझना, अर्थ ग्रहण करना और स्मरण रखना है। श्रवण कौशल का संबंध भाषा की उच्चारण प्रकृति, अनुतान, बलाधात, शब्द-अर्थ आदि व्याकरणिक संरचनाओं के साथ है। अतः यह आवश्यक है कि छात्र-छात्राओं में शिक्षक पर्याप्त श्रवण कुशलता का विकास करें।

प्रक्रिया : श्रवण कौशल की प्रक्रिया में तीन स्तर हैं :

1. (क) भाषा की सार्थक ध्वनियों की पहचान

(ख) मातृभाषा - अन्यभाषा के अंतर की पहचान

जैसे - सादा - साधा, साधा - सादा
दान - धान, धान - दान

2. अवधारण (स्मरण रखना)

जैसे - दीवार, खिड़की, रथामपट, पत्ता, मेज ।

3. बोधन एवं अर्थग्रहण (अर्थ ग्रहण करते हुए समझना)

जैसे - बुरा, दरवाजा, नभ, अभिलाषा

4.5.1.1. सोपान :

श्रवण कौशल को विकसित करने के मुख्य सोपान :

1. ध्वनियों का सही उच्चारण (शिक्षक द्वारा)

2. ध्वनियों का श्रवण (छात्रों के द्वारा)

3. अनुतान और साँचों का श्रवण

4. व्याकरणिक रूपों का श्रवण

5. प्रसंग और संदर्भ का अनुसरण

6. बोधन और अर्थग्रहण ।

१. ध्वनियों का श्रवण :

श्रवण – कौशल को विकसित करने के लिए निम्नलिखित कार्यक्रम अपनाए जा सकते हैं :

- (i) छात्रों के सामने शिक्षक या अन्य किसी वक्ता, संगीतकार आदि के द्वारा आदर्श उच्चारण प्रस्तुत करना चाहिए।
- (ii) दूरदर्शन, आकाशवाणी, और टेप, सीड़ी, कम्प्यूटर आदि साधनों द्वारा कई कार्यक्रमों को सुनाया जाए।
- (iii) वादविवाद, भाषण आदि कराए जाएँ।
- (iv) इस कार्य में सुनियोजित रूपसे शिक्षण– बिन्दुओं का चयन करके अभ्यास कराया जाए। जैसे – हस्त - दीर्घ स्वरों का स्पष्ट उच्चारण, समान तथा भिन्न उच्चारणवाली ध्वनियाँ, साँचे, ध्वनि युग्म आदि;

जैसे –

दिन – दीन,	जाति – जाती,	जल – जाल
दाल – डाल,	काना – खाना,	बालू – भालू
बात – सात,	कलम – कमल,	मार – हार

इ – ई, उ – ऊ / इ – उ, ई – ऊ

- नवीन ध्वनियों का श्रवण-अभ्यास कराया जाए।
- समस्यापूर्ण ध्वनियों का श्रवण-अभ्यास कराया जाए।
- जैसे –

दाल – डाल,	काल – खाल,	दिन – दीन
वार – बार,	बात – वात,	बाल – भाल।

२. अनुतान साँचों का श्रवण :

- सामान्य कथन, प्रश्न, आदर्श, विस्मय आदि भावों को व्यक्त करने के लिए वक्ता की आवाज का उतार - चढ़ाव ही अनुतान है। इसलिए छात्रों को अनुतान साँचों का श्रवण-अभ्यास कराया जाए। जैसे – निम्न वाक्यों को विभिन्न अनुतानों में बोलकर भिन्न-भिन्न अर्थों का बोध कराया जाए।

जैसे -

सामान्यकथन	-	यह घर है ।
प्रश्न	-	यह घर है ?
निषेध	-	यह घर नहीं है ।
प्रश्न	-	क्या यह घर नहीं है ?
अवज्ञा	-	क्या यह भी घर है ?
निश्चय	-	यह घर ही है ।
विस्मय	-	वाह रे मेरा घर !

3. व्याकरणिक रूपों का श्रवण :

- छात्रों को व्याकरणिक विशेषताओं (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया-विशेषण, लिंग, वचन, काल, वाच्य आदि) से परिचित कराना ।
- एक ही शब्द काल, वचन, लिंग तथा पुरुष के अनुरूप किस प्रकार परिवर्तित होता है और विशेष अर्थ का द्योतक होता है, इसकी पहचान कराना और आदत डालना ।

जैसे -

लिंग	-	कुत्ता दौड़ रहा है ।	कुत्तिया दौड़ रही है ।
वचन	-	नदी बह रही है ।	नदियाँ बह रही हैं ।
काल	-	वह पढ़ रहा है ।	(वर्तमान काल)
		समेश ने पढ़ा था ।	(भूत काल)
		सीता नाचेगी ।	(भविष्यत काल)
सर्वनाम	-	वह खाएगा ।	आप खाएँगे ।
		तुम खाओगे ।	हम खाएँगे ।

4. संदर्भ में अर्थ ग्रहण :

: शब्दों का अर्थ

- शब्दों, वाक्यांशों, वाक्यों के माध्यम से संदर्भ वाक्यों द्वारा अर्थ ग्रहण करना सिखाया जाए ।
- संदर्भ वाक्य छात्रों को बार-बार सुनाया जाए । धीरे-धीरे वे कुछ शब्दों का ध्वन्यात्मक अन्तर स्वयं जान जाते हैं, जैसे -

लोक - लोग		
आकाश लोक	मर्त्य लोक	पाताल लोक ।
आकाश लोक में देवगण रहते हैं ।	मर्त्य लोक में हमलोग रहते हैं ।	पाताल लोक में सहस्र नाग रहते हैं ।

4.5.2. भाषण कौशल

अर्थ : भाषण का अर्थ है बोलना । छात्रों में ऐसी योग्यता उत्पन्न करना चाहिए जिससे वे अपने भावों तथा विचारों को शुद्ध रूप से बोल सकें और दूसरे लोग उसे समझ सकें । अतः छात्रों को ध्यानियों, शब्दों, वाक्यांशों तथा वाक्यों का सही उच्चारण बार-बार कराना आवश्यक है ।

प्रक्रिया : भाषण की प्रक्रिया में दो मुख्य अंग हैं :

- उच्चारण

- मौखिक अभिव्यक्ति

1. उच्चारण : छात्रों को अन्य भाषा की ध्वनि-व्यवस्था के अनुरूप ध्यानियों, शब्दों, वाक्यांशों, वाक्यों का सही उच्चारण सिखाना ।

- छात्रों को अनुतान (आवाज के उत्तार-चढ़ाव, बलाधात (शब्द विशेष पर बल),
- विवृति (सीमा संकेत) के आधार पर बोलना सिखाना ।
- उच्चारण स्थान, उच्चारण प्रयत्न, तथा वितरण के आधार पर बोलना सिखाना,
- अनुकरण-अभ्यास कराना ।
- सुनो और कहो का अभ्यास कराना ।
- व्याकरणिक संरचना का अभ्यास सिखाना ।

2. मौखिक अभिव्यक्ति :

- साँचा अभ्यास कराना
- स्थानापन्न सारणी अभ्यास कराना
- अनुकरण-सारणी अभ्यास सिखाना
- देखो और कहो का अभ्यास कराना
- प्रश्नोत्तर का अभ्यास कराना
- वार्तालाप का अभ्यास कराना ।

4.5.2.1. सोपान

भाषण-अभ्यास के उदाहरण : क – ख, प – फ, च – छ

कल – खल	पल – फल	चल – छल
कल से	पल मे	चल उठ
खल से	फल को	छल मत कर
गीत गाओ	काम करो	पाठ पढ़ो ।
धीरे-धीरे गीत गाओ ।	अच्छा काम करो ।	ठीक से पाठ पढ़ो ।
घोड़ा दौड़ रहा है ।	घोड़ी दौड़ रही है ।	घोड़े दौड़ रहे हैं ।
घोड़ियाँ दौड़ रही हैं ।		

विवृति :

- हराना – हरा + आना ; पढ़ाना – पढ़ा + आना
- पीली – पी + ली ; जलसा – जल + सा
- मैंने उसे हराया । वह उसे हरा आया ।
- यह साड़ी पीली है । उसने चाय पी ली ।

बलाधातः

- रोको मत, जाने दो । रोको, मत जान दो ।
- सोओ, मत उठो । सोओ मत, उठो ।
- 'उसने रोटी नहीं खाई । उसने 'रोटी नहीं खाई ।

प्रश्नोत्तरः

शिक्षक – कल तुम स्कूल क्यों नहीं आए थे ?

छात्र – सर, मैं बीमार पड़ गया ।

शिक्षक – क्या हो गया ?

छात्र – मुझे बुखार हो गया था ।

शिक्षक – क्या तुमने कोई दवा ली है ?

छात्र – जी हाँ ।

शिक्षक – अब कैसी तबीयत है ?

छात्र – सर, अब ठीक हूँ ।

वार्तालापः

शिक्षक – हमारे घर में चावल नहीं है । (क्या)

छात्र – क्या हमारे घर में चावल नहीं है ?

शिक्षक – तुम्हे मेरी बात सुननी चाहिए । (ध्यान से)

छात्र – तुम्हें मेरी बात ध्यान से सुननी चाहिए ।

शिक्षक – उसने मुझसे प्रश्न पूछा । (वे)

छात्र – उन्होंने मुझसे प्रश्न पूछा ।

वाक्य विस्तारः

शादी होगी ।

मेरी बहन की शादी होगी ।

गुरुवार को मेरी बहन की शादी होगी ।

गुरुवार को मेरी बहन की शादी शहीद नगर के कल्याण-मण्डप में होगी ।

रूपातरण :

माँ रसोई बनाती है ।

आजकल माँ से रसोई नहीं बन पाती ।

रिक्त स्थान पूरण :

- यद्यपि शिक्षक जानी है फिर भी _____ है । (गरीब, बदमाश)
- कल तुमने मुझे पैसा क्यों नहीं दिया ? (आश्चर्य)
- कौन ! मैं ! अरे, मैंने तो पैसा दिया था ।
- तुम्हारा घर कहाँ है ? (प्रश्नोत्तर)
मेरा घर चन्दनपुर में है ।
- मेरे को कुछ नहीं पता । (संशोधन)
मुझे कुछ पता नहीं है ।

4.5.3. वाचन कौशल :

अर्थ : वाचन कौशल का अर्थ है भाषा के लिपि प्रतीकों की पहचान तथा उनका सही उच्चारण तथा

अर्थ - ग्रहण करना । शिक्षार्थी मातृभाषा के श्रवण तथा भाषण कौशल से परिचित होता है ।
इसमें वह अन्य भाषा में प्रयुक्त लिपि चिह्नों को पहचानता है, सीखता है और उसमें निहित
भावों तथा विचारों को समझना सीखता है ।

प्रक्रिया : लिपि संकेतों या वर्णों का उनसे संबंधित ध्वनियों के साथ सामंजस्य स्थापित करने की
प्रक्रिया ही वाचन है । इसमें मुख्य रूप से दो प्रक्रियाओं का समावेश होता है -

- लिपि प्रतीकों की पहचान और उनका सही उच्चारण ।
- भावों और विचारों के अनुरूप पाठ तथा अर्थग्रहण

लिपि प्रतीकों की पहचान में छात्र पहले लिपि-प्रतीकों की बनावट पहचानता है और उसे याद रखता है। इसके आधार पर उसमें गठित शब्दों, वाक्याशों तथा वाक्यों को पहचानने, समझने तथा अंतर करने की योग्यता का विकास होता है।

अर्थग्रहण में छात्र शब्दों, वाक्याशों, वाक्यों से अभिव्यक्त भावों तथा विचारों को समझना सीखता है। अतः अर्थग्रहण की योग्यता ही वाचन-कौशल का आधार-स्तंभ है।

4.5.3.1. सोपान :

वाचन शिक्षण के छह सोपान हैं:

1. वर्णमाला का परिचय देना तथा शब्द पहचानना सिखाना। समान बनावटवाले वर्ण से बने शब्दों का वाचन अभ्यास कराना।

जैसे – हारा, सारा, मारा, धारा, लारा

पल, फल, हल, टल, कल

- वाचन शिक्षण के समय शिक्षक के वाचन का अनुकरण-वाचन कराना (सामूहिक, टोलीगत, व्यक्तिगत रूप से)
- 2. श्रवण – भाषण अभ्यास द्वारा सीखे गए वार्तालाप के आधार पर सस्वर वाचन-अभ्यास कराना। इससे छात्र वाक्य से व्यक्त अर्थ को समझने लगता है।

लड़का गया।

लड़का स्कूल गया।

लड़का सुबह स्कूल गया।

लड़का सुबह अपनी किताबें लेकर स्कूल गया।

3. छात्र पहले तो शिक्षक के निर्देशन से वाचन करे। अभ्यास हो जाने पर वह खुद वाचन करने लगता है। विविध वाक्य साँचों, शब्दावली तथा संदर्भगत भाषा-व्यवहार का ज्ञान प्राप्त करने के बाद वह पत्र-पत्रिकाओं, तथा कहानी पुस्तकों को भी पढ़ने लगता है।
4. फिर गहन तथा विस्तृत वाक्य शिक्षण पर बल देना होगा। इस सोपान में छात्र मौन वाचन करता है। वह रुचि के अनुरूप कथा- साहित्य, इतिहास, भूगोल, विज्ञान आदि विषयों का भी वाचन करके समझने लगता है।
5. इसमें विस्तृत वाचन अधिक, मौन वाचन अधिक परंतु सस्वर वाचन कम होता है। छात्र शिक्षक के निर्देशन के बिना विविध विषय सामग्री का मौन वाचन करता है।
6. इसमें छात्र द्रुत गति से मौन वाचन करते हुए उसमें व्यक्त भावों- विचारों को समझकर आनन्द प्राप्त करता है। वह शब्दकोशों, विश्वकोशों तथा अन्य संदर्भ ग्रन्थों से उपयोगी सामग्री का चयन कर वाचन करने में भी समर्थ हो जाता है।

वाचन शिक्षण के कुछ अभ्यास :

- अक्षर ज्ञान परीक्षण :

पहचानो और ठीक चिह्न लगाओ-

ट, ल, फ, ह, य, झ, व, ख

व	क	ट	फ	ल	ख	ह	झ	च	म	य	ण	छ
---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---

- श्यामपट पर चित्र बनाइए और शब्द का वाचन करवाइए :

चश्मा

पपीता

कंप्यूटर

घड़ी

- इन शब्दों को ठीक से पढ़ो—

घर, रचना, कहानी, वस्तु, अंकन, प्रदर्शनि, झूठ, शहर, नौकर, मातृभाषा।

- इस अनुच्छेद का सही-सही वाचन करो—

गोपाल मेरा भाई है।

वह समाचार पत्र पढ़ रहा है।

मेरी छोटी बहन स्कूल जा रही है।

मेरी माँ हिन्दी पढ़ रही है।

हम सब घर में मिल-जुलकर रहते हैं और हर काम में एक दूसरे का साथ देते हैं।

- सही गति से वाचन के लिए एक गद्य पाठ और एक कविता भी दीजिए।

- पढ़कर शुद्ध शब्द पर (✓) चिह्न लगाओ :

बच्चों / बच्चो, नदियाँ / नदीयाँ, उन्होंने / उहोंने,

स्कूल / स्कुल, किजीए / कीजिए।

- पढ़कर शुद्ध वाक्य पर (✓) चिह्न लगाओ—

मोहन अच्छा लड़का है।

मोहन अच्छे लड़का है।

लड़की खायी।

लड़की ने खाया।

चाय अच्छी बनी है।

चाय अच्छा बना है।

आइए, बैठे।

आइए, बैठिए।

कौन खेल रहा है ?

कौन खेल रही है ?

- कोष्ठक में से सही शब्द चुनकर पूरे वाक्य को पढ़ो—

हमारे देश का नाम _____ है। (भारत / पाकिस्तान)

मेरी _____ खो गई। (किताब / ग्रन्थ)

क्या तुमने आज _____ खाया ? (रोटी / चावल)

अशोक चक्र _____ चक्र है । (धर्म / अधर्म)

इस तालाब में _____ हैं । (मछलियाँ / अंडे)

4.5.4. लेखन कौशल :

अर्थ : प्रतेक भाषा की अपनी लिपि व्यवस्था होती है । ध्वनियों का लिपि संकेतों में रूपान्तरण ही लेखन कहलाता है । 'लेखन' मौखिक भाषा को दृश्य चिह्नों में अंकित करने की प्रणाली है । ध्वनियों के लिखित प्रतीक वर्ण / अक्षर / शब्द / वाक्य आदि कहलाते हैं ।

उद्देश्य :

- छात्रों में लेखन संबंधी विविध कौशलों के समन्वित प्रयोग की योग्यता उत्पन्न करना ।
- शब्दों के चयन, उनकी वर्तनी तथा विचारों के अनुकूल वाक्य रचना का कौशल विकसित करना ।
- छात्रों की योग्यता और अभिरुचि के अनुसार उन्हें लेखन के लिए तैयार करना ।

4.5.4.1. प्रक्रिया के सोपान :

- लेखन कौशल की प्रक्रिया के आधार पर इसके तीन सोपान हैं :

1. वर्ण लेखन

2. वर्तनी ज्ञान

3. रचना

1. वर्ण लेखन : वर्ण लेखन में कई प्रणालियाँ हैं :

- (i) रेखांकन प्रणाली – वच्चों को पहले आड़ी-तिरछी, सीधी-गोल, टेढ़ी-मेढ़ी, वृत्ताकार-अर्धवृत्ताकार, रेखाएँ खींचना सिखाना ।

— / \ ' | ° O C D U , —

(ii) शिक्षक स्लेट / श्यामपट पर बड़े - बड़े सुडौल और स्पष्ट वर्ण / शब्द लिखेंगे, फिर छात्र अनुकरण करते हुए लिखेंगे ।

ठ ग न म भ ल ख ध

(iii) प्रत्यंकन अभ्यास से -

म न र न न न

त त त त त त

(iv) अनुकरण अभ्यास से -

देखो देखो देखो

(v) श्रुतलेखन अभ्यास से -

शिक्षक कुछ शब्द बोलेंगे और छात्र सुनकर लिखेंगे ।

2. वर्तनी ज्ञान :

शब्दों के ध्वनिक्रम को वर्तनी या हिज्जा कहते हैं । सही उच्चारण के साथ-साथ सही वर्तनी में लिखना भी जरूरी है । प्रत्येक भाषा की अपनी वर्तनी-व्यवस्था है । उसे सीखना जरूरी है ।

अभ्यास :

(क) सही अक्षर से रिक्त स्थान की पूर्ति से -

क — म, अमरू —, शि — क (द, ल, क्ष)

(ख) शुद्ध वर्तनी चयन से -

किताब / कीताब, कूर्सी / कुर्सी

(ग) शुद्ध और अशुद्ध शब्दों की सूची बनाकर - इसका कागजी (ii)

अशुद्ध	शुद्ध
लिखीए	लिखिए
अछा	अच्छा
व्यक्ति	व्यक्ति
विषय	विषय
पुरुष	पुरुष

(घ) वचन बदलाकर :

एकवचन	बहुवचन
लड़का	लड़के
लड़की	लड़कियाँ
बेटा	—
बहू	—

(ड) विपरीत लिंग के शब्द लिखकर -

पुंलिंग	स्त्रीलिंग
—	रानी
माली	—
हाथी	—

(च) विलोम शब्द लिखो -

रात, अन्त, पूर्व, दुःख, स्वर्ग

(छ) शुद्ध करके लिखो -

उचारण, लिपी, देवनागरि, ध्वनी, तिसरा, जोजना

(ज) क्रिया पद से वाक्य पूर्ण करके लिखो -

सीता _____ है।

गोपाल रोटी _____ था।

मैं स्कूल नहीं _____।

3. रचना : रचना से तात्पर्य विचारों की क्रमबद्ध लिखित अभिव्यक्ति से है।

छात्र अपने भावों, विचारों को लिखित रूप से स्पष्ट और रोचक ढंग से व्यक्त करते हैं।

शिक्षण की दृष्टि से रचना का क्षेत्र वाक्य-रचना, अनुच्छेद-रचना से लेकर सर्जनात्मक लेखों तक विस्तृत है।

उद्देश्य :

- छात्र अन्य भाषा के शब्दों, वाक्य-संरचनाओं का समुचित प्रयोग कर सके।
- छात्र में क्रमबद्ध चिंतन-शक्ति की कुशलता विकसित हो।
- लेख के माध्यम से छात्र आत्माभिव्यक्ति में समर्थ हो सके।
रचना लेखन निम्नलिखित अभ्यासों से किया जा सकता है:
 - पुनर्कथन अभ्यास : छात्र मौखिक रूप से सीखी गई वार्ता या पठित लघु-कथा आदि को पुनः कहने या लिखने का अभ्यास करे।
 - पुनर्योजन अभ्यास : छात्र वाक्य साँचों को निर्देशानुसार परिवर्तन करके पुनः लिखने का अभ्यास करे।

वाक्य रचना अभ्यास -

सारणी आधारित वाक्य रचना

मैं	कटक		रहता/रहती/रहते	हूँ/ हैं/हैं
मेरा भाई	दिल्ली			
मेरी छोटी बहन	पाँचवीं कक्षा	में	पढ़ता/पढ़ती/पढ़ते	
मेरे पिताजी	सातवीं कक्षा			
	दसवीं कक्षा			

अनुकरण आधारित वाक्य रचना :

मिलान करके लिखो :

'क'	'ख'
चिड़िया	सब्जी बनाती है ।
कुत्ता	नाटक लिखा ।
माँ	दौड़ रहा है ।
उन्होंने	डाली पर बैठी है ।
वे	घड़ी देख रहे हैं ।

वाक्य विस्तार अभ्यास :

छोटे वाक्यों को कोष्ठक में से शब्द चुनकर बड़े वाक्यों में विस्तार करके लिखो :

1. मुरली जा रहा है । (ऑफिस, रोज, दस बजे)

2. गीता नाच रही है । (मंच पर, कथकली, अपनी सहेली के साथ)

3. वे लिखते हैं । (कहानी, प्रतिदिन, व्यंग्य कहानी)

■ वाक्य-अनुवाद अभ्यास - रचना - अभ्यास के लिए आरंभ में छोटे-छोटे सरल वाक्यों का चयन करके अनुवाद कराया जाए; जैसे -

हिन्दी - हम सब हिन्दी पढ़ेंगे ।

ଓଡ଼ିଆ - ଆମେ ସମ୍ମାନ ହିନ୍ଦୀ ପଢ଼ିବା ।

ହିନ୍ଦୀ - ଆପ କହାଁ ନୌକରୀ କରତେ ହୁଁ ?

ଓଡ଼ିଆ - ଆପଣ କେଉଁଠି ଢାକିରି କରନ୍ତି ?

• ରିକ୍ତ ସ୍ଥାନ କୀ ପୂର୍ତ୍ତି କେ ଆଧାର ପର ଅନୁଚ୍ଛେଦ, କହାନୀ, ପତ୍ର ତଥା ନିବଂଧ ଲେଖନ କା ଭୀ ଅଭ୍ୟାସ କରାଯା ଜାଏ ।

• ବାକ୍ୟ ସଂଶୋଧନ ଅଭ୍ୟାସ କେ ଦ୍ୱାରା -

(i) ବହୁ ଵିକଳ୍ପ ଅଭ୍ୟାସ : ଇସମେ କେଵଳ ଏକ ହିଁ ବିକଳ୍ପ ସହି ହୈ ।

ଜୈସେ -	(ଏହି)	ସିନେମା ହୋଲ୍	ଫିଲ୍ମ୍ ପାଇଁ ବିଶେଷ ଅଭ୍ୟାସ
ଛାତ୍ର	କିମ୍ବା	କିମ୍ବା	ମେଂ ପଢ଼ ରହା ହୁଁ ।

(ii) ସହି ପରସର୍ଗ ଚୟନ କରକେ ଲିଖୋ :

• ମୈ ଘର ————— ରହତା ହୁଁ ।

• ଉସ ————— ମୁଝେ ମାରା ।

• ରମେଶ କୋ ଚାର ଦିନ ————— ଛୁଟୀ ଚାହିଁ ।

• ଵହ ଘର ————— ବାହର ଚଲା ଆୟା ।

• କୁତେ ନେ ପାନୀ ————— କ୍ୟା ଦେଖା ?

(ମେଂ, ସେ, କୀ, ନେ, ପର)

■ କ୍ରମାନୁସାର ସଜାକର ଲିଖନେ କା ଅଭ୍ୟାସ କରାଯା ଜାଏ ।

ଜୈସେ - • ଜା ରହେ ହୁଁ ଜଗନ୍ନାଥ କେ ଦର୍ଶନ କେ ଲିଏ ବେ ପୁରୀ ।

• ମେହମାନୋ ହମାରା ସତ୍କାର କା ଧର୍ମ ହୈ କରନା ।

छात्र इन वाक्यों को व्यवस्थित रूप से क्रमानुसार लिखेंगे -

- वे जगन्नाथ के दर्शन के लिए पुरी जा रहे हैं।
- मेहमानों का सत्कार करना हमारा धर्म है।
- वाक्य रूपान्तरण-अभ्यास कराया जाए। इसमें प्रश्न सूचक शब्दों (क्या, कब, कौन, क्यों आदि) का प्रयोग करते हुए अभ्यास कराया जा सकता है।
जैसे - ● उसकी बेटी चल वसी। (कौन)
 ● वह कहानी पढ़ रहा है। (क्या)
 ● तुम टिकट खरीदने जा रहे हो। (क्यों)
 ● मैं ग्रीष्मावकाश में दिल्ली जाऊँगा। (कब)

इस प्रकार शिक्षक कई अभ्यासों के आधार पर छात्रों में लेखन-कौशल का विकास कर सकते हैं।

4.6. इस इकाई से आपने जो सीखा

- हिन्दी शिक्षण : ओडिशा में हिन्दी को तृतीय भाषा का स्थान मिला है। ओडिआ, अंग्रेजी के साथ छात्र स्कूल में हिन्दी भी पढ़ते - लिखते हैं। हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा और राजभाषा है। यह अत्यंत सरल और बोधगम्य भाषा है। इसलिए प्रत्येक स्कूल में बच्चों को हिन्दी पढ़ाई जाती है। इसकी उपयोगिताएँ सर्वाधिक हैं। शिक्षक विभिन्न शिक्षण विधियाँ अपनाकर छात्रों को हिन्दी पढ़ाते हैं।
- तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण का अर्थ व महत्व :

- विद्यालयों में हिन्दी शिक्षण अत्यंत आवश्यक है।
- विस्तृत क्षेत्र में विचार विनिमय करने के लिए।
- ज्ञानार्जन को विस्तारित करने के लिए।

- नवीन संस्कृति का परिचय प्राप्त करने के लिए।
- साहित्यिक रसास्वादन तथा आनन्द के लिए।
- अपने व्यक्तित्व के परिमार्जन के लिए।
- व्यावसायिक कुशलताओं को विकास करने के लिए हिन्दी भाषा का महत्व सर्वधिक है।

■ भाषाई कौशल :

1. श्रवण कौशल :

- भाषा की उच्चरित ध्वनियों को सुनना, समझना, अर्थ ग्रहण करना और स्मरण करना है।
 - इसमें तीन स्तर हैं-
 - ध्वनियों की पहचान (समानता / असमानता के आधार पर)
 - स्मरण रखना
 - अर्थ समझकर ग्रहण करना
- इसके लिए पर्याप्त अभ्यास की आवश्यकता है।

2. भाषण कौशल :

- छात्र में अपने भावों, विचारों को स्पष्ट रूप से बोलने की योग्यता उत्पन्न करना।
- छात्र को हिन्दी भाषा की ध्वनियों, शब्दों, वाक्यांशों, वाक्यों का उच्चारण सिखाना।
- अनुतान, बलाधात, विवृति के आधार पर बोलना सिखाना।
- व्याकरणिक संरचना का अभ्यास कराना।

3. वाचन कौशल :

- हिन्दी भाषा के लिपि प्रतीकों की पहचान कराना ।
- उनका उच्चारण तथा अर्थ ग्रहण सिखाना ।
- ध्वनियों, शब्दों, वाक्यांशों, वाक्यों को समझाना तथा अंतर बताना ।
- बार-बार सही रूप से अनुकरण वाचन कराना ।

4. लेखन कौशल :

- मौखिक भाषा को दृश्य चिह्नों में अंकित करने की प्रणाली बताना ।
- शब्दों के चयन, उनकी वर्तनी, वाक्य रचना का कौशल सिखाना ।
- इसके तीन सोपान हैं – वर्ण लेखन, वर्तनी ज्ञान और रचना । इनके आधार पर विभिन्न प्रकार के अभ्यास कराना ।

4.7. स्वमूल्यांकन के प्रश्न :

1. सही शब्द से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए :

- (क) बालक _____ सहज और स्वाभाविक रूप से सीखता है । (मातृभाषा / अन्यभाषा)
- (ख) बालक विद्यालय में परिश्रम तथा अभ्यास करके _____ सीखता है ।
(मातृभाषा / अन्यभाषा)
- (ग) ओडिशा में हिन्दी _____ भाषा के रूप में सिखाई जाती है । (प्रथम / तृतीय)
- (घ) ओडिशा से बाहर जाने पर हमें _____ भाषा बहुत सहायता करती है ।
(ओडिआ / हिन्दी)
- (ङ) _____ हमारी राष्ट्रीय अस्मिता की मुख्य भाषा है । (अंग्रेजी / हिन्दी)

2. सही उत्तर में (✓) निशान लगाइए -

- (क) हिन्दी-भाषा-शिक्षण का उद्देश्य विचार-विनिमय क्षेत्र का विस्तार करना है ।
- (ख) भाषा का शिक्षण भाषाई कौशलों का विकास करना है ।
- (ग) श्रवण कौशल गौण है और लेखन कौशल मुख्य कौशल है ।
- (घ) श्रवण कौशल में उच्चरित ध्वनियों को सुनना, समझना, अर्थ ग्रहण करना होता है ।
- (ङ) भाषण की प्रक्रिया में मौखिक अभिव्यक्ति एक अंग है ।

3. कोष्ठक में कौशल का नाम लिखिए :

- (क) छात्रों में लेखन संबंधी कुशलताओं का विकास करना है । []
- (ख) भाषा की उच्चारण प्रकृति, अनुतान, बलाधात, व्यवस्था तथा व्याकरण संरचनाओं के साथ संबंधित कौशल है । []
- (ग) छात्र अपने भावों तथा विचारों का शुद्ध रूप से बोल सके । []
- (घ) अर्थग्रहण की योग्यता इस कौशल का आधार स्तंभ है । []
- (ङ) शब्दों के चयन, उनकी वर्तनी तथा रचना कौशल का विकास करना है । []

4. उचित शब्द से शून्यस्थान भरिए :

(क) श्रवण कौशल के तीन स्तर हैं :

• पहचान

• _____

• बोधन, अर्थग्रहण

(ख) भाषण कौशल के दो स्तर हैं :

• _____

• मौखिक अभिव्यक्ति

- (ग) वाचन कौशल के दो स्तर हैं : • लिपि प्रतीकों की पहचान,
- (घ) लेखन कौशल के तीन स्तर हैं : •
- वर्तनी ज्ञान
 - रचना
- (ङ) श्रवण कौशल के सोपान हैं : • ध्वनियों का श्रवण

4.7. स्वमूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर :

1. (क) मातृभाषा (ख) अन्य भाषा (ग) तृतीय भाषा
- (घ) हिन्दी (ङ) हिन्दी
2. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✓
3. (क) लेखन कौशल (ख) श्रवण कौशल (ग) भाषण कौशल
- (घ) वाचन कौशल (ङ) लेखन कौशल
4. (क) अवधारण
- (ख) उच्चारण
- (ग) भाव और अर्थ ग्रहण
- (घ) वर्ण लेखन
- (ङ) अनुतान और साँचों का श्रवण

4.9. इकाई की समाप्ति के बाद के प्रश्न

1. भाषा-शिक्षण के पाँच उद्देश्यों को समझाइए।
2. श्रवण-कौशल का अर्थ और प्रक्रिया क्या है?
3. श्रवण-कौशल विकसित करने के सोपान लिखिए।
4. भाषण-कौशल का अर्थ और उसकी प्रक्रिया लिखिए।
5. भाषण-कौशल विकसित करने के लिए चार प्रकार के अभ्यास कीजिए।
6. वाचन-कौशल से आप क्या समझते हैं? उसकी प्रक्रिया पर प्रकाश डालिए।
7. वाचन-कौशल विकसित करने के मुख्य सोपानों पर प्रकाश डालिए।
8. लेखन-कौशल के अर्थ और सोपानों को लिखिए।

4.10. संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. भाषा 1, 2 की शिक्षण विधियाँ और नियोजन - डॉ. लक्ष्मी नारायण शर्मा
2. भाषा शिक्षण सिद्धांत और प्रविधि - मनोरमा गुप्त
3. लिंगिविस्टिक्स एंड सेकेंड लैंग्वेज पेडागजी - ई. ग्लीन . लीविस
4. साइको लिंगिविस्टिक्स - जोसफ्ट केश
5. सेकेंड लैंग्वेज लर्णिंग - पल खिष्टोफर सन

UNIT - 5

इकाई - 5

भाषा-शिक्षण की विधियाँ

5.0. भाषा-शिक्षण की विधियाँ

5.1. प्रारंभ

5.2. उद्देश्य

5.3. व्याकरण - अनुवाद विधि

5.4. संरचना विधि

5.5. अधिक्रमित स्वाध्याय विधि

5.6. समन्वित विधि

5.7. इस इकाई से आपने जो सीखा

5.8. स्वमूल्यांकन के उत्तर

5.9. स्वमूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर

5.10. इकाई की समाप्ति के बाद के प्रश्न

5.11. संदर्भ ग्रन्थों की सूची

5.0. भाषा शिक्षण की विधियाँ

5.1. प्रारंभ :

भाषा शिक्षण में शिक्षण विधियाँ बहुत महत्वपूर्ण हैं। इनसे शिक्षण-अधिगम (सिखाना-सीखना) की प्रक्रिया को एक सुनिश्चित और सु-व्यवस्थित दिशा मिलती है। भाषा शिक्षण की विधि को उनकी विशेषताओं के द्वारा समझा जा सकता है। शिक्षक इन विधियों की सहायता लेकर छात्र-छात्राओं में वांछित और विकासात्मक परिवर्तन करते हैं।

5.2. उद्देश्य :

- शिक्षण - अधिगम (सिखाने-सीखने) की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित बनाना।
- शैक्षिक प्रणाली से लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायता करना।
- अन्य भाषा की ध्वनियों, शब्दों, वाक्यांशों, पदबंधों तथा वाक्यों का सही प्रयोग कर पाना।
- मुहावरों - लोकोक्तियों को समझाना तथा उनका प्रयोग सिखाना।
- भाषाई कौशलों - श्रवण (सुनना), भाषण (बोलना) वाचन (पढ़ना) लेखन (लिखना) को सिखाना।

5.3. व्याकरण - अनुवाद विधि :

उद्देश्य : भाषा शिक्षण में यह एक मुख्य विधि है। इसमें छात्रों को व्याकरण तथा अनुवाद के नियमों के आधार पर भाषा सिखाई जाती है। परंपरागत शब्दावली में लिखित व्याकरण के नियमों को समझाना इसका उद्देश्य है। मातृभाषा से अन्य भाषा में और अन्य भाषा से मातृभाषा में अनुवाद करने की क्षमता का विकास भी इस विधि से होता है।

अर्थ : इसमें दो मुख्य तत्व हैं : व्याकरण और अनुवाद। व्याकरण में व्याकरणिक नियमों को स्पष्ट किया जाता है जिससे छात्र-छात्राएँ शुद्ध रूप से बोल और लिख पाते हैं। अन्य भाषा की

ध्वनियों, शब्दों, अर्थों तथा काल-वचन-लिंग-कारक के परिवर्तन को समझाया जाता है। इस प्रकार व्याकरण की मदद से शुरू से ही शुद्ध भाषा सिखाई जाती है।

अन्य भाषा सिखाने में मातृभाषा भी मदद करती है। मातृभाषा के वाक्यों को अन्य भाषा में और अन्य भाषा के वाक्यों को मातृभाषा में अनुवाद करना एक अनुप्रयोगात्मक क्रिया है। इसके आधार पर शिक्षक नई भाषा को जल्दी सिखा सकते हैं।

प्रक्रिया : शिक्षक व्याकरण के नियमों को 'सरल से जटिल की ओर' सूत्र से बताएँगे। उन्हें विभिन्न प्रकार की वाक्य संरचनाओं को सुनकर बोलने के लिए प्रोत्साहित करेंगे। मातृभाषा (सोत भाषा) से अन्य भाषा (लक्ष्य भाषा) और अन्य भाषा से मातृभाषा में अनुवाद करके भाषा के अर्थों को स्पष्ट करेंगे।

प्रयोग : आइए, व्याकरण विधि का प्रयोग करके भाषा सीखें —

कुत्ता भौंक रहा है ।  बिल्ली सो रही है

चहा भाग रहा है। चिड़िया उड़ रही है

नियम : पुलिंग एकवचन कर्ता के साथ पुंलिंग एकवचन की क्रिया और स्त्रीलिंग एकवचन कर्ता के साथ स्त्री लिंग एकवचन की क्रिया होती है।

चार सिपाही लड़ते हैं । पाँच अध्यापिकाएँ लिखती हैं

नियम : कर्ता पुंलिंग बहुवचन में होता है तो क्रिया भी पुंलिंग बहुवचन में, कर्ता स्त्री लिंग बहुवचन में होता है तो क्रिया भी स्त्री लिंग बहुवचन में होती है ।

यह नया पौधा है । ये नए पौधे हैं

यह काला कपड़ा है । ये काले बादल हैं

नियम : विशेषण 'नया'/काला बहुवचन में नए/काले हुए हैं:

पुंलिंग आकारांत विशेषण बहुवचन में एकारांत हो जाता है

पुंलिंग आकारांत विशेषण स्त्रीलिंग में ईकारांत हो जाते हैं।

वह अच्छा लड़का है ।

वह अच्छी लड़की है ।

वे अच्छे लड़के हैं ।

वे अच्छी लड़कियाँ हैं ।

नियम : विशेषण पदों पर संज्ञा के लिंग और वचन का प्रभाव पड़ता है । ऊपर के वाक्यों में – लड़का पुंलिंग है, इसलिए अच्छा हुआ, लड़की स्त्री लिंग है, इसलिए अच्छी हुआ । लड़के पुंलिंग बहुवचन होने के कारण अच्छे, और लड़कियाँ स्त्री लिंग बहुवचन होने के कारण अच्छी हुआ । (अच्छा-अच्छी-अच्छे)

आइए, अनुवाद विधि पर आधारित कुछ उदाहरण देखें :

संरचना - 1 :

1. एक आदमी जा रहा था ।

2. सूरज चमक रहा था ।

3. हवा बह रही थी ।

4. वर्षा हो रही थी ।

इन हिन्दी वाक्यों को ओडिआ में अनुवाद करने के लिए इस प्रकार कार्य करता होगा अपहले कर्ता शब्द का आडिआ में अनुवाद कीजिए फिर क्रिया को लिया जाय । आडिआ में अनुवाद इस प्रकार होगा ।

१. जଣେ ଲୋକ ଯାଉଥିଲା ।

२. ସୂର୍ଯ୍ୟ ଚକମକ୍ କରୁଥିଲା ।

३. ପବନ ବହୁଥିଲା ।

४. ବର୍ଷା ହେଉଥିଲା ।

संरचना - 2 :

इन हिन्दी वाक्यों को देखिए :

- (1) गाँव का आदमी निकल पड़ा ।
- (2) लाल-लाल सूरज उग आया ।
- (3) तुम अपना काम करो ।

इन हिन्दी वाक्यों को ओड़िआ में अनुवाद करने के लिए कर्ता के अनुसार क्रिया होगी ।

ओड़िआ में अनुवाद इस प्रकार होगा :

- (१) गाँव लोकहि बाहारि पଡ଼ିଲା ।
- (२) ଲାଲ ସୂର୍ଯ୍ୟ ଉଦୟ ହେଲା ।
- (୩) ତୁମେ ନିଜ କାମ କର ।

संरचना - 3 :

- (1) आज इतवार है ।
- (2) स्कूल और दफ्तर बन रहे हैं ।
- (3) आज छुट्टी का दिन है ।
- (4) माँ बाजार जा रही है ।
- (5) हम सोमवार को स्कूल जाते हैं ।

इन हिन्दी वाक्यों में कर्ता के अनुसार क्रिया हुई है । इनका ओड़िआ अनुवाद इस प्रकार होगा ।

- (१) ଆଜି ରବିବାର ।
- (୨) ସ୍କୁଲ ଓ ଅଧିକ ଛିଆରି ହେଉଛି ।
- (୩) ଆଜି ଛୁଟି ଦିନ ।
- (୪) ମା' ବଜାର ଯାଉଥିଲା ।
- (୫) ଆମେ ସୋମବାର ଦିନ ସ୍କୁଲ ଯାଉ ।

संरचना - 4 :

- (1) ओडिशा के कुछ नवयुवक विद्यालय खोलना चाहते थे ।
- (2) गोपबन्धु लोक-कल्याण के पक्षधर थे ।
- (3) नदियों में बाढ़ आ गई होगी ।
- (4) समाज पत्रिका के वे संपादक थे ।
- (5) वे भाई-बहन के रिश्ते की दाद देते हैं ।

इन हिन्दी वाक्यों का अनुवाद इस प्रकार होगा :

- (१) ओडिशार केतेक यूवक विद्यालय खोलिबा पाइँ चाहूँथूले ।
- (२) गोपबन्धु जन-कल्याणर समर्थक थूले ।
- (३) नदीमान्डरे बन्या आवि याइथूब ।
- (४) एवे 'समाज' पत्रिकार संपादक थूले ।
- (५) एवे भाऊ-भृष्णुर संपर्ककु प्रशंसा करन्ति ।

संरचना-5 :

- (1) वह कॉलेज जा रहा है ।
- (2) वे लड़कियाँ मंच पर नृत्य करती थीं ।
- (3) हम भारत माता की अच्छी संतानें हैं ।
- (4) तुम अपना जीवन देश - सेवा के लिए कुर्बान करो ।

इन हिन्दी वाक्यों का ओडिआ - अनुवाद इस प्रकार होगा ।

- (१) एवे कलेज याइअछि ।
- (२) एहि द्विअपिलामाने मञ्चरे नृत्य करूथूले ।
- (३) आमे समष्टे भारत मातार भल सत्तान अहूँ ।
- (४) तुमे निज जीवन देशेबारे समर्पण कर ।

5.4. संरचना विधि :

उद्देश्य : भाषा सिखाते समय सिद्धांत बताना, भाषण द्वारा समझाना, उपदेश या निर्देश देना आदि कार्य-विधियाँ छात्रों में कम रुचि पैदा करती हैं। इसके बदले भाषा के साँचों को छाँटकर अभ्यास, अनुकरण तथा स्मरण द्वारा उन्हें आसानी से सिखाया जा सकता है। संरचना विधि इस उद्देश्य को सहज ही पूरा करती है।

अर्थ : इस विधि का आधार साँचा अभ्यास है। भाषाई कौशलों का विकास करना इसका मुख्य लक्ष्य है। अतः शिक्षक सिखाई जानेवाली भाषा की संरचनाओं को छाँटकर छात्रों के सामने रखते हैं; फिर साँचों को बार-बार दुहराया जाता है ताकि वे आवृत्ति-पुनरावृत्ति शैली से खुद प्रयोग कर सकें।

प्रक्रिया : इस विधि की प्रक्रिया में शिक्षक का आदर्श-वाचन, फिर छात्रों द्वारा अनुकरण वाचन होता है। अनेक छात्रों द्वारा बार-बार दुहराने पर साँचे आदत में पड़ जाते हैं। छात्रों द्वारा विभिन्न सदर्भों में वाक्यों की रचना, संशोधन, अनुच्छेद - लेखन आदि कराए जाते हैं। पहले सुनने, फिर बोलने और लिखने के कार्य कराने से सुविधा होती है। इस प्रकार की प्रक्रिया से पाठ रोचक हो जाता है।

प्रयोग : अभ्यास, आवृत्ति, पुनरावृत्ति से छात्र व्याकरण जान जाते हैं। इसमें शिक्षक सर्वदा सतर्क रहकर संशोधन, निर्देशन देता है और छात्र विभिन्न संरचनाओं का प्रयोग करते हैं।

आइए, इस विधि का प्रयोग (विविध साँचों के अभ्यास) करके भाषा सीखें।

संरचना - 1 :

कर्ता पुंलिंग एक वचन

क्रिया भी पुंलिंग एक वचन

मोहन पढ़ता है।

लड़का तैरता है।

कर्ता स्त्रीलिंग एकवचन

क्रिया भी स्त्रीलिंग एकवचन

गीता पढ़ती है।

लड़की तैरती है।

संरचना - 2 :

कर्ता पुंलिंग बहुवचन

क्रिया भी पुंलिंग बहुवचन

गोपाल और मुरली खेलते हैं।
वे देखते हैं।

कर्ता स्त्रीलिंग बहुवचन

क्रिया भी स्त्रीलिंग बहुवचन

सीता और सविता खेलती हैं।
वे (स्त्रियाँ) देखती हैं।

संरचना - 3 :

कर्ता पुंलिंग एकवचन (सर्वनाम)

क्रिया भी पुंलिंग एक वचन में (भूतकाल)

मैं गया था।

वह गया था।

तुम गए थे।

आप गए थे।

कर्ता स्त्रीलिंग एक वचन

क्रिया भी स्त्री लिंग एकवचन में

मैं गई थी।

वह गई थी।

तुम गई थी।

आप गई थी।

संरचना - 4 :

कर्ता पुंलिंग एकवचन में (भविष्यत्काल)

क्रिया भी पुंलिंग एकवचन में

रमेश जाएगा।

वह बोलेगा।

कर्ता स्त्रीलिंग एकवचन में (भविष्यत्काल)

क्रिया भी स्त्रीलिंग एक वचन में

रीता नाचेगी।

गीता लिखेगी।

संरचना - 5 :

कर्ता पुंलिंग एक/बहुवचन में + ने + सकर्मक

क्रिया भूतकाल पुंलिंग एकवचन में

कर्ता स्त्रीलिंग एक / बहुवचन में + ने + सकर्मक

क्रिया भूतकाल पुंलिंग एकवचन में

बालक ने देखा ।

बालकों ने पढ़ा ।

लड़के ने कहा ।

कर्ता पुलिंग / स्त्रीलिंग एकवचन या बहुवचन में हो तो भी क्रिया केवल पुलिंग एकवचन में रहेगी ।

बालिका ने देखा ।

बालिकाओं ने पढ़ा ।

लड़कियों ने कहा ।

संरचना-6

- कर्ता + ने + कर्म पुलिंग एकवचन
+ क्रिया भी कर्म के लिंग/वचन अनुसार
- कर्ता + ने + कर्म पुलिंग बहुवचन
+ क्रिया भी कर्म के लिंग/वचन के अनुसार

मोहन ने फल खाया ।

सोहन ने चार फल खाए ।

- कर्ता + ने + कर्म स्त्रीलिंग एकवचन
+ क्रिया कर्म के लिंग/वचन के अनुसार
- कर्ता + ने + कर्म स्त्रीलिंग बहुवचन
+ क्रिया कर्म के लिंग वचन के अनुसार

गीता ने जलेबी खाई ।

कविता ने पाँच जलेबियाँ खाई ।

5.5. अभिक्रमित स्वाध्याय विधि :

उद्देश्य : यह एक स्वयं शिक्षण विधि है । इसका उद्देश्य है, छात्र आरंभ से लेकर अंत तक सभी समस्या बिन्दुओं का स्वयं समाधान करें । छात्र की रुचि, क्षमता तथा कार्यक्रम के अनुसार उसमें आवश्यक सुधार करना इस विधि का उद्देश्य है ।

अर्थ : अभिक्रम का अर्थ है—क्रमानुसार अध्ययन । इसमें शिक्षक पाठ को पहले छोटे-छोटे सोपानों में क्रमानुसार बाँट देते हैं । छात्रों को पहले से ही समस्या को हल करने के सोपानों का सही क्रम बता दिया जाता है । छात्र प्रत्येक सोपान का उत्तर देता है । शिक्षक बहु-विकल्प प्रश्न पहले से तैयार करते हैं और सही उत्तर देने में छात्रों की मदद भी करते हैं ।

प्रक्रिया :

- पहले पाठ को छोटे-छोटे सोपानों में बाँट दें ।
- पाठांश से प्रश्न तैयार करें ।
- सही उत्तर चयन करने में छात्रों को अवसर प्रदान करें ।

- यदि उत्तर गलत है तो पुनः सही बनाने की प्रक्रिया अपनाएँ।

प्रयोग : आइए, हम छठी कक्षा का विषय 'सच्चा मित्र' इस विधि के अनुसार सीखें।

शिक्षक पहले कहानी को छोटे-छोटे सोपानों में बाँटते हैं :

गाँव का नाम है, लखनपुर।

जंगल में कौआ और हिरन में मित्रता।

हिरन को सियार का देखना और मन-ही मन उसका कोमल मांस खाने की योजना बनाना।

सियार के कारण हिरन का जाल में फँस जाना।

अपनी जिन्दगी के लिए सियार से मदद माँगना।

कौए की सहायता से अपनी जान बचाना।

सच्चे मित्र की पहचान करना।

प्रश्न. (क) कोष्ठक में से सही शब्द चुनकर उत्तर दीजिए :

(i) गाँव का नाम क्या था ? (चंदनपुर / लखनपुर)

(ii) कौन हिरन का मित्र था ? (सियार / कौआ)

(iii) किसने हिरन का मांस खाना चाहा ? (सियार / कौआ)

(iv) सियार ने हिरन को कहाँ बुलाया ? (जंगल में / खेत में)

(v) किसकी सहायता से हिरन की जान बची ? (कौआ / सियार)

(ख) सही विकल्प से वाक्य पूर्ण कीजिए :

(i) कौआ और हिरन में _____ थी। (शत्रुता / मित्रता)

(ii) एकदिन _____ ने हिरन को देखा। (सियार / खेत मालिक)

(iii) सियार ने हिरन का क्रोमल _____ खाना चाहा। (हड्डी / मांस)

(iv) हिरन _____ में फँस गया। (जाल / थैली)

(v) आफत के समय _____ ने मदद की। (सियार / कौए)

(ग) छूट गए शब्दों से कहानी पूरी कीजिए :

गाँव का नाम _____ था। जगल में कौआ और _____ रहते थे। एक दिन _____ ने हिरन को चरते देखा। उसने हिरन का कोगल _____ खाना चाहा। उसने उसे एक _____ में बुलाया। हिरन अनाज खाने के समय _____ में फँसा गया। उसने _____ से मदद माँगी। आफत के समय सियार नहीं, _____ ने उसकी जान बचाई। _____ हिरन का _____ था।

[कौआ, सच्चा भिन्न, लखनपुर, सियार, हिरन, खेत, माँस, जाल, सियार, कौआ]

5.6. समन्वित विधि

अर्थ : वास्तव में हम किसी एक विधि के द्वारा समस्त भाषाई कृशालताओं का विकास नहीं कर सकते। अतः शिक्षक को विभिन्न विधियों को समन्वित करके भाषा सिखानी चाहिए।

प्रक्रिया :

- शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया के विविध घटकों, उद्देशयों, सामग्रियों, विधियों तथा मूल्यांकनों में समन्वय करेंगे।
- शिक्षक विभिन्न विधियों द्वारा भाषाई कौशलों (श्रवण, भाषण, वाचन, लेखन) का सुनियोजित रूप से विकास करेंगे।
- शिक्षक विभिन्न प्रकार के अभ्यासों को छात्रों के समक्ष बार-बार दुहराएँगे।
- शिक्षक छात्रों को भाषा सीखने के लिए उत्प्रेरित करेंगे और सीखी गई बातों का दृष्टीकरण और मूल्यांकन करेंगे।
- शिक्षक अन्य भाषा प्रक्रिया में मातृभाषाजनित व्याघात को कम करने की कोशिश करेंगे।

इस प्रकार शिक्षक छात्र-छात्राओं को अधिकतम अधिगम (सीखना) में सहायता पहुँचाएँगे जिससे भाषाई कौशलों का विकास हो जाएगा और छात्र अन्य भाषा का सही रूप से प्रयोग कर सकेंगे।

7. इस इकाई से आपने जो सीखा :

1. व्याकरण-अनुवाद विधि :

- व्याकरण के नियम शिक्षार्थी को समझाना ।
- अन्य भाषा में लिखित भाषा, साहित्य-सामग्री को पढ़ने तथा समझने की क्षमता विकास करना ।
- मातृभाषा से अन्य भाषा में तथा अन्य भाषा से मातृभाषा में अनुवाद करने की क्षमता का विकास करना ।

2. संरचना विधि :

- आम बोलचाल की भाषा-संरचनाओं को अनुकरण अभ्यास द्वारा सिखाना ।
- श्रवण और भाषण कौशलों का विकास करने के लिए साँचा अभ्यास, सारणी अभ्यास और वार्तालाप अभ्यास करना ।
- वाक्य, वाक्यांश, उच्चारण-अनुकरण अभ्यास क्रमशः सामूहिक, व्यक्तिगत रूप से करना ।
- शिक्षार्थी की आवश्यकता और स्थिति के अनुरूप साँचे अभ्यासों में परिवर्तन करना ।

3. अभिक्रमित स्वाध्याय विधि :

- पाठ को छोटी-छोटी इकाइयों में बाँटना ।
- कार्यक्रम योजना को क्रमबद्ध करना ।
- उद्देश्य की पूर्ति हेतु विषय-वस्तु, विधि तथा प्रस्तुतीकरण पर विशेष ध्यान देना ।
- प्रत्येक प्रश्न का सही उत्तर प्रस्तुत करना और छात्रों को उत्तर बताने का अवसर प्रदान करना ।
- सीखने की समस्या के प्रति सुधारात्मक दृष्टिकोण अपनाकर समस्या का हल करना ।

4. समन्वित विधि :

- शैक्षिक प्रक्रिया के विभिन्न घटकों, उद्देश्यों, सामग्री, प्रणालियों तथा मूल्यांकनों में समन्वय स्थापित करना ।

- शिक्षार्थी में वांछित परिवर्तन करके उनमें बोलने, पढ़ने तथा लिखने की कुशलता का समुचित विकास करना ।

- शिक्षार्थी के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखकर विभिन्न प्रकार के अभ्यासों से भाषा सिखाना

5.8. स्वमूल्यांकन के प्रश्न :

1. कोष्ठक में से सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए :

(क) _____ शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को एक सुनिश्चित और सुव्यवस्थित दिशा प्रदान करती है ।

(ख) _____ विधि में व्याकरण तथा अनुवाद के नियमों के आधार पर भाषा सिखाई जाती है ।

(ग) _____ विधि का आधार साँचा अभ्यास है ।

(घ) _____ विधि में पाठ को छोटे-छोटे सोपानों में क्रमानुसार बाँटा जाता है ।

(ड) _____ विधि में विभिन्न विधियों को समन्वित किया जाता है ।

[समन्वित, शिक्षण विधि, अभिक्रमित स्वाध्याय, व्याकरण-अनुवाद, संरचना]

2. 'क' संभ को 'ख' संभ के साथ मिलाकर फिर से लिखिए :

'क'	'ख'
(क) क्रमानुसार सोपानों की पूर्व योजना तैयार की जाती है –	समन्वित विधि
(ख) व्याकरणिक नियमों पर बल दिया जाता है –	संरचना विधि
(ग) शैक्षिक प्रक्रिया के घटकों, उद्देश्यों, मूल्यांकन में समन्वय 'रखा जाता है –	व्याकरण-अनुवाद विधि
(घ) वार्तालाप के साँचों के अनुकरण-स्मरण पर बल दिया जाता है –	अनुवाद विधि
(ड) मातृभाषा से अन्य भाषा तथा अन्य भाषा से मातृभाषा में अनुवाद पर बल दिया जाता है –	अभिक्रमित स्वाध्याय विधि

3. सही उत्तर में (✓) चिह्न और गलत उत्तर में (✗) चिह्न लगाइए : (क)

- (क) बोलने से लेखन कौशल का विकास होता है।
- (ख) व्याकरणिक नियमों पर बल देना व्याकरण-अनुवाद विधि का उद्देश्य है।
- (ग) संरचना विधि में विभिन्न साँचों का अभ्यास कराया जाता है।
- (घ) अभिक्रमित स्वाध्याय विधि में सही क्रम नहीं बताया जाता।
- (ङ) विभिन्न घटकों, उद्देश्यों, मूल्यांकनों में समन्वय करना समन्वित विधि का उद्देश्य है।

5.9. स्वमूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर

1. (क) शिक्षण विधि

- (ख) व्याकरण-अनुवाद विधि
- (ग) संरचना विधि
- (घ) अभिक्रमित स्वाध्याय विधि
- (ङ) समन्वित विधि

2. 'क'

- (क) क्रमानुसार सोपानों की पूर्व योजना तैयार की जाती है –
- (ख) व्याकरणिक नियमों पर बल दिया जाता है –
- (ग) शैक्षिक प्रक्रिया के घटकों, उद्देश्यों, मूल्यांकन में समन्वय 'रखा जाता है –
- (घ) वार्तालाप के साँचों के अनुकरण-स्मरण पर बल दिया जाता है –
- (ङ) मातृभाषा से अन्य भाषा तथा अन्य भाषा से मातृभाषा में अनुवाद पर बल दिया जाता है –

'ख'

- अभिक्रमित स्वाध्याय विधि
- व्याकरण-अनुवाद विधि
- समन्वित विधि
- संरचना विधि
- अनुवाद विधि

3. (क)

(ख)

(ग)

(घ)

(ङ)

5.10. इकाई की समाप्ति के बाद के प्रश्न :

1. भाषा शिक्षण की प्रमुख विधियों के नाम लिखिए।

2. शिक्षण विधियों के उद्देश्य क्या हैं ?

3. व्याकरण-अनुवाद विधि में किन बातों पर विशेष बल दिया जाता है ?

4. संरचना विधि किसे कहते हैं ?

5. अधिक्रमित स्वाध्याय विधि का अर्थ क्या है ?

6. समन्वित विधि से क्या लाभ होता है ?

5.11. संदर्भग्रन्थों की सूची :

1. भाषा_{1, 2} की शिक्षण विधियाँ और पाठ नियोजन - डॉ. लक्ष्मीनारायण शर्मा

2. भाषा शिक्षण : सिद्धांत और प्रविधि - मनोरमा गुप्त

3. द टेक्निक्स ऑफ लैंग्वेज टिचिंग - एफ.एल विलोज

4. सेकेंड लैंग्वेज लर्निंग एंड टिचिंग - डी.ए.विलकिन्स

5. लिंगिवस्टिक्स एंड सेकेंड लैंग्वेज पेडागजी - ई ग्लीन. लिविस

6. लैंग्वेज डेवलपमेंट - विक्टर ली

UNIT - 6

इकाई - 6

पाठ-योजना तथा भाषा-मूल्यांकन और परीक्षण

6.0 पाठ-योजना

6.1. प्रारंभ

6.2. उद्देश्य

6.3. गद्य पाठ योजना

6.3.1. गद्य पाठ योजना का नमूना

6.4. पद्य पाठ योजना

6.4.1. पद्य पाठ योजना का नमूना

6.5. व्याकरण पाठ योजना

6.5.1. व्याकरण पाठ योजना का नमूना

6.6. भाषा मूल्यांकन और परीक्षण

6.6.1. भाषा परीक्षण के प्रकार

6.7. इस इकाई से आपने जो सीखा

6.8. स्वमूल्यांकन के प्रश्न

6.9. स्वमूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर

6.10. इकाई की समाप्ति के बाद के प्रश्न

6.11. संदर्भ गन्थों की सूची

6.0. पाठ-योजना

6.1 ग्रारंभ

अर्थ :

पाठ योजना पाठ से संबंधित एक सुनिश्चित योजना है। निश्चित उद्देश्य तथा निश्चित समय में सिखाने वाले शिक्षण बिन्दु ही पाठ है। पाठ को सही रूप से पढ़ने तथा लक्ष्यों की पूर्ति के उद्देश्य से पाठ योजना तैयार की जाती है। पाठ योजना की निर्माण-प्रक्रिया को पाठ नियोजन कहा जाता है।

महत्व :

- पाठ नियोजन से शिक्षण के उद्देश्यों की पूर्ति होती है।
- इससे शिक्षण प्रक्रिया क्रमबद्ध और गतिशील होती है।
- इससे भाषाई कौशलों का विकास होता है।
- इससे निर्धारित पाठांश को एक साथ एक इकाई के रूप में प्रस्तुत करना संभव होता है।
- इससे शिक्षक-शिक्षार्थी को ठीक से मार्गदर्शन कर पाता है। वह उसकी समस्याओं का समाधान करने में समर्थ हो पाता है।
- इससे शैक्षिक प्रक्रिया का सही रूप से मूल्यांकन हो पाता है।

6.2. उद्देश्य

- पाठ-योजना से शिक्षक को सक्रिय रखना और कम समय में सीमित साधनों का प्रयोग करके योजनाबद्ध तरीकों से अपने शिक्षण कार्य को प्रभावशाली बनाने के लिए मार्गदर्शन देना।
- शिक्षक को अपना दायित्व कुशलता पूर्वक पूर्ण करने की प्रेरणा देना और उसमें विषय संबंधित उपयुक्त समाग्री तलाशने – बनाने की आदत पूर्ण रूप में विकसित करना।
- शिक्षक में समय-प्रबंधन, कक्षा-प्रबंधन और विषय-वस्तु को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करने की कुशलता उत्पन्न करना।

6.3. गद्य पाठ-योजना

प्रत्येक पाठ योजना में निम्नलिखित सूचनाएँ लिखी जाएँगी :

- सूचना - दिनांक ————— विषय : हिन्दी गद्य अंतर —————

कक्षा _____ शीर्षक : _____ अवधि : _____

उद्देश्यावली : पाठ योजना में सामान्य उद्देश्य तथा विशिष्ट उद्देश्य लिखे जाएँगे, जैसे—

- सामान्य उद्देश्य • शिक्षार्थी को साहित्य में गद्य विधा से परिचित कराना ।
- शिक्षार्थी को पाठ में प्रयुक्त शब्दों, वाक्यांशों, मुहावरों तथा लोकोक्तियों को समझाना ।

- शिक्षार्थी में सौखिक तथा लिखित विचारों को ग्रहण करने की कुशलता का विकास करना ।

- शिक्षार्थी में आदर्श वाचन और मौन वाचन की आदत विकास का करना ।

- विशिष्ट उद्देश्य • शिक्षार्थी को पाठांश की समुचित जानकारी देना ।
- शिक्षार्थी को कठिन शब्दों तथा प्रयोगों की रचना प्रक्रिया बताना ।
- पाठ में निहित मुख्य उद्देश्य बताना ।

- सहायक सामग्री • पाठ से संबंधित उपयोगी सहायक सामग्रियाँ, जैसे - किताब, चॉक,

झाड़न, लपेट श्यामपट, मॉडेल, चित्र आदि लेना ।

- पूर्व-ज्ञान • पाठ को शिक्षार्थी के पूर्वज्ञान पर आधारित करके प्रस्तावना की जाएगी ।

सोपान :

1. **प्रस्तावना :** शिक्षार्थी के मानसिक स्तर के अनुरूप प्रश्न, चित्र प्रदर्शन तथा प्रतिरूपों द्वारा प्रस्तावना की जाएगी।
2. **उद्देश्य कथन :** पाठांश के आधार पर उद्देश्य-कथन किया जाता है और शीर्षक श्याम पट पर लिख दिया जाता है।
3. **प्रस्तुतीकरण :** पाठांश को समयानुसार एक / दो इकाइयों में विभाजित करना चाहिए।
 - **आदर्श वाचन :** उच्चारण की शुद्धता, सही अनुतान, गति तथा विराम चिह्नों पर ध्यान देकर शिक्षक आदर्श वाचन करेंगे।
 - **अनुकरण वाचन :** शिक्षार्थी द्वारा अनुकरण वाचन उचित वितरण के आधार पर करवाया जाएगा। आवश्यकतानुसार उच्चारण अशुद्धियों का परिमार्जन किया जाएगा। शुद्ध उच्चारण पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है।
 - **बोध प्रश्न :** शिक्षार्थी प्रस्तुत गद्य पाठ में निहित मुख्य विचारों को किस सीमा तक समझ सके हैं; यह जानने के लिए पाठ से संबंधित तीन/चार सरल प्रश्न पूछे जाएँगे।
 - **पाठ्य बिन्दु स्पष्टीकरण :** शिक्षक कठिन शब्दों तथा प्रयोगों के अर्थ स्पष्ट करने के लिए विभिन्न युक्तियों की सहायता लेंगे। यह निम्न प्रकार के क्रम से लिखा जाएगा:

शब्द	अर्थ	युक्ति	प्रयोग
------	------	--------	--------

 - **पुनर्वाचन/ मौन वाचन :** छोटी कक्षा के शिक्षार्थी के लिए पुनर्वाचन और ऊँची कक्षा के शिक्षार्थी के लिए मौन वाचन करवाया जाएगा जिससे शिक्षार्थी पाठांश में निहित विचारों को थोड़ा-बहुत समझ पाएँगे।

- विचार विश्लेषण : पाठ में प्रतिपादित विचारों को आत्मसात् करने के लिए मुख्य विचारों पर आधारित कुछ प्रश्न पूछे जाएँगे। आवश्यकतानुसार पाठांश के स्पष्टीकरण के लिए शिक्षक तुलना, व्याख्या, उदाहरण आदि का उपयोग कर सकते हैं।

4. पुनरावृत्ति :

- सारांश : शिक्षक पाठांश का सारांश सरल भाषा में कक्षा में प्रस्तुत करेंगे।
- मूल्यांकन एवं दृढ़ीकरण : भाषाई बिन्दुओं पर शिक्षार्थी का कितना अधिकार हुआ है; इसका मूल्यांकन करना आवश्यक है। अधिगम (या ज्ञानप्रप्ति) में कमी होने पर दृढ़ीकरण एवं पुनः अभ्यास अपेक्षित है। इसमें शिक्षक शिक्षार्थी को दों/तीन अधिगम मूल्यांकन प्रश्न पूछेंगे।

5. प्रयोग

- कक्षा-कार्य : पाठ में निहित भाषाई बिन्दुओं पर विविध युक्तियों और अभ्यासों की सहायता से भाषा कार्य करवाया जाता है जिससे शिक्षार्थी में भाषाई अन्तर्दृष्टि का विकास हो सके। कक्षा-कार्य में वाक्य-गठन, पर्यायवाची शब्द, विलोम शब्द, संधि-विच्छेद, रिक्त स्थान की पूर्ति तथा स्तंभ मिलान के प्रश्न पूछ जा सकते हैं।
- गृहकार्य : पढ़ाए गए पाठ के आधार पर गृहकार्य देना आवश्यक है। प्रश्न श्यामपट पर लिख देना चाहिए।

6.3.1. एक गद्य पाठ-योजना का नमूना

प्रस्तुतीकरण प्रक्रिया :

- मैं कक्षा में आवश्यक सामग्री के साथ सहर्ष कक्षा में प्रवेश करूँगा। कक्षा की ओर थोड़ी - थोड़ी दृष्टि देकर श्यामपट पर औपचारिक सूचनाएँ लिख दूँगा।

सूचना : दिनांक : 04.05.12 विषय : हिन्दी गद्य घंटी : तीसरी
कक्षा : 7 वीं शीर्षक : उत्कलमणि अवधि : 35 मिनट
(कुछ ही दिन मिसाल है ।)

सोपान

प्रस्तावना : मैं छात्रों को उनके पूर्वज्ञान के आधार पर निम्नलिखित प्रश्न पूछूँगा और शीर्षक आने पर श्यामपट पर लिख दूँगा ।

- प्रश्न :
1. ओडिशा के कुछ जन सेवकों के नाम बताओ ।
 2. किसको उत्कलमणि की उपाधि मिली थी ?
 3. (चित्र दिखाकर) यह किसका चित्र है ?

उद्देश्य कथन : प्रश्नों के सही उत्तर पाने के बाद मैं कहूँगा कि आज हम 'उत्कलमणि' के बारे में पढ़ेंगे । यह कहकर शीर्षक लिख दूँगा ।

प्रस्तुतीकरण : आदर्श-वाचन :

मैं उच्चारण की शुद्धता तथा विराम-चिह्नों पर ध्यान देते हुए ऊँची आवाज से आदर्श वाचन करूँगा । बीच-बीच में छात्रों की ओर भी ध्यान दूँगा । पाठांश को शीर्षक के पास कोष्ठक में लिख दूँगा ।

- अनुकरण वाचन : पूरी कक्षा को ध्यान देते हुए चार/पाँच छात्रों से अनुकरण वाचन कराऊँगा । उनकी उच्चारणगत अशुद्धियों को अन्य छात्रों से सुधरवाऊँगा ।
- बोध प्रश्न : मैं छात्रों को पाठ के मुख्य विचारों से संबंधित दो/तीन सरल प्रश्न पूछूँगा ।
 1. पहले हमारे देश को कौन शासन करते थे ?
 2. वन विद्यालय कहाँ है ?
 3. इस विषय में किनके बारे में कहा गया है ?

- पाठ्य बिन्दु स्पष्टीकरण : मैं छात्रों से कठिन शब्द बताने के लिए कहूँगा। कठिन शब्दों को व्यवस्थित रूप से श्यामपट पर लिखकर विभिन्न युक्तियों की सहायता से उनके द्वारा स्पष्ट करूँगा और उन्हें शब्दार्थ कॉपी में लिख लेने के लिए भी बोलूँगा।

शब्द	अर्थ
बे-खबर	जिसे कुछ पता न हो, अनजान
बे-परवाह	किसीकी परवाह न करनेवाला
स्वावलंबी	जो दूसरे पर निर्भर न करके खुद काम करता है।
मुखिया	मुख्य व्यक्ति, जिसकी बात सब सुनते हैं।
करीब	पास
सिसकना	रोने की आवाज
इलाका	क्षेत्र
बाढ़	वन्या
तहस-नहस	नष्ट हो जाना
सहायता	मदद
मिसाल	उदाहरण, दृष्टांत

- पुनर्वाचन : मैं छात्रों से पाठांग को पुनः वाचन करने के लिए कहूँगा, जिससे छात्र पाठ्यांश के मुख्य विचारों को समझ पाएँगे।

● विचार विश्लेषण के प्रश्न :

1. भारत के शासक कौन थे ?
2. भारतवासी उनके शासन से क्यों संतुष्ट नहीं थे ?
3. किन्होंने सत्यवादी वनविद्यालय बनाया था ?
4. यहाँ कैसी शिक्षा दी जाती थी ?
5. वहाँ मुखिया कौन थे ?
6. वहाँ शिक्षक छात्र कैसे रहते थे ?
7. कौन रो रहे थे ?
8. उनके रोने का कारण क्या था ?
9. उन्होंने लोगों से क्या कहा ?
10. गोपबन्धु का हृदय कैसा था ?

पुनरावृत्ति : इस सोपान में मैं पाठांश का सारांश कहूँगा । उसके बाद यह जानने के लिए कि भाषाई बिन्दुओं पर छात्रों का कितना अधिकार हुआ, मैं उनसे दो अधिगम मूल्यांकन प्रश्न पूछूँगा ।

सारांश : पहले अंग्रेज हमें शासन करते थे । लेकिन वे हमारे दुःख-सुख के प्रति चिंतित नहीं थे । पुरी के साक्षिगोपल में गोपबन्धु ने अपने कुछ छात्रों के साथ वन विद्यालय बनाया था । वहाँ छात्रों को अच्छी-अच्छी शिक्षाएँ दी जाती थीं । एक दिन गाँव में बाढ़ आ गई । गोपबन्धु ने अपने छात्रों और मित्रों के साथ गाँववालों की खूब मदद की । सच में, उनका हृदय बहुत विशाल और कोमल था ।

अधिगम मूल्यांकन प्रश्न :

1. वन विद्यालय की विशेषता क्या है ?
2. गोपबन्धु का हृदय कोमल था, कैसे ?

कक्षाकार्य :

1. भाषाकार्य पर आधारित निम्नलिखित प्रश्न पूछँगा :

कोष्ठक में से विभक्ति चुन कर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

- क. (i) कुछ दिन पहले _____ बात है। (कि / की)
- (ii) शासक प्रजा _____ संतुष्ट नहीं कर पाते थे। (को / से)
- (iii) नवयुवकों _____ वन-विद्यालय बनाया था। (में / ने)
- (iv) गोपबन्धु _____ हृदय कोमल था। (के / का)
- (v) वहाँ देश - सेवा _____ बल दिया जाता था। (में / पर)

ख. पर्यायवाची शब्द बताइए :

वन -

काम -

मेघ -

आवाज -

इलाका -

ग. विलोम शब्द बताइए :

कोमल -

गाँव -

दिन -

संतुष्ट -

वे-परवाह -

गृहकार्य : 'उत्कलमणि' विषय से गोपवन्धु के बारे में पाँच वाक्य लिखकर लाइए।

6.4. पद्ध पाठ-योजना : औपचारिक सूचना

सामान्य उद्देश्य

- छात्रों को साहित्य की काव्य विधा से परिचित कराना ।
- समुचित लय, भाव, स्वर के आरोह-अवरोह के साथ कविता के वाचन का अभ्यास कराना ।
- कवि की कल्पनाओं, भावनाओं तथा अनुभूतियों से छात्रों को परिचित कराना ।
- छात्रों में स्वाध्याय की अभिस्थिति उत्पन्न करना ।
- छात्रों में तुलनात्मक रसानुभूति का कौशल विकसित करना ।

विशिष्ट उद्देश्य

- छात्रों में निर्दिष्ट कविता के अर्थ तथा निहित भावों को ग्रहण करने की योग्यता का विकास करना ।
- कविता में प्रयुक्त कठिन शब्दों, काव्य उक्तियों तथा विशिष्ट संदर्भों के अर्थ व भाव समझने का कौशल विकसित करना ।

सहायक सामग्री

- भावों की अभिव्यंजना, अर्थ के स्पष्टीकरण तथा कविता की रसानुभूति में सहायक श्रव्य तथा दृश्य सामग्री का संदर्भनुसार प्रयोग ।

पूर्व-ज्ञान

- प्रस्तुत पाठ का संबंध छात्रों के पूर्वज्ञान से स्थापित करना आवश्यक है ।

प्रस्तावना : प्रस्तावना छात्रों के पूर्वज्ञान पर आधारित होती है। मिलते-जुलते भावों की कविता या प्रश्नों द्वारा प्रस्तावना भी की जा सकती है।

उद्देश्य कथन : इसमें कविता का शीर्षक तथा केन्द्रीय भाव का संक्षिप्त परिचय देना अपेक्षित है।

प्रस्तुतीकरण : भावों में तारतम्य की दृष्टि से कविता के निर्धारित पाठांश को एक ही अन्विति में प्रस्तुत करना उचित है।

आदर्श सस्वर वाचन : कक्षा में काव्यात्मक वातावरण उत्पन्न करने के लिए शिक्षक उचित गति तथा स्वर के उत्तर-चढ़ाव के साथ कविता का आदर्श वाचन करेंगे।

अनुकरण वाचन : प्रस्तुत किए गए आदर्श वाचन का छात्र सस्वर अनुकरण वाचन करेंगे।

भाव-बोध प्रश्न : कविता के मुख्य भावों पर आधारित दो/तीन सरल प्रश्न छात्रों से पूछे जाएँगे।

पाठ्य-बिन्दु स्पष्टीकरण : शिक्षक कठिन शब्दों, उक्तियों तथा विशिष्ट संदर्भों के अर्थ बताते हुए भाव स्पष्ट करेंगे। इसके लिए पाठ्योजना में निम्न क्रम को अपनाना होगा।

शब्द अर्थ युक्ति प्रयोग

मौन / पुनर्वाचन : ऊँची कक्षाओं में मौन वाचन और छोटी कक्षाओं में पुनर्वाचन कराया जाएगा।

भाव विश्लेषण प्रश्न : कविता में निहित भावों को स्पष्ट करने के लिए शिक्षक भाव विश्लेषण प्रश्न पूछेंगे। विशेष स्थलों पर शिक्षक सहायक कथन या विशेष स्पष्टीकरण भी कर सकते हैं।

• **पुनरावृत्ति :** शिक्षक कविता का सारांश छात्रों के सामने प्रस्तुत करेंगे ताकि शिक्षक कविता के भावों को समझ सकें।

मूल्यांकन एवं रसानुभूति : छात्रों ने कविता के मुख्य भावों को आत्मसात कर लिया है या नहीं; इसका मूल्यांकन प्रश्नों या अन्य युक्तियों की सहायता से किया जाता है। रसानुभूति की दृष्टि से समान भाव वाले काव्यांश को भी प्रस्तुत किया जा सकता है।

• **प्रयोग :**

सस्वर पुनर्वाचन : कविता में काव्यात्मक प्रभाव को सुदृढ़ करने के लिए वाचन में कुशल छात्रों द्वारा पुनर्वाचन कराना आवश्यक है।

गृहकार्य : छात्रों को कविता कंठस्थ करने, समान भावों की कविता का संकलन करने तथा कुछ पंक्तियों का भावार्थ लिखने का गृह-कार्य दिया जा सकता है।

6.4.1. एक पद्य पाठ-योजना का नमूना :

प्रवेश :

अधीक्षक मैं सहर्ष अपनी पाठ्य सामग्रीयों के साथ सही समय पर कक्षा में प्रवेश करूँगा। कक्षा के छात्रों की ओर सामान्य ध्यान देकर श्यामपट पर आवश्यक सूचना लिख दूँगा।

सूचना :

विद्यालय : यूनिट 1 प्राथमिक विद्यालय

दिनांक 05.05.12

विषय : हिन्दी पद्य

घंटी : दूसरी

कक्षा 7वीं 'क'

शीर्षक : बना दो मधुर मेरा जीवन औसत आयु : 11 +

(बना दो...अन्याय दमन)

सोपान :

रिति

प्रस्तावना :

मिशन ऑफ कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एवं टेक्नोलॉजी

मैं छात्रों को उनके पूर्वज्ञान के आधार पर इस कविता के भाव से मिलती-जुलती एक छोटी कविता की कुछ पंक्तियाँ सुनाकर प्रश्न पूछूँगा ।

“भगवान भगवान

तुम्हें मेरा प्रणाम

सुनो मेरा भजन

करो मुझे महान् ।”

देश के लिए

अपना जीवन

करूँगा बलिदान,

भगवान.....भगवान ॥

प्रश्न : 1. यहाँ किससे प्रार्थना की जाती है ?

2. भगवान से बालक क्या माँगता है ?

उद्देश्य-कथन :

इन प्रश्नों के सही उत्तर प्राप्त करने के बाद मैं बोलूँगा कि ‘आज हम इस प्रकार की और एक कविता पढ़ेंगे जिसका नाम है ‘बना दो मधुर मेरा जीवन’ । यह बोलकर श्यामंपट पर शीर्षक लिख दूँगा ।

प्रस्तुतीकरण :

- आदर्श स्वर वाचन : मैं उचित गति तथा स्वर के आवश्यक उतार-चढ़ाव के साथ कविता का आदर्श वाचन करूँगा ।
- अनुकरण वाचन : मैं कुछ छात्रों से प्रस्तुत किए गए आदर्श पठन का अनुकरण करते हुऐं अनुकरण स्वर वाचन करने के लिए कहूँगा ।
- भाव बोध प्रश्न : मैं कविता के मुख्य भावों पर आधारित तीन/चार सरल प्रश्न पूछूँगा ।

प्रश्न : 1. इस कविता का नाम क्या है ?

2. इस कविता के कवि कौन हैं ?

3. कवि मातृभूमि के लिए क्या अर्पण करना चाहते हैं ?

पाठ्य बिन्दु स्पष्टीकरण :

मैं छात्रों से कठिन शब्द व्यवस्थित रूप से बताने के लिए कहूँगा और शब्दों को श्यामपट पर लिख दूँगा ।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
हेतु	के लिए	शुचि	पवित्र
बेहिचक	बिना संकोच से	अश्रु	आँसू
तन	शरीर	फौलादी	फौलाद से बना इस्पात का
अर्पण	त्याग करना	अप्रतिहत	अबाध
सुमन	फूल	अविचल	अस्थिर न होकर, स्थिर
सुरभि	सुगंध		

पुनर्वाचन :

मैं कविता का भाव आत्मसात् कराने के लिए छात्रों से पुनः अनुकरण वाचन कराऊँगा ।

भाव विश्लेषण के प्रश्न :

1. कवि मातृभूमि के लिए क्या करना चाहते हैं ?
2. कवि अपने मन को क्या बनाना चाहते हैं ?
3. कवि जन-जन में क्या बाँटना चाहते हैं ?
4. 'शुचि सरल छलहीन सरस' का भावार्थ क्या है ?
5. कवि क्या पोंछना चाहते हैं ?
6. कवि कब मरण-वरण करना चाहते हैं ?
7. कवि अपनी बाहों से क्या करना चाहते हैं ?
8. कवि कैसे अन्याय दमन करना चाहते हैं ?

पुनरावृत्ति :

सारांश-कथन : मैं छात्रों को कवितांश का सारांश बताऊँगा ।

इस कविता में कवि अपनी मातृभूमि के लिए अपना सब-कुछ अर्पण करना चाहते हैं । वे तन-मन-धन से देश की सेवा करना चाहते हैं । वे प्रत्येक व्यक्ति में अमृत कण बाँटना चाहते हैं । वे जन-जन के आँसू पोंछना चाहते हैं । वे हमेशा अन्याय अनीति, अविचार दमन करना चाहते हैं ।

मूल्यांकन और रसानुभूति : मैं छात्रों को मूल्यांकन प्रश्न पूछूँगा या रसानुभूति की दृष्टि से समान भाव वाले काव्यांश को भी प्रस्तुत करूँगा । मैं निम्न प्रश्न पूछूँगा ।

- प्रश्न**
1. इस कविता में कवि का उद्देश्य क्या है ?
 2. इस कवितांश से तुम्हें क्या शिक्षा मिली ?

प्रयोग :

- सख्त वाचन : कविता में काव्यात्मक प्रभाव को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से अच्छे छात्रों से पुनः सख्त वाचन कराऊँगा ।
- गृहकार्य : इस कविता में पढ़ाई गई पंक्तियों को कंठस्थ करने के लिए कहूँगा ।

6.5 व्याकरण पाठ योजना :

सामान्य उद्देश्य :

- छात्रों में हिन्दी के शुद्ध रूप से प्रयोग, बोलने और लिखने की कुशलता उत्पन्न करना ।
- छात्रों में शब्द-निर्माण तथा वाक्य रचना की समझ उत्पन्न करना ।
- छात्रों को भाषा-परिमार्जन की प्रक्रिया बताना ।
- छात्रों को वाक्यों में प्रयुक्त विभिन्न शब्दों के प्रयोगों और उनके पारस्परिक संबंधों से परिचित कराना ।
- छात्रों में क्रमबद्ध चिंतन एवं तर्कशक्ति विकास कराना ।

विशिष्ट उद्देश्य :

पाठ विशेष के आधार पर विशिष्ट उद्देश्यों का निर्धारण करना आवश्यक है । पाठ का लक्ष्य छात्रों की भाषाई कौशल को व्यावहारिक एवं सैद्धांतिक दृष्टि से विकसित करना है ।

सहायक सामग्री :

आवश्यक सहायक सामग्री, जैसे, चार्ट, मॉडेल आदि का प्रयोग करना जरूरी है ।

पूर्व-ज्ञान :

पाठ को छात्रों के पूर्वज्ञान पर आधारित करना चाहिए । अतः पूर्वज्ञान का सुनिश्चित क्रम से उल्लेख होना आवश्यक है ।

प्रस्तावना :

प्रस्तावना का संबंध छात्रों के पूर्वज्ञान में है। अतः पहिला अंश पाठ व्याकरणिक दृष्टि से प्रश्न पूछना उचित है। प्रश्न समस्यापूर्तक ही जिससे छात्रों का ज्ञान व्याकरणिक तथ्यों पर केंद्रित हो सके।

उद्देश्य कथन :

शिक्षक उद्देश्य-कथन द्वारा छात्रों का ज्ञान पाठ में निहित विशिष्ट व्याकरणिक तथ्यों पर केंद्रित करता है।

प्रस्तुतीकरण : पाठ विशेष में संबंधित उदाहरणों का चयन करना और उन्हें छात्रों के समृद्ध चार्ट आदि के द्वारा प्रस्तुत करना आवश्यक है।

प्रथम अन्वयिति के उदाहरणों द्वारा छात्रों से विश्लेषणात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे। विश्लेषण के उपरान्त तुलना के द्वारा नवीन तथ्यों से परिचित कराया जाएगा और नियम निर्धारण के प्रश्न पूछे जाएंगे और नियम इयापपट पर लिख दिया जाएगा।

पुनः द्वितीय अन्वयिति के उदाहरण, विश्लेषणात्मक प्रश्न और नियम निर्धारण के प्रश्न पूछे जाएंगे और नियम लिख दिया जाएगा।

इस प्रकार विश्लेषण करते समय आगमन विधि (पहले उदाहरण, फिर नियम या सूत्रकथन) का प्रयोग करना चाहिए। निर्दिष्ट उद्देश्य के अनुरूप छात्रों का सहयोग लेते हुए निश्चित नियम, सिद्धान्त तथा परिभाषा प्रस्तुत की जाती है।

पुनरावृत्ति :

शिक्षक छात्रों के समक्ष पढ़ाए गए पाठ के नियम बताएंगे और छात्रों में विशिष्ट तथ्यों, विचारों और नियमों की कुशलता विकसित करेंगे।

अधिगम मूल्यांकन :

सीखे गए ज्ञान को अधिक स्थायित्व देने के लिए शिक्षक छात्रों से शिक्षण-बिन्दु से संबंधित प्रश्नों का अधिगम प्रश्न पूछेंगे ।

प्रयोग :

छात्र शिक्षण-बिन्दु के अधिगम में कहाँ तक सफल हो सके हैं, इसका परीक्षण करना आवश्यक है । यह मूल्यांकन-परीक्षण अभ्यास तथा प्रश्नों के माध्यम से कक्षा-कार्य के रूप में किया जाएगा ।

गृहकार्य :

गृहकार्य में सीखे गए सिद्धान्तों या परभिषाषा को याद करने के लिए कहा जा सकता है । विषय-वस्तु से संबंधित नवीन उदाहरण संकलित कराए जा सकते हैं अथवा दिए गए अभ्यासों से संबंधित कार्य पूरा किया जा सकता है ।

6.5.1 एक व्याकरण पाठ योजना का नमूना :

सूचना : विद्यालय का नाम : विषय: हिन्दी व्याकरण

दिनांक : ३.०८.१२ **अवधि :** ३५ मि. **औसत आयु :** ११+

कक्षा : आठवीं **शीर्षक :** क्रिया परिवर्तन के नियम

घंटी : तीसरी

प्रस्तावना : मैं छात्रों के पूर्वज्ञान पर आधारित कुछ उदाहरणों के माध्यम से प्रश्न पूछूँगा ।

1. अशोक खेल रहा है ।

2. मोहन पढ़ रहा है ।

3. गीता नाच रही है ।

4. माँ रसोई कर रही है ।

प्रश्न 1. पहले वाक्य में अशोक क्या कर रहा है ?

2. दूसरे वाक्य में मोहन क्या कर रहा है ?
3. तीसरे वाक्य में गीता क्या कर रही है ?
4. चौथे वाक्य में माँ क्या कर रही है ?

उद्देश्य कथन :

ऊपर के प्रश्नों के सही उत्तर पाने के बाद मैं कहूँगा कि आज हम क्रिया के बारे में पढ़ेगे और क्रिया के परिवर्तन के नियम पर चर्चा करेंगे। क्रिया से काम करने का बोध होता है।

प्रस्तुतीकरण :

मैं चार्ट पर निम्नलिखित वाक्यों को लिखकर छात्रों से प्रथम अन्विति के आधार पर विश्लेषणात्मक प्रश्न, फिर नियम निर्धारण के प्रश्न पूछूँगा।

प्रथम अन्विति :

1. लड़का हँसता है।

2. बैल घास खाता है।

3. मोहन टी.वी. देखता है।

4. भाई पढ़ता है।

5. शिक्षक लिखते हैं।

विश्लेषणात्मक प्रश्न :

1. ऊपर के उदाहरणों में क्रिया पदों को छाँटकर बताओ।

2. लड़का, बैल, मोहन, भाई, शिक्षक शब्द किस लिंग के शब्द हैं ?

3. ऊपर के वाक्यों की क्रियाएँ किसके अनुसार हैं ?

नियम निर्धारण के प्रश्न :

- पुलिंग एक वचन कर्ता के अनुसार क्रिया का अंत किस मात्रा में है ?
- पाँचवें वाक्य में क्रिया का अंत किस मात्रा में है ?
- 'शिक्षक' आदर सूचक शब्द है। इसके कारण क्रिया में क्या परिवर्तन हुआ ?

नियम :

- कर्ता पुलिंग आकरान्त एकवचन में होने से क्रिया आकरान्त रहती है, जैसे हँसता, खाता, देखता, पढ़ता आदि।
- आदर सूचक कर्ता एकवचन में होने से क्रिया एकारान्त होती है।
जैसे - लिखते हैं, पढ़ते हैं आदि।

दूसरी अन्विति :

- लड़की हँसती है।
- गाय घास चरती है।
- सीता सिनेमा देख रही है।
- बहन किताब पढ़ रही है।
- शिक्षिका लिख रही हैं।

विश्लेषणात्मक प्रश्न :

- इन वाक्यों में आए कर्ता शब्दों को छाँटो।
- ये शब्द किस लिंग में हैं ?
- इन वाक्यों में क्रिया पदों को छाँटो।
- क्रियाएँ किसके अनुसार हुई हैं ?

नियम निर्धारण प्रश्न :

- स्त्री लिंग के अनुसार क्रिया की अंतिम यात्रा क्या होती है ?
- पाँचवें वाक्य शिक्षिका के कारण क्रिया में क्या परिवर्तन हुआ है ?
- आदरसूचक शब्द एक वचन में है। इसके अनुसार क्रिया कैसी होती है ?

नियम :

- कर्ता स्त्री लिंग एकवचन में होने से क्रिया ई कारान्त होती है और कर्ता के अनुसार होती है।
- कर्ता आदरसूचक होने पर क्रिया बहुवचन में रहती है, जैसे- लिख रही हैं।

पुनरावृत्ति :

मैं छात्रों को इसका सारांश बताऊँगा।

सारांश-कथन :

- वर्तमान काल में कर्ता के लिंग/वचन के अनुसार क्रिया होती है।
- मान्यार्थ शब्दों में एकवचन कर्ता के साथ क्रिया उसी लिंग के बहुवचन में होती है।

अधिगम मूल्यांकन प्रश्न :

- क्रिया किसे कहते हैं ?
- क्रिया पुंलिंग एकवचन कर्ता के अनुसार वर्तमान काल में कैसी होती है ?
- आदर सूचक शब्दों में क्रिया में क्या परिवर्तन होता है ?

प्रयोग : कक्षाकार्य :

मैं छात्रों के द्वारा कक्षा-कार्य कराऊँगा।

प्रश्न: 1. क्रिया पदों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

- (क) अनिल _____ है। (खेलता/खेलती)
- (ख) राधा _____ है। (हँसता/हँसती)
- (ग) विमला _____ है। (दौड़ती/दोड़ता)
- (घ) माँ _____ हैं। (बैठा/बैठी)
- (ङ) पिताजी _____ हैं। (खरीदते/खरीदता)

2. निम्नलिखित वाक्यों को जाँच करके सही/गलत चिह्न कोष्ठक में दीजिए :

(क) माली पानी सींचती है ।

(ख) बहन सब्जी बनाती है ।

(ग) सिंह गरजता है ।

(घ) बच्चा कूद रहा है ।

(ङ) अध्यापक पूछ रहे हैं ।

3. निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया पद छाँटकर लिखिए :

(क) गाय दूध देती है ।

(ख) कुत्ता माँस खा रहा है ।

(ग) मछली तैरती है ।

(घ) वे पढ़ते हैं ।

(ङ) लड़के खेलते हैं ।

गृह-कार्य :

छात्रों को गृह में सक्रिय रखने के लिए निम्न प्रश्न का उत्तर लिखकर लाने के लिए कहूँगा ।

प्र. पुलिंग कर्ता : क्रिया से संबंधित पाँच वाक्य और स्त्री लिंग कर्ता-क्रिया से संबंधित पाँच वाक्य लिखकर लाइए ।

6.6 भाषा मूल्यांकन और परीक्षण :

शिक्षण और मूल्यांकन परस्पर संबद्ध प्रक्रियाएँ हैं । शिक्षक का उद्देश्य छात्र के व्यवहार में वांछित परिवर्तन करना है । छात्र किस सीमा तक लक्ष्यों की प्राप्ति में समर्थ होते हैं, कितनी निपुणता से छात्र ने सिखाए जानेवाले ज्ञान तथा कौशल को अर्जित की है, इसके विवेचन की प्रक्रिया को अधिगम-मूल्यांकन कहा जाता है । मूल्यांकन अधिगम (ज्ञान प्राप्ति) तथा शिक्षण - प्रक्रिया में सुधार करने की दृष्टि से किया जाता है । अतः मूल्यांकन की आवश्यकता स्वतः स्पष्ट है ।

परीक्षण मूल्यांकन का साधन है। मूल्यांकन बालक के समग्र विकास के संदर्भ में कि जाता है जब कि परीक्षण का प्रयोग निर्दिष्ट शिक्षण बिन्दु, ज्ञान या कुशलता के संदर्भ में होता है। अतः मूल्यांकन के लिए परीक्षण आवश्यक है। परीक्षण के विविध स्वरूपों, जैसे- निबंधात्मक, वस्तुनिष्ठ, लघु उत्तर, कौशल परीक्षण, उपलब्धि परीक्षण आदि की सहायता से समस्त शैक्षिक प्रक्रिया का मूल्यांकन संभव है। वस्तुतः भाषा परीक्षण का संबंध भाषा विषयक विचाराधाराओं से है।

6.6.1 भाषा परीक्षण के प्रकार :

- **क्षमता परीक्षण :** इस परीक्षण से छात्रों की क्षमता का संभावित कुशलता का परिचय मिलता है। इसका मुख्य उद्देश्य छात्र की संभावित सफलता का वस्तुनिष्ठ प्रमाण देना है। अन्य भाषा सीखने में छात्र कहाँ तक सफल हो सकता है, इसका अनुमान इस परीक्षण से लगाया जा सकता है।
- **प्रगति परीक्षण :** इस परीक्षण में शिक्षक छात्रों की प्रगति का मूल्यांकन समय-समय पर कर सकता है। अन्य भाषा शिक्षण से संबंधित विविध क्षेत्रों में छात्रों की भाषाई प्रगति का मूल्यांकन और उनके प्राप्त परिणाम के आधार पर उनका उचित मार्ग दर्शन भी किया जा सकता है। इससे छात्र की प्रगति का मापन होता है।
- **उपलब्धि परीक्षण :** इसका संबंध छात्र की उपलब्धियों के मूल्यांकन से है। छात्र ने अन्य भाषा पर कितना अधिकार प्राप्त कर लिया है; उसकी समग्र उपलब्धि क्या है; इसका अनुमान लगाया जा सकता है। यह परीक्षण निश्चित उद्देश्यों की सीमा में ही वैध एवं विश्वसनीय माना जाता है।
- **प्रवीणता परीक्षण :** इस परीक्षण से पता चलता है कि छात्र ने अन्य भाषा सीखने में कहाँ तक प्रवीणता प्राप्त की है; इसका संबंध भाषाई कुशलताओं के मापन से है। छात्र ने विशिष्ट क्षेत्रों में अन्य भाषा संबंधी कितनी विशिष्ट कुशलता प्राप्त की है, इसे जानना प्रवीणता परीक्षण का उद्देश्य है।
- **निदानात्मक परीक्षण :** इस परीक्षण में छात्र अन्य भाषा में कहाँ-कहाँ कठिनाई का अनुभव करता है या भाषा सीखेने में उसके सामने कौन-कौन सी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं, इसका अनुमान लगाया जा सकता है। परीक्षणों के परिणाम के आधार पर यह निर्णय किया जाता है कि पाठ्यांश के किन अंशों को दुबारा पढ़ना चाहिए, कहाँ-कहाँ पुनः अभ्यास चाहिए और

छात्रों को किन विशेष स्थलों पर सहायता की आवश्यकता है; जैसे – उच्चारण, वर्तनी, संरचना तथा प्रयोग पाठों से संबंधित त्रुटियों के निदान के लिए निर्णय इस परीक्षण से लेना पड़ता है।

6.7. इस इकाई से आपने जो सीखा

३ पाठ-योजना :

- पाठ की एक सुनिश्चित और सु-व्यवस्थित योजना ।
- निश्चित समय में निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए पाठ्य सामग्री ।
- शिक्षण को रोचक बनाने के लिए निश्चित शिक्षण बिन्दु की तैयारी ।
- विभिन्न सोपानों, प्रक्रिया तथा सामग्री के द्वारा पाठ्यवस्तु को प्रस्तुत करना ।

४ गद्य पाठ्योजना की रूपरेखा :

उद्देश्य / सहायक सामग्री / पूर्वज्ञान

सोपान :

1. प्रस्तावना

2. उद्देश्यकथन

3. प्रस्तुतीकरण

↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓

आदर्शवाचन अनुकरण वाचन बोधप्रश्न पाठ्यबिंदु मौन/पुन-
स्पष्टीकरण वर्चन प्रश्न

4. पुनरावृत्ति

↓ ↓

सारांश अधिगम मूल्यांकन
के प्रश्न

5. प्रयोग

↓ ↓

कक्षाकार्य गृहकार्य

३ पद्य पाठ्योजना की रूपरेखा :

उद्देश्य / सहायक सामग्री / पूर्वज्ञान

सोपान : 1. प्रस्तावना

2. उद्देश्यकथन

3. प्रस्तुतीकरण

आदर्श सस्वर	अनुकरण	भावबोध प्रश्न	पाठ्यविंदु	मौन/पुनर्वाचन	भाव विश्लेषण
वाचन	वाचन		स्थैकरण	वाचन	प्रश्न

4. पुनरावृत्ति – सारांश, मूल्यांकन एवं रसानुभूति

5. प्रयोग – सस्वर पुनर्वाचन, गृहकार्य

३ व्याकरण पाठ्योजना की रूपरेखा :

उद्देश्यावली / सहायक सामग्री / पूर्वज्ञान

सोपान :

1. प्रस्तावना

2. उद्देश्यकथन

3. प्रस्तुतीकरण

● प्रथम अन्विति के उदाहरण

● विश्लेषणात्मक प्रश्न

● नियम निर्धारण के प्रश्न

● नियम

● द्वितीय अन्विति के उदाहरण

● विश्लेषणात्मक प्रश्न

● नियम निर्धारण के प्रश्न

● नियम

4. पुनरावृत्ति :

- सारांश

- अधिगम मूल्यांकन के प्रश्न

5. प्रयोग :

- कक्षाकार्य

- गृहकार्य

6. भाषा मूल्यांकन और परीक्षण :

- मूल्यांकन और परीक्षण से छात्रों में वांछित परिवर्तन

- छात्रों की लक्ष्य-प्राप्ति में सहायक।

- अधिगम-शिक्षण प्रक्रिया में सुधार।

- मूल्यांकन छात्रों के समग्र विकास के संदर्भ में।

- परीक्षण निर्दिष्ट शिक्षण बिन्दु तथा ज्ञान के संदर्भ में।

7. परीक्षण के प्रकार :

- क्षमता परीक्षण

- प्रगति परीक्षण

- उपलब्धि परीक्षण

- प्रवीणता परीक्षण

- निदानात्मक परीक्षण

6.8. स्वमूल्यांकन के प्रश्न :

खाली स्थान भरिए : _____ में प्रश्नांक देना चाहिए (i)

क. (i) शिक्षण की प्रक्रिया को क्रमबद्ध और गतिशील करने के लिए _____ आवश्यक है।

(ii) पाठ नियोजन के द्वारा _____ का निर्धारण होता है।

(iii) पाठ नियोजन से _____ का विकास होता है।

(iv) पाठ नियोजन से अध्यापक का ध्यान _____ पर केन्द्रित रहता है।

(v) पाठ नियोजन से शैक्षिक प्रक्रिया का सही-सही _____ हो पाता है।

ख. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(i) गद्य पाठ-योजना का एक सामान्य उद्देश्य लिखिए।

(ii) आदर्श वाचन कैसे होना चाहिए ?

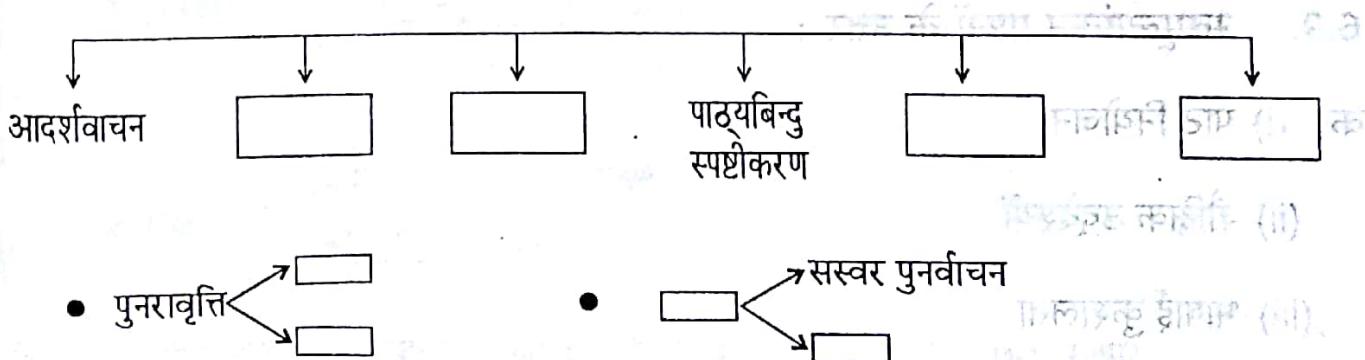
(iii) कौन-सी कक्षा में मौन वाचन होना चाहिए ?

(iv) गद्य-पाठ में किस प्रकार का कक्षा-कार्य करवाया जाता है ?

(v) पाठ्य-बिंदु स्पष्टीकरण में पाठ्योजना में कैसा क्रम अपनाना होगा ?

ग. गद्य पाठ योजना की रूपरेखा को नीचे दिए गए शब्दों से भरिए :

- प्रस्तावना



प्रयोग, उद्देश्य-कथन, भाव-बोध प्रश्न, गृहकार्य, मूल्यांकन और

रसानुभूति, पुनर्वाचन, भाव विश्लेषणात्मक प्रश्न, सारांश, प्रस्तुतीकरण, अनुकरणवाचन

घ. कोष्ठक में से सही शब्द चुनकर लिखिए :

- (i) शिक्षण और _____ परस्पर संबद्ध प्रक्रियाएँ हैं। (मूल्यांकन / प्रश्न)
- (ii) _____ मूल्यांकन का साधन है। (कौशल / परीक्षण)
- (iii) परीक्षण की सहायता से _____ का मूल्यांकन संभव है। (शैक्षिक प्रक्रिया / विचारधारा)
- (iv) भाषा परीक्षण का संबंध _____ विषयक विचारधाराओं से है। (प्रक्रिया / भाषा)
- (v) मूल्यांकन _____ करने की दृष्टि से किया जाता है। (सुधार / विकास)

ड. परीक्षण का नाम कोष्ठक में लिखिए :

- (i) छात्रों की क्षमता का संभावित कुशलता का परिचय मिलता है।
- (ii) अन्य भाषा शिक्षण में छात्र की प्रगति का मापन करता है।
- (iii) इसका संबंध छात्र की उपलब्धियों के मूल्यांकन से है।
- (iv) छात्र ने अन्य भाषा अधिगम में कहाँ तक प्रवीणता प्राप्त की है। इस परीक्षण से जाना जाता है।
- (v) पाठ से संबंधित त्रुटियों के निदान के लिए निर्णय इस परीक्षण से लेना पड़ता है।

6.9. स्वमूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर :

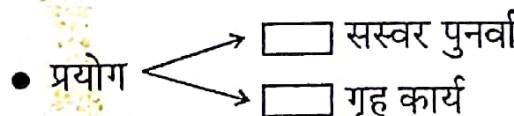
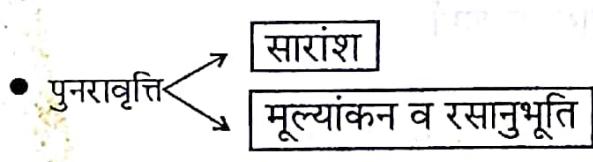
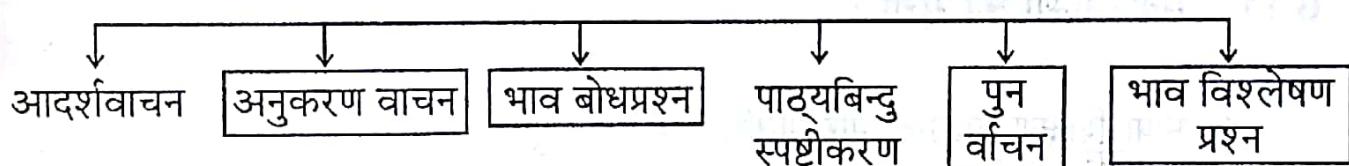
- क. (i) पाठ नियोजन
(ii) शैक्षिक उद्देश्यों
(iii) भाषाई कुशलता
(iv) विषय-वस्तु
(v) मूल्यांकन

- ख. (i) छात्रों में मौखिक तथा लिखित अभिव्यक्ति को ग्रहण करने की कुशलता का विकास करना गद्य पाठ योजना का एक सामान्य उद्देश्य है।
- (ii) छात्रों के उच्चारण की शुद्धता, सही अनुतान, गति तथा विराम-चिह्नों पर ध्यान देते हुए शिक्षक को आदर्शवाचन करना चाहिए।
- (iii) ऊँची कक्षाओं में मौन वाचन होना चाहिए।
- (iv) भाषा-कार्य
- (v) शब्द - अर्थ - युक्ति - प्रयोग

ग. • प्रस्तावना

• उद्देश्य कथन

• प्रस्तुतीकरण



घ. (i) मूल्यांकन (ii) परीक्षण (iii) शैक्षिक प्रक्रिया (iv) भाषा (v) सुधार

ड. (i) क्षमता परीक्षण (ii) प्रगति परीक्षण (iii) उपलब्धि परीक्षण (iv) प्रवीणता परीक्षण (v) निदानात्मक परीक्षण

- Ques 6.10.** इकाई की समाप्ति के बाद के प्रश्न :
- (i) पाठ्योजना का अर्थ बताइए ।
 - (ii) पाठ्योजना से क्या लाभ होता है ?
 - (iii) गद्य पाठ्योजना की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए ।
 - (iv) पद्य पाठ्योजना की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए ।
 - (v) एक व्याकरण पाठ्योजना की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए ।
 - (vi) भाषा मूल्यांकन और परीक्षण का स्वरूप स्पष्ट कीजिए ।
 - (vii) परीक्षण के प्रकारों पर प्रकाश डालिए ।

6.11. संदर्भ ग्रन्थों की सूची :

1. भाषा-शिक्षण सिद्धान्त और प्रविधि – मनोरमा गुप्त
2. द्वितीय हिन्दी भाषा शिक्षण – लक्ष्मी नारायण शर्मा
3. भाषा, और भाषा, की शिक्षण विधियाँ – लक्ष्मीनारायण शर्मा
4. लिंगिविस्टिक्स इन लैगेज टिचिंग, डी.ए. विलकिन्स
5. लैग्वेज टिचिंग आनालिसिस – विलियम फ्रांसिस मैके

BP-05

